कुछ भय था, न कुछ थकाई थी, और न कुछ दुःख था, वे सिंहके समान युद्धमें खड़े थे, उन्हें गदा धारण किये शिखरधारी पर्व्वतके समान खड़ा देख भीमसेन बोले, वारणावत नगरमें राजा धृतराष्ट्रने और तुमने जो हमारे सङ्ग अधर्म्म किया था, उसको स्मरणकरो, रजस्वला द्रौपदीको सभामें दुःख दिया था, शकुनीके छलसे महाराजको जीताथा, और भी धर्म्मात्मा पाण्डवोंके सङ्ग तुमने जो जो पाप किये हैं आज उन सबका फल देखोगे। रे दुष्टात्मा! तेरे ही पापसे महायशस्वी भरतकुल श्रेष्ठ हम सबके पितामह भीष्म शरशय्यापर सोते हैं, तेरे ही पापसे गुरु द्रोणाचार्य्य, कर्ण महाप्रतापी शल्य और वैरका मूल शकुनी मारा गया, तुम्हारे सब वीर भाई, बेटे, महायोद्धा अनेक राजा और उत्तम क्षत्रियोंका नाश हुआ पापी, द्रौपदीका क्लेशदेनेवाला प्रातिकामी भी मारा गया अब एक कुलनाशन पुरुषाधम तुही बचा है सो अब गदासे तुझे भी निःसन्देह मार डालूंगा, आज तेरा महा घोर अभिमान जिससे पाण्डवोंको राज्य मिलना बहुत कठिन था, उसे गदासे तोड़ूंगा।

दुर्य्योधन बोले, रे पापी भीमसेन! वृथा बकनेसे क्या होगा? आज मैं तेरी युद्ध श्रद्धाका नाश करदूंगा आज मुझसे युद्ध कर, रे पापी! क्या तू नहीं देखता है कि मैं हिमाचलके शिखरके समान भारी गदा लिये खड़ा हूं? ऐसा कौन शत्रु है, कि जो गदा धारण करने पर भी मुझको जीत सके। न्यायसे तो मुझे इन्द्र भी नहीं जीत सक्ता, हे कुन्तीपुत्र! शरद्‌-कालके जल रहित मेघके समान मत गर्ज्ज जो तुझमें बल हो सो दिखला।

दुर्य्योधनके वचन सुन सब पाण्डव और सृञ्जय उनकी प्रशंसा करने लगे, जैसे मतवाले हाथीको कोई क्रोधित करता है, ऐसे ही सब ताली बजाकर दुर्य्योधनका क्रोध बढ़ाने लगे हाथी, घोड़े गर्ज्जने लगे, और विजयी पाण्डव शस्त्र चमकाने लगे।

३३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! जब इन दोनोंका घोर युद्ध होनेको उपस्थित हुआ तब बलराम तीर्थोंसे घूमते हुए यह युद्ध देखनेको आये उनको देखकर श्रीकृष्णके सहित सब पाण्डव प्रसन्न होकर खड़े होगये और यथा योग्य सत्कार करके कहने लगे कि अपने दोनों शिष्योंका युद्ध देखिये तब बलराम, श्रीकृष्ण और पाण्डवोंको बैठे तथा भीमसेन और दुर्य्योधनको बैठे हुए देख बोले, मैं पुष्य नक्षत्रमें द्वारिकासे गया था, और श्रवणमें लौट कर आया हूं आज मुझे द्वारिकासे चले बयालिसदिन हुए अब अपने दोनों शिष्योंका गदा युद्ध देखनेको आया हूं बलरामकी बात सुन और वीर भीमसेन वीर दुर्य्योधन गदा हाथमें लेकर युद्ध करनेकी अखाड़ेमें चले गये तब राजा युधिष्ठिर बलरामको हृदयसे लगाकर कुशल पूंछने लगे श्रीकृष्ण और महाधनुषधारी यशस्वी अर्ज्जुनने भी प्रसन्न होकर बलरामको प्रणाम किया भीमसेन और महाबलवान दुर्य्योधनने भी गदा लिये ही लिये बलरामको प्रणाम किया और कुशल पूंछी सब राजा और महात्मा क्षत्री बल-रामके चारों ओर बैठकर कहने लगे कि आप इन दोनोंका युद्ध देखिये। महात्मा रोहिणीपुत्र बलराम भी पाण्डव और सृञ्ज-योंसे मिलकर कुशल प्रश्न पूछने लगे और सब राजोंसे भी कुशल पूंछी, उन सब राजाओंने भी बलरामसे कुशल पूंछी। इस प्रकार सबसे कुशल प्रश्न करके महात्मा बलरामने प्रेम सहित श्रीकृष्ण और सात्यकीको अपने छातीसे लगाकर माथा सूङ्घकर कुशल प्रश्न किया। इन दोनोंने भी अपने गुरु बलरामको कुशल

पूंछ इस प्रकार पूजा करो जैसे इन्द्र और उपेन्द्र ब्रह्माकी पूजा करते हैं। तब महाराज युधिष्ठिरने शत्रुनाशन रोहिणीपुत्रसे कहा कि हे राम! अब आप इन दोनों भाइयोंका घोर युद्ध देखिये, उन सब महात्मा महारथ क्षत्रियोंके बीचमें बैठकर नीलाम्बरधारी गौरवर्णवाले बलराम इस प्रकार शोभित हुए जैसे तारोंके बीचमें पूर्णचन्द्रमा। तब दुर्य्योधन और भीमसेनका घोर युद्ध होने लगा। दोनोंको यही इच्छा हुई को इस बैरको समाप्त कर देवें।

३४ अध्याय समाप्त।

महाराज जनमेजय बोले, हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! जिस समय कौरव और पाण्डवोंका युद्ध होनेवाला था, तब ही बलराम श्रीकृष्णकी सम्मतिसे यदुवंशियोंके सहित तीर्थयात्राको चले गए थे और यह कह गए थे कि हम इन दोनोंमेंसे किसीकी सहायता नहीं करेंगे। परन्तु वे फिर क्यों चले आए। यह कथा आप हमसे विस्तारपूर्व्वक कहिये, आप सब वृत्तान्तको जानते हैं। इसलिये कहिए कि बलरामने इस युद्धको किस प्रकार देखा?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, जबमहात्मा पाण्डव बिराट नगरके उपप्लव अर्थात् उपनगर या छावनीमें रहते थे, उसी समय युधिष्ठिरने सब जगत्के कल्याणके लिये और सन्धिके लिये, श्रीकृष्णको हस्तिनापुर भेजा था, उन्होंने वहां जाकर राजा धृतराष्ट्रसे यथार्थ बचन कहे थे, परन्तु उन्होंने नहीं माने यह कथा हम पहिले तुमसे कह चुके हैं। जब सन्धि न हुई तब महाबाहु पुरुषश्रेष्ठ श्रीकृष्ण लौटकर पाण्डवोंके पास आगये और कहने लगे कि, हे पाण्डव! कुरुवंशके नाशका समय आगया, कौरवोंने हमारे बचन नहीं माने, आज पुष्य नक्षत्र है! युद्ध करनेको चलो जब सेनाका बिभाग होने लगा, तब महाबलवान रोहिणीपुत्र बलरामने अपने भाई श्रीकृष्णसे कहा कि, हे यदुनन्दन! तुम दुर्य्योधनकी भी सहायता करो परन्तु श्रीकृष्णने उनके बचन नहीं माने तब महायशस्वी बलराम पुष्यनक्षत्रमें तीर्थयात्राको चले गए, जिस दिन बलराम श्रीकृष्णसे बिदा हुए, उस दिन पुष्य और जिस दिन द्वारिकासे चले, उस दिन अनुराधा नक्षत्र था, बलरामके सङ्ग मुख्य यदुवंशी सब चले गये, उसी दिन शत्रुनाशन कृतवर्म्मा दुर्य्योधनके पास और सात्यकी सहित श्रीकृष्ण पाण्डवोंके पास चले गये, उस ही पुष्यनक्षत्रमें पाण्डवोंने कौरवोंसे युद्ध करनेको यात्रा करी।

बलराम थोड़ी दूर जाकर दूतोंसे बोले, तुम लोग द्वारिका जावो और तीर्थयात्राकी सब सामग्री लाओ हम सरस्वतीके तटपर मिलेंगे। शीघ्र आवो, सहस्रों यज्ञ करानेवाले, उत्तम ब्राह्मण आदि सामग्री सब ले आवो उनको वैसी आज्ञा देकर महाबलवान बलराम सरस्वतीके तटको चले गये, फिर द्वारिकासे आएहुए ऋत्विक अर्थात् यज्ञ करानेवाले ब्राह्मण, बान्धव, रथ, हाथी, घोड़े, पैदल बैल, गधे, ऊंठ, गाय, अग्नि, याचक, सोना, चांदी, वस्त्र आदि सब वस्तु मिल गई। फिर उनको सङ्गमें लेकर सरस्वतीके तटपर घूमने लगे। जिस देशमें जाते थे, तहां भूखे रोगी, थके बालक और बूढ़ोंको अनेक प्रकारके धन, वस्त्र और भोजन देते थे, जो ब्राह्मण जिस समय आकर जो मांगता था, उसी समय उसको वही मिलता था, बलरामकी आज्ञासे मार्गमें मनुष्योंने ऐसा प्रबन्ध किया था कि जहां बलरामके जानेका मार्ग था। और जहां उनके ठहरनेका निश्चय होता था, वहां पहिलेहीसे खाने, पीने, वस्त्र, आसन और पलङ्ग आदि सामग्रीके ढेर होजाते थे, ब्राह्मणोंके सत्कारकी सामग्री भी ठीक कर ली थी जो ब्राह्मण वा क्षत्री जिस स्थानमें जो वस्तु खानेकी इच्छा करता था, उसे वहीं वह वस्तु प्राप्त होती थी। जैसे चलनेकी

इच्छा हो उसे वाहन, प्यासेको पीनेकी वस्तु और भूखेंको खाद्य अन्न लिये हर समय मनुष्य खड़े रहते थे। इसी प्रकार वस्त्र और आभूषणोंका भी पूरा प्रबन्ध था, उस समय वह और मनुष्योंसे भरा हुआ मार्ग स्वर्गके समान दीखता था, बाजारमें दूकानोंपर सुन्दर खाद्य खानेकी वस्तु भरी हुई दीखती थी, अनेक रत्नोंसे जड़े बने हुए वृक्ष और लता शोभित होरहीं थीं। सैकड़ों मनुष्य घूमते थे, इस प्रकार महात्मा हलधर बलराम पवित्र होकर ब्राह्मणोंको द्रव्य देते हुए अनेक यज्ञ दान करते हुए तीर्थोंमें घूमने लगे।

उस यात्रामें घड़ा भर दूध देनवाली सोनेकी सींगवाली, उत्तम वस्त्रधारिणी सहस्रों गौ, अनेक देशोंसे उत्पन्न हुए घोड़े, वाहन, दास, रत्न, मोती, मणी, मूङ्गे, सोना, शुद्ध चांदी तथा तांबे और लोहेके सहस्रों बरतन महात्मा ब्राह्मणोंको दान किये। इस प्रकार उदार महानुभाव बलराम सरस्वतीके तटपर बहुत धन दान करते करते क्रमसे कुरुक्षेत्रमें पहुंच गये।

जनमेजय बोले, हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! सरस्वतीके तटपर जो तीर्थ हैं, आप उनके पुण्यफल और कर्म्मोंका वर्णन हमसे कीजिये, हमारी इन तीर्थोंका क्रम सुननेकी बहुत इच्छा है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज! हे राजेन्द्र! युदुकुलश्रेष्ठ बलराम पहिले द्वारिकासे चलकर ब्राह्मण और अपने बान्धवोंके सहित पवित्र प्रभासक्षेत्रमें पहुंचे, इसी स्थानपर चन्द्रमा राजयक्ष्मा रोगसे पीड़ित हुए थे, और वहीं शापसे छूटकर फिर तेजको प्राप्त हुए थे। वहीं अबतक जगत्में प्रकाश करते हैं। चन्द्रमाको तेज इस स्थानमें मिला था, इसलिये इसका नाम प्रभास क्षेत्र होगया।

जनमेजय बोले, हे भगवन्! भगवान् चन्द्रमाको राजयक्ष्मा रोग क्यों होगया था? वे इस तीर्थमें आकर क्यों डूबे थे? और उन्हें फिर तेज कैसे प्राप्त हुआ? यह सब कथा आप हमसे विस्तार पूर्व्वक कहिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजेन्द्र! दक्ष प्रजापतिकी नक्षत्र नामक सत्ताइस कन्या थीं। उन्होंने सत्ताइसों कन्या चन्द्रमाको व्याह दीं, जगत्के मनुष्य गिननेके लिये उन्हें ही नक्षत्र कहते हैं। वे सब बड़े बड़े नेत्रोंवाली और असाधारण रूपवाली थीं, परन्तु उन सबमें रोहिणी अधिक रूपवती थी, इसलिये चन्द्रमा उसीसे अधिक प्रेम करते थे, और सदा उसहीके घरमें रहा करते थे। इसलिये सब स्त्री चन्द्रमासे रुष्ट होगईं और अपने बाप दक्ष प्रजापतिसे जाकर कहने लगीं कि, हे प्रजापते! चन्द्रमा हम लोगोंके पास नहीं आते सदा रोहिणीके घरमें रहते हैं इसलिये हम सब तुम्हारे पास रहकर तपस्या करेंगी।

उनके वचन सुनकर दक्ष प्रजापतिने चन्द्रमासे कहा तुम ऐसा महा अधर्म्म मत करो और सबसे समान प्रेम रखो फिर अपनी बेटियोंसे कहा कि तुम सब चन्द्रमाके घरको चली जावो वे हमारी आज्ञासे सबके सङ्ग समान प्रेम रखेंगे।

तब वे सब चन्द्रमाके घरमें चली गईं परन्तु भगवान् चन्द्रमा फिर भी रोहिणीसे वैसाही प्रेम करने लगे, तब वे सब फिर अपने पिताके पास जाकर कहने लगीं कि भगवान चन्द्रमा हम लोगोंके पास नहीं रहते इसलिये हम सब यहीं रहकर आपकी सेवा करेंगी।

तब दक्ष प्रजापतिने चन्द्रमासे कहा कि तुम सब स्त्रियोंसे समान प्रेम करो नहीं तो हम तुम्हें शाप देंगे यह कहकर सबको बिदा कर दिया परन्तु भगवान् चन्द्रमा उनके वचनका निरादर करके फिर भी रोहिणी हीके सङ्ग रहने लगे।

तब फिर वे सब क्रोधित होकर अपने पिताके घर गईं और शिरसे प्रणाम कर कहने

लगीं कि चन्द्रमाने आपके बचनको नहीं माना और हम लोगोंसे प्रेम नहीं करते वे सदा रोहिणी हीके घरमें रहते हैं, इसलिये आप हमको या तो मरण दीजिये अथवा ऐसा उपाय कीजिये जिससे चन्द्रमा हम लोगोंसे प्रेम करें।

उनके बचन सुन भगवान् दक्ष प्रजापतिने क्रोध करके राजयक्ष्मा रोगको चन्द्रमाके पास भेजा वह चन्द्रमाके हृदयमें घुस गया तब वह दिन दिन क्षीण होने लगे।

उन्होंने इस रोगके छूटनेके लिये अनेक यज्ञादि यत्न भी किये परन्तु शाप न छूटा और क्षीण होगये उनके क्षीण होनेसे औषधी न उत्पन्न हुई और जो उत्पन्न भी हुई वे रस वीर्य्य और स्वादसे हीन होगई। औषधियोंका नाश होनेसे प्रजाका नाश होने लगा मनुष्य दुर्ब्बल और हीन होगये।

तब सब देवता चन्द्रमाके पास जाकर बोले, कि आपका यह रूप अब कैसा होगया? आपमें पहिलेके समान तेज क्यों नहीं रहा? यह सब कारण आप हमसे कहिये तब हम लोग उसका उपाय करेंगे।

देवतोंके बचन सुन चन्द्रमा बोले कि दक्ष प्रजापतिने शाप दिया है, इसलिये हमें यक्ष्मा-रोग होगया है।

चन्द्रमाके बचन सुन सब देवता दक्ष प्रजा-पतिके पास जाकर कहने लगे कि, हे भगवन्! अब आप चन्द्रमाके ऊपर कृपा करके इस शापको लौटा लीजिये क्यों कि चन्द्रमा क्षीण हो चुके अब बहुत थोड़े शेष हैं इनके क्षीण होनेसे सब प्रजाका नाश होजायगा इसलिये आप कृपा कीजिये, चन्द्रमाके क्षीण होनेसे औषधी और बीज नहीं रहेंगे औषधी न रह-नेसे हम लोग कैसे रहेंगे यह बिचार कर आप कृपा कीजिये।

देवतोंके बचन सुन दक्ष प्रजापति बोले, हमारा शाप तथा नहीं हो सक्ता परन्तु यदि चन्द्रमा अपनी सब स्त्रियोंसे समान प्रेम करें तो थोड़े ही किसी कारणसे उनका शाप दूर कर सक्ते हैं उपाय हम बतला देते हैं यदि चन्द्रमा सरस्वतीके तीर्थमें स्नान करें तो उनका तेज फिर वैसाही होजायगा हमारे यह बचन सत्य हैं परन्तु इतना शाप बना ही रहेगा आधे महीने तक चन्द्रमा क्षीण हुआ करेगा और आधे महीने तक बढ़ा करेंगे, ये पश्चिम समुद्रके तट पर जाके सरस्वती और समुद्रके सङ्गममें शिवको पूजा करें तब फिर तेज बढ़ जायगा।

तब चन्द्रमा ऋषियोंकी आज्ञासे अमावस तिथिको सरस्वती तीर्थ पर पहुंचे तब उनका तेज बढ़ने लगा और किरण शीतल होगईं तब सब देवता प्रभास क्षेत्रमें आकर दक्ष प्रजाप-तिको प्रणाम करने लगे, और चन्द्रमासे मिले फिर दक्ष प्रजापतिने सब देवतोंको विदा करके चन्द्रमासे कहा, हे पुत्र! तुम कभी अपनी किसी स्त्रीका अपमान न करना और सदा हमारी आज्ञामें रहना।

यह कह कर दक्षप्रजापतिने चन्द्रमाको बिदा किया, चन्द्रमा भी उनसे बिदा होकर अपने घर चले गये तब सब देवता और प्रजा पहिलेके समान प्रसन्न होकर रहने लगे।

हमने जिस प्रकार चन्द्रमाको शाप हुआ था और जैसे प्रभास क्षेत्र सब तीर्थोंमें श्रेष्ठ हुआ सो सब कथा तुमसे कही उस दिनसे चन्द्रमा सदा अमावसको प्रभास तीर्थके स्नान करते हैं और उनका तेज बढ़ता है, इस तीर्थमें चन्द्रमाका प्रभाव बढ़ा इसलिये लोग इसे प्रभास कहते हैं।

यहांसे बलराम चमसोद्भेद नामक तीर्थमें गये वहां बिधिपूर्व्वक स्नान करके ब्राह्मणोंको दान देकर एक रात्रि रहे फिर जल पीकर शीघ्रता सहित स्वस्त्ययन सुनकर चले गये, जहां घास और पृथ्वी चिकनी हो तहां सिद्ध लोग कहते हैं कि यहां सरस्वती हैं।

३५ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, कि वहांसे बलराम उदपात नामक तीर्थमें गये, उस ही तीर्थमें महायशस्वी त्रत नामक मुनिको परम पद लाभ हुआ था। उस स्थानपर बलरामने प्रसन्न होकर बहुत दान किया। इसी स्थानमें महातपस्वी त्रत नामक ब्राह्मणने कुएं में बैठकर धर्म्म धारण करके सोम पिया था, उनके दोनों भाई उन्हे वहीं छोड़कर चले गये थे। तब उन्होंने अपने दोनों भाइयोंको शाप दिया था।

जनमेजय बोले, हे ब्रह्मन्! इस तीर्थका नाम उदपान क्यों हुआ? वे ब्राह्मणश्रेष्ठ त्रत कुएमें क्यों गिरे थे? उनके भाई उनको कुएमें पड़े छोड़ क्यों चले गये थे? फिर उन्होंने यज्ञ कैसे करो? और सोमपान कैसे करा? यदि आप यह कथा हमसे कहने योग्य समझैं तो कहिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! पहिले युगमें एकत, द्वित और त्रत नामक तीन भाई थे ये तीनों गौतम मुनिके बेटे थे। तीनों महातपस्वी सूर्य्यके समान तेजस्वी, प्रजापतिके समान महात्मा तपसे ब्रह्म लोकको जीतनेवाले, वेदपाठी और सन्तानवान थे। उनके नियम और तपसे गौतम सदा प्रसन्न रहते थे, फिर बहुत दिनके पश्चात् गौतम अपने पुण्यके फलसे ब्रह्म लोकको चले गये। इनके मरनेके पश्चात् उनके यजमान गौतमके तीनों पुत्रोंका वैसा ही आदर करने लगे। उन तीनोंमें विद्या और कर्म्मसे त्रत श्रेष्ठ था। ये अपने पिता गौतम मुनिके समान थे, महात्मा और पुण्यात्मा मुनि भी उन्हें गौतमके समान मानते थे।

तभी एक दिन एकत और द्वितने धन इकट्ठा करनेके लिये यज्ञ करनेका बिचार किया फिर त्रतसे जाकर कहा कि हम पशु और यज्ञकी सामग्री इकट्ठा कर रहे हैं। महाफलवाला यज्ञ करके प्रसन्नता पूर्व्वक सोमपान करेंगे।

हे राजन्! फिर तीनों भाइयोंने ऐसा ही किया और यज्ञके लिये मांगकर पशु लाए, जब उन पशुवोंको लिये हुए पूर्व्व दिशाको चले आते थे, उस समय प्रसन्न त्रत तीनों महात्मा ऋषियोंके आगे प्रसन्न हुए चले जाते थे और पीछेसे दोनों भाई पशुवोंको हांकते चले आते थे तब बहुत गौ देखकर दोनों भाइयोंने बिचार किया कि ऐसा कुछ उपाय करना चाहिये, कि जिसमें सब गौ हमहीं दोनोंको मिले और त्रतको न मिलें तब उन पापियोंने परस्पर ये बात चीत करी कि त्रत यज्ञकर्म्ममें बहुत कुशल और वेदपाठी हैं। इसलिये इन्हे और भी बहुत गौ मिल जायेंगी हम इन सब गौवोंको लेकर चलदें।

तब ये दोनों भाई त्रतको छोड़कर चलदिये, त्रत भी रात्रिहीमें इनके सङ्ग ही सङ्गमें चले तब मार्गमें एक भेड़िया मिला उसे देखकर त्रत भागे। मार्गके पास ही एक कूआं था, वह बहुत गहरा भयानक और धूल मट्टीसे भरा था, त्रत उसीमें गिर पड़े महात्मा त्रत उसमें गिरकर ऊंचेस्वरसे रोने लगे। उन दोनों भाइयोंने उस शब्दको सुना और जान लिया कि, त्रत कुएमें गिर गये, परन्तु भेड़ियेके डरसे और पशुवोंके लोभसे उन्हें वहीं छोड़कर भाग गये। महात्मा त्रत अपने लोभी भाइयोंसे छूटकर जल रहित तृणके और धूलके भरे हुए कुएमें गिरकर अपनेको नरकबासी पापीके समान मानने लगे। फिर उन्होंने अपनी बुद्धिसे बिचारा कि जो ब्राह्मण सोमपान नहीं करता उसे नरक का भय रहता है। अब मुझे इस कुएमें सोम कैसे मिले?

अनन्तर उस महातपस्वीने एक लटकती हुई घास देखी फिर धूलको जल और अग्नि अपने शरीरको आहुति और उस घासको सोम सङ्कल्प करके ऋक् यजु और सामवेद पढ़ना आरम्भ किया, उस ही धूलिको आहुति मानकर देवतोंके भाग निकाले और ऊंचेस्वरसे वेद पढ़ना आरम्भ किया। वह शब्द आकाशतक

फैल गया, तब उस महाशब्दको सुनके देवता घबड़ाने लगे। तब उस शब्दको सुनकर देवतोंके पुरोहित बृहस्पति बोले, महात्मा त्रितने यज्ञ किया है, हम सब लोग वहींको चलें, यदि हमलोग न चलेंगे तो वह महातपस्वी दूसरे देवता बना लेगा।

बृहस्पतिके बचन सुनके सब देवता महात्मा त्रितके यज्ञमें पहुंचे और उस महात्माको यज्ञ दीक्षाके लिये कुएमें तेजसे प्रकाशित होते देखा।

अनन्तर सब देवता बोले, हे महा भाग! हमलोग अपना अपना भाग लेनेको तुम्हारे पास आये हैं।

त्रित बोले, हे देवतो! देखो हम इस अन्धे कुएमें पड़े हैं, हमें कुछ चैतन्यता भी नहीं है।

फिर त्रितने मन्त्रोंके सहित देवतोंको भाग दिये, वे लोगभी अपना अपना भाग पाकर प्रसन्न होगये और कहने लगे, कि जो चाहो बरदान मांगो।

त्रित बोले, कि हमें कुएसे निकालो और जो इस कुएको छूवे उसको सोम पियेका फल होय।

हे राजन्! देवता उन्हें यह दोनों बरदान देकर चले गये, उसही समय उस कुएकी तोड़कर सरस्वती नदी निकली और उसने त्रितको ऊपरको उछाल दिया, तब त्रित भी प्रसन्न होते हुए अपने घरको आये और भाइयोंको देखकर क्रोध करके बोले, तुम लोग हमें जङ्गलमें एकला छोड़कर चले आये थे। इसलिये उस पाप कर्मसे हम तुम्हें शाप देते हैं। कि तुम लोग बड़े बड़े दांतवाले, भेड़िये बनकर जगत्में डोलो, फिर लङ्गूर बन्दर और रीछ योनिमें जन्मलो, इस सत्यवादीके बचन निकलतेही वे भेड़िये होगये।

इस प्रकार इस तीर्थका नाम उदपान हुआ वहां महात्मा बलरामने ब्राह्मणोंको बहुत दान देकर कुरु क्षेत्रकी ओर यात्रा करी।

३६ अध्याय समाप्त।

बैसम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय तब हलधारी बलराम कुरुक्षेत्रमें पहुंचे और जल स्पर्श करके बिश्राम किया; हे राजन्! यह वही स्थान था। जहां सरस्वती शूद्रोंके दोषसे नष्ट होगई थी, इस ही लिये मुनियोंने उसका नाम बिनशन तीर्थ रक्खा है।

वहांसे चलकर बलवान बलराम सरस्वतीके तटपर सुभूमिक नामक तीर्थपर पहुंचे इसी तीर्थपर सदा अति उत्तम सुन्दर मुखवाली पवित्र अप्सरा क्रीड़ा करा करती हैं। हे प्रजानाथ! उस स्थानपर महीने महीने देवता और गन्धर्व आया करते हैं। ब्राह्मण लोग सदा ही उस तीर्थकी सेवा करते हैं, उसी स्थानमें देवता पितर और औषधी आकर गन्धर्व और अप्सराओंसे मिलकर क्रीड़ा करती हैं। हे राजन्! वह स्थान अप्सराओंकी क्रीड़ा करनेका है, वहां अप्सरा फूल बर्षाती हैं, और क्रीड़ा करती हैं। इस स्थानपर बलरामने ब्राह्मणोंको बहुत दान दिया। दिव्य गीत और बाजे सुने गन्धर्व अप्सरा और राक्षसोंको परछाहीं देखी।

वहांसे चलकर रोहिणी पुत्र हलधर गन्धर्व तीर्थमें पहुंचे, वहां तपस्वी विश्वावसु आदि गन्धर्व मनोहर गीतगाते और नाचते रहते हैं। वहां बलरामने ब्राह्मणोंका बकरी, भेड़, गाय, गधे, ऊंट, सोना, चांदी, आदि दान दिये फिर ब्राह्मणोंको इच्छानुसार धन और भोजनसे सन्तुष्ट करके स्तुती सुनते हुए शत्रुनाशन बलराम ब्राह्मणोंके सहित गर्गश्रोतपर पहुंचे, इसी स्थानपर बैठकर महात्मा महातपस्वी बूढ़े गर्गाचार्य्यने कालज्ञान तारोंकी गतिसे अनेक घोर उत्पातोंको जाना था। इसी लिये इस तीर्थका नाम गर्गश्रोत बिदित होगया, इस स्थानमें ज्योतिष पढ़नेके लिये अनेक मुनि ब्रतधारी महात्मा गर्गकी सेवा करते थे, वहां जाकर श्वेतचन्दनधारी महात्मा एक कुण्डलधारी बल-

रामने तपस्वी ब्राह्मणोंको बिधिके अनुसार बहुत दान किया।

उस स्थानमें ब्राह्मणोंको उत्तम उत्तम भोजन कराकर नीलाम्बर महायशस्वी बलराम शङ्ख तीर्थ में पहुंचे, वहां जाकर एक सुमेरुके समान ऊंचा शटङ्ग देखा उस सफेद पर्व्वतके समान शटङ्गके चारों ओर ऋषी तपस्या कर रहे थे, उस सरस्वतीके तटपर एक उत्तम वृक्ष भी देखा, महातेजस्वी यक्ष, विद्याधर, राक्षस महाबलवान पिशाच और सहस्रों सिद्ध भोजन छोड़कर उसके चारों ओर तपस्या कर रहे थे और उनका यह प्रण था कि जब व्रत और नियम समाप्त हो तब समय होनेपर उसीका फल खांय और फिर तपस्या करने लगे, परन्तु ऐसा उत्तम वृक्ष था, कि उसके नीचे बैठे ऋषियोंको कोई नहीं देख सक्ता था, उस पवित्र लोक विख्यात तीर्थमें यदुकुल श्रेष्ठ बलरामने तांबे और लोहेके बरतन अनेक प्रकारकी वस्तु सहित अनेक गौ तपस्वियोंको दान करीं, वहांसे पवित्र द्वैतबनमें पहुंचे वहां अनेक वेषधारी मुनियोंको देखा फिर जलमें स्नान करके ब्राह्मणोंको अनेक दान देकर सरस्वतीके दक्षिण ओरको चले गये। वहां थोड़ी दूर जाकर धर्म्मात्मा महात्मा बलरामने नाग तीर्थको देखा, इस स्थानमें महातेजस्वी सर्प राजा वासुकीका स्थान था। वहां सहस्रों सर्प रहते थे, इसी स्थानपर चौदह सहस्र ऋषियोंने और सब देवतोंने मिलकर नागराज वासुकीका बिधिके अनुसार अभिषेक किया था। इसी लिये उस स्थानपर सांपोंका डर नहीं था, वहां भी अनेक रत्न दान करके पूर्व्व देशके सैकड़ों सहस्रों तीर्थोंको देखते हुए तीर्थोंमें स्नान करते हुए ऋषियोंकी उपदेशानुसार दान उपास और नियम करते हुए उनके बतलाये हुए मार्गोंसे चलते हुए पूर्व्वकी ओरको चले, फिर उस स्थानपर पहुंचे जहां सरस्वती नदी बहनेसे बन्द होगई है, उस समय बलराम ऐसे शीघ्र जाते थे, जैसे वायुके वशमें मेघ, वहां जाकर नैमिषारण्यको देखा वहां सरस्वतीको निवृत्ति देखकर यदुबंशियोंमें श्रेष्ठ बलराम विस्मित होगये।

जनमेजय बोले, हे ब्रह्मन्! हे यज्ञ करनेवालोंमें श्रेष्ठ सरस्वती पूर्व्वकी ओर बहती थीं, तब वहांसे निवृत्त क्यों होगईं? और बलराम विस्मित क्यों हुए? हम यह सब कथा आपके मुखसे सुनना चाहते हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय पहिले सतयुगमें नैमिष नामक ऋषियोंने बारह बर्षका यज्ञारम्भ किया था। उसमें अनेक ऋषी तीर्थ जानकर आये थे। हे महाराज! उस यज्ञमें इतने मुनि आये कि सरस्वतीके तटके तीर्थ नगरके समान दीखनेलगे, हे पुरुष सिंह! समन्त पञ्चक नामक तीर्थतक मुनि लोग तीर्थोंके लोभसे आये, उनके धुयें और वेद पाठके शब्दसे दिशायें पूरित होगईं उन महात्माओंकी अग्नि शालाओंसे सरस्वती नदी सब ओर प्रकाशित दीखने लगी, बालखिल्या, अश्मकुट्ट, दन्तोलखल, प्रसंख्यान नामादि अनेक ऋषी थे, कोई वायू, कोई जल और कोई पत्ते खाकर रहता था, कोई पृथ्वीमें सोता था, और कोई अनेक नियम धारण किये था, इस प्रकार इन मुनियोंने सरस्वतीको इस प्रकार शोभित किया जैसे देवता गङ्गाको शोभित करते हैं। अनन्तर उन यज्ञ करनेवाले सहस्रों मुनियोंसे सरस्वतीका तट ऐसा भर गया, कि कुछ भी अवकाश न रहा, तब ऋषियोंने अपने यज्ञोपवीतोंसे तीर्थ बनाकर अग्नि होत्र करने आरम्भ किये। जब सरस्वतीने उन ऋषियोंको चिन्तासे व्याकुल और निराश देखा तब उनको अपनी मायासे अनेक मुनियोंको अनेक कुञ्ज दिखलाये।

हे जनमेजय! मुनियोंके ऊपर कृपा करके फिर पूर्व्वकी ओर बहने लगी, पुण्यात्मा और

तपस्वियोंके ऊपर कृपा करके सरस्वतीने यह बड़ा आश्चर्य किया।

हे राजन्! उस ही दिनसे इसका नाम नैमिषीय कुंज है, हे राजन्! यह भी स्थान कुरुक्षेत्र हीमें है सो तुम भी वहां अनेक दान करो।

हे महाराज! उस स्थानमें सरस्वतीको निवृत्त और अनेक कुञ्ज देखकर महात्मा बलदेवको आश्चर्य्य हुआ, वहां जलका स्पर्श करके ब्राह्मणोंको अनेक प्रकारके बरतन और अनेक प्रकारकी खानेकी वस्तु दान करी, तब ब्राह्मणोंसे पूजित होकर वहांसे चले और अनेक बेर, इङ्गदी, खम्भारी, बड़गद, पीपल, बहेड़े, दाख, करील, पीलू, फालसे, बेल, आमले, अति मुक्तक और आम आदि सरस्वतीके तटके वृक्षोंसे शोभित, केलेके वृक्षोंसे भरा नेत्रोंके प्यारे वायु, जल, फल और पत्ते खानेवाले मुनियोंसे पूरित दन्तोलूखल, अश्मकुट्ट, वानेय मुनियोंसे पूरित वेदके शब्दसे पूरित अनेक हरिनोंके सहस्रों झुण्डों करके राजित हिंसा-रहित धार्म्मिक मनुष्योंसे सेवित सप्त सारस्वत नामक तीर्थमें कङ्कणक नामक सिद्धने तपस्या करी थी।

३७ अध्याय समाप्त।

जनमेजय बोले, इस तीर्थका नाम सप्तसारस्वत क्यों हुआ? भगमार्कण्ड मुनि कौन थे? उन्होंने क्या नियम किया था? कैसे सिद्ध हुए थे? किसके वंशमें हुए थे? और क्या पढ़े थे? हम इस सब कथाको आपसे सुनना चाहते हैं।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जगतमें सुप्रिया काञ्चनाक्षी, विशाला, मनोरमा, सरस्वती, ओघवती, सुरेणी और विमलोदका नामक सात सरस्वती हैं, इनसे सब जगत् व्याप्त होरहा है।

जब ब्रह्माने महायज्ञ किया था, और उसी समय अनेक ब्राह्मण सिद्ध हुए थे, जहां पुण्याह-वाचनका शब्द और वेदोंका शब्द हो रहा था। उस यज्ञको देखकर देवता भी घबड़ा गए थे, यज्ञ करनेके लिये ब्रह्माने दीक्षा दी थी महात्मा लोग जो मनमें इच्छा करते थे, उनको वही फल उसी समय मिलता था। उस यज्ञमें गन्धर्व्व गाते थे, अप्सरा नाचती थीं और दिव्य बाजे बजते थे, उस यज्ञको सामग्री देखकर देवता आश्चर्य्य करते थे और मनुष्योंको तो कथा ही क्या है? जब ब्रह्माने इस यज्ञको पुष्करक्षेत्रमें किया तब महात्मा ऋषियोंने कहा कि यह यज्ञ अच्छी नहीं हुई क्योंकि नदियोंमेंसे सरस्वती तो यहां है नहीं।

तब ब्रह्माने सुप्रभा नामक सरस्वतीको बुलाया उसको देख ऋषी लोग बहुत प्रसन्न हुए ब्रह्माको प्रणाम करती हुई सरस्वतीको शीघ्र आते देख ब्राह्मणोंने कहा कि यह यज्ञ बहुत अच्छा हुआ।

हे राजन्! इस प्रकार ब्राह्मणोंको प्रसन्नताके लिये ब्रह्माने सरस्वतीको पुष्करक्षेत्रमें बुलाया था। हे राजन्! जब नैमिषारण्यमें अनेक मुनि इकट्ठे हुए तहां वेदके विषयमें अनेक प्रकारके विचित्र शास्त्रार्थ होने लगे। जहांपर वेदपाठी ब्राह्मण बैठे थे, तहां थोड़से मुनि आकर सरस्वतीका ध्यान करने लगे। हे राजेन्द्र! विदेशसे आये हुए मुनियोंकी सहायताके लिये उन यज्ञ करनेवाले मुनियोंके ध्यान करनेसे महाभागा काञ्चनाक्षी नामक सरस्वती नैमिषारण्यमें आई।

जब राजा गय गया नामक स्थानमें यज्ञ कर रहे थे और अनेक व्रतधारी ब्राह्मणोंने सरस्वतीका महाध्यान किया, तब विशाला नामक सरस्वती गयामें पहुंची, यह शीघ्र बहने वाली नदी हिमाचलके शिखरसे चली थी।

जब उत्तरकी शिला अर्थात अयोध्यामें

उद्दालकके पुत्र यजमान बनकर यज्ञ कर रहे थे तब उन्होंने पहिले सरस्वतीका ध्यान किया, तब बकले और हरिनका चमड़ा ओढ़नेवाले, मुनियोंसे पूजित होकर मनोरमा नामक सरस्वती अयोध्यामें पहुंचीं।

हे राजेन्द्र! जब महाराज कुरुने कुरुक्षेत्रमें यज्ञ करी तब उन्होंने सरस्वतीका ध्यान किया ध्यान करते ही राज ऋषियोंसे सेवित ऋषभ द्वीपको छोड़कर सुरेणु नामक सरस्वती कुरुक्षेत्रमें पहुंची।

ओघवती नामक सरस्वती महात्मा वशिष्ठके ध्यान करनेसे कुरुक्षेत्रमें आई थी।

जब दक्ष प्रजापतिने गङ्गाद्वारमें यज्ञ किया था, तब सुरेणु नामक सरस्वती शीघ्रता सहित वहां आई थी, यह सरस्वती बहुत शीघ्र बहती हैं।

जब ब्रह्माने हिमाचल पर यज्ञ करी थी, तब भगवती विमलोदका नामक सरस्वती वहां गई थीं और उसी पवित्र तीर्थमें सातों सरस्वतियोंका सङ्गम होगया, इसीलिये इस तीर्थका नाम सप्त सारस्वत तीर्थ हुआ।

हमने ये सातों सरस्वतियोंका वर्णन किया अब बाल ब्रह्मचारी मंकणककी कथा सुनो।

एकदिन मंकणक मुनि सरस्वती नदीमें स्नान कर रहे थे, तब एक सुन्दर नेत्रवाली नङ्गी नहाती स्त्रीको देखा उसको देखते ही इनका वीर्य्य स्खलित होगया तब उस वीर्य्यको मंकणकने घड़ेमें लेलिया उस घड़ेमें वीर्य्यके सात भाग होगये, तब उससे सात ऋषी उत्पन्न हुये इनहीको जगत्में मरुद्गण कहते हैं, इन हीसे उन्चास वायु उत्पन्न हुये हैं।

उन सातों ऋषियोंके ये नाम हैं वायुवेग, वायुबल, वायुहा, वायुमण्डल, वायुरेता, वायुज्वाल और वायुचक्र, ये सातो बड़े बलवान थे, आगे उस महा ऋषिका तीन लोक विख्यात अद्भुत चरित्र सुनो।

हमने कुशाग्र नामक मुनिसे सुना है कि एक दिन सिद्ध मंकणक हाथमें साग लिये चले जाते थे, तब हाथसे सागका रस टपक पड़ा उसको देख मंकणक प्रसन्न होकर नाचने लगे उनके नाचनेसे उनके तेजसे मोहित होकर सब स्थावर जङ्गम जगत् नाचने लगा, तब ब्रह्मादिक देवता और महा तपस्वी मुनि महादेवके पास जाकर बोले, कि आप ऐसा उपाय कीजिये कि जिसमें ये मुनि न नाचें, तब महादेवने उनके पास जाकर मंकणक मुनिको बहुतही प्रसन्नतासे नाचते हुए देखा तब देवतोंके कल्याणके लिये महादेवने इनसे कहा, हे धर्म्म जानने वाले ब्राह्मण! तुम क्यों नाच रहे हो? तुम्हारी इतनी प्रसन्नताका कारण क्या है? आप धर्म्म जाननेवाले तपस्वी और ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ हैं।

मंकणक बोले, हे ब्रह्मन! हे जगत्के स्वामी! क्या आप नहीं देखते कि हमारे हाथसे सागका रस गिर पड़ा। उसीको देखकर हम प्रसन्नतासे नांच रहे हैं।

मुनिका वचन सुन महादेव बोले, हे ब्राह्मण! हम कोई आश्चर्य्यका स्थान नहीं देखते अब तुम हमें देखो।

ऐसा कहकर बुद्धिमान महादेवने अपनी अंगुली अंगूठेमें मारी उस घावसे बर्फके समान भस्म निकलने लगी यह देख मंकणक लज्जित हो उनके चरणोंमें गिर पड़े और उन्हें महादेव जानकर विस्मित होकर कहने लगे हम शिवसे अधिक किसी देवताको नहीं मानते।

हे शूलधारी! आप ही सब देवता और राक्षसोंकी गति हैं। हे बरदान देनेवाले हमने बुद्धिमानोंसे सुना है, कि आप ही इस सब जगत्को बनाते हैं। और प्रलयकालमें सब जगत् आप हीमें मिल जाता है आपको देवता भी नहीं जान सक्ते मेरी तो कथा ही क्या है, जगत्के सब भाव तुममें दिखाई देते हैं। हे पाप रहित! ब्रह्मादिक देवता भी आपको

उपासना करते हैं। हे देव! तुम जगत्के रूप और देवतोंके भी बनानेवाले हो आपकी कृपासे सब देवता निर्भय होकर आनन्द करते हैं।

हमने जो चपलता करी वह भूल थी, अब हम आपसे यह बरदान मांगते हैं कि हमारी तपस्या चीण न होवे।

मुनिके ऐसे बचन सुन महादेव प्रसन्न होकर बोले, हे ब्राह्मण हमारे आशीर्व्वादसे तुम्हारा तप सहस्रों गुण बढ़ेगा, हम तुम्हारे सङ्ग इस आश्रममें सदा निवास करेंगे, जो मनुष्य इस सारस्वत तीर्थमें हमारी पूजा करेगा उसे जगत्में कोई बस्तु दुर्लभ नहीं होगी मरकर वह मनुष्य सारस्वत लोकमें जायगा, हमने यह महातेजस्वी मंकणककी कथा तुमसे कही ये मङ्कणक मातरिश्वा मुनि और सुकन्याके पुत्र थे।

३८ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय बलरामने वहां रहकर आश्रमवासी मुनियोंकी पूजा करी और मङ्कणक मुनिकी बहुत भक्ती करी फिर रात्रिभर रहकर ब्राह्मणोंको अनेक प्रकारके दान देकर महापराक्रमी बलराम मुनियोंसे पूजित होकर उस स्थानके जलको स्पर्श करके मुनियोंकी आज्ञा लेकर औनस नामक तीर्थमें पहुंचे।

हे महाराज! इसी स्थानपर बड़े पेट और बड़े शिर और छोटी जङ्घावाले कपालमोचन नामक महामुनिकी मुक्ति हुई थी। इसी स्थान पर रामने राचसको फेंका था इसी स्थानपर महात्मा शुक्राचार्य्यने तपस्या की थी, यहांपर उन्हें नीति बनानेकी बुद्धि हुई थी यहीं बैठकर महात्मा शुक्राचार्य्यने देवता और दानवोंके युद्धका बिचार किया था। इसही तीर्थसे शुक्राचार्य्यका बहुत बल बढ़ गया था, यहां उन्होंने महात्मा ब्राह्मणोंकी विधिके अनुसार बहुत दान किया था।

राजा जनमेजय बोले, हे ब्रह्मन्! इस तीर्थका नाम कपालमोचन कैसे हुआ? उसका शिर पहिले क्यों कटा था? और फिर क्यों जुड़ गया।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! पहिले समयमें महात्मा राम दण्डकारण्यमें निवास करते थे, और राचसोंका नाश करते थे, तब ही जनस्थाननिवासी दुरात्मा राचसका एक तेज बाणसे उन्होंने शिर काटा। हे महाराज! वही बनमें घूमते महोदर मुनिकी जङ्घा तोड़कर जमआया।

उसके लगनेसे महाबुद्धिमान् महोदर मुनि चल फिर न सके और तीर्थयात्रा भी न कर सके पैरमें भी पीव निकलने लगी, बहुत पीड़ा होने लगी, तो भी वे तीर्थोंमें घूमते ही रहे, हमने सुना है, कि उसी अवस्थामें महातपस्वी महोदर सब नदी और सब समुद्रमें स्नानकर आये और सब मुनियोंसे अपनी दशा कहते रहे परन्तु किसी तीर्थमें उनका यह दुःख न छूटा, तब उन्होंने अनेक मुनियोंसे सरस्वतीके तटपर बिराजमान् औशनस नामक तीर्थकी प्रशंसा सुनी।

तब वे सब पापोंके नाश करनेवाले सिद्ध औशनस तीर्थमें पहुंचे जब उन्होंने उस तीर्थमें स्नान किया, उसी समय वह शिर जलके भितर गिर गया। और गुप्त होगया, तब उसके छूटनेसे वे मुनि भी बहुत प्रसन्न हुए, फिर वे पवित्र और प्रसन्न होकर अपने घरको चले आये, महातपस्वी महोदरने अपने आश्रममें आकर अपने कपाल छूटनेकी कथा महात्मा मुनियोंसे कही उन्होंने सुनकर उस तीर्थका नाम कपालमोचन रख दिया। महात्मा महोदर फिर उसी तीर्थपर गये, और इच्छानुसार जल पीकर सिद्ध होगये।

वृष्णिकुल श्रेष्ठ बलराम भी यहां बहुत दान करके रुषङ्गु मुनिके आश्रमको चले गये, इसी तीर्थ पर आष्टिषेण मुनि सिद्ध हुए थे, और इस ही आश्रमपर महामुनि विश्वामित्र चत्रीसे ब्राह्मण हुए थे, इस पवित्र सब कामनासे भरे तीर्थकी ब्राह्मण सदा सेवा करते हैं। यहीं तपस्वी रुषङ्गुने शरीर त्याग किया था।

रुषङ्गु नामक एक बूढ़ा ब्राह्मण था। जब उसको शरीर छोड़नेकी इच्छा हुई तब अपने सब पुत्रोंको बुलाकर महातपस्वी रुषंगू बोले, तुम लोग हमे पृथूदक नामक तीर्थमें ले चलो पुत्रोंने इनकी अवस्था पूर्ण देखकर उस महात्माको सरस्वतीके तटपर पृथूदक नामक तीर्थ पर पहुंचा दिया, महातपस्वी रुषंगू सहस्रों तीर्थोंसे भरी ब्राह्मणोंसे सेवित सरस्वतीके तटपर पहुंचकर विधि पूर्व्वक स्नान करते तीर्थोंके गुणोंको स्मरण करते अपने पुत्रोंसे ऐसा बोले, जो महात्मा सरस्वतीके उत्तर तीरपर पृथूदक नामक तीर्थपर जप करता हुआ, शरीर छोड़ेगा? उसे फिर शरीर धारण करनेका दुःख नहीं उठाना पड़ेगा, ऐसा कहकर उन्होंने शरीर छोड़ दिया।

ब्राह्मणोंके प्यारे धर्म्मात्मा बलरामने उस तीर्थमें स्नान करके ब्राह्मणोंको बहुत दान दिया।

इसी स्थानमें बैठकर ब्रह्माने सब जगत्को रचा था, इसी स्थानपर महातपस्वी ऋषियोंमें श्रेष्ठ सिन्धुद्वीप और आष्टिषेण महातप करके ब्राह्मण होगये थे। और यहीं राजऋषि देवापी भी ब्राह्मण हुए थे और इसी स्थानपर महातपस्वी महातेजस्वी भगवान् विश्वामित्र भी ब्राह्मण होगये थे।

३९ अध्याय समाप्त।

राजा जनमेजय बोले, हे ब्रह्मन्! भगवान आष्टिषेणने किस प्रकार घोर तप किया? सिन्धुद्वीप कैसे ब्राह्मण बने थे, देवापी और विश्वामित्र किस प्रकार ब्राह्मण हुए थे सो कथा हमसे कहिये हमे सुननेकी बहुत इच्छा है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! पहिले सतयुगमें एक आष्टिषेण नामक ब्राह्मण था। वह बहुत दिनतक गुरुके घरमें रहा परन्तु सब विद्या समाप्त न कर सका, जब बहुत दिनतक पढ़नेपर भी बेद समाप्त न हुए तब आष्टिषेण बहुत घबड़ाये और घोर तपस्या करने लगे। उस तपके बलसे उन्हें सब बेद विद्या आगई और सिद्ध भी होगए, फिर उन्होंने उस तीर्थको तीन बरदान दिये, जो मनुष्य आजसे इस तीर्थमें स्नान करेगा, उसे अश्वमेध यज्ञका फल होगा। आजसे इस तीर्थमें सांपोंका भय नहीं रहेगा इस तीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्यको शीघ्र ही फल मिलेगा, ये तीनों बरदान देकर महातपस्वी आष्टिषेण स्वर्गको चले गये।

हे तात! इस ही तीर्थपर महाप्रतापी सिन्धुद्वीप देवापी और जितेन्द्री विश्वामित्र घोर तप करके ब्राह्मण हुए थे।

पहिले समयमें एक गाधि नामक प्रतापी चत्री हुए थे। उनके पुत्रका नाम विश्वामित्र था, हे राजन्! वह गाधि नामक राजा विश्वामित्रके पिता बड़े प्रतापी थे उन्होंने अपने पुत्रको राज्य देकर अपने शरीर छोड़नेकी इच्छा करी तब सब प्रजाने इकट्ठे होकर कहा कि, हे महाराज! आप कभी स्वर्गको मत जाइये और हम लोगोंके दुःखकी रचा कीजिये तब राजा गाधिने अपनी प्रजासे कहा कि पुत्र सब जगत्की रचा करेगा।

ऐसा कहकर राजा गाधि विश्वामित्रको राज्य देकर आप स्वर्गको चले गये, और राजा विश्वामित्र राज्य करने लगे। परन्तु विश्वामित्र अनेक यत्न करनेपर भी जगत्की रचा न कर सके तब एक दिन उन्होंने सुना कि प्रजाको राचसोंने बहुत पीड़ा दे रहे हैं। यह सुनकर

चतुरङ्गिनी सेना लेकर नगरसे बाहर निकले फिर बहुत दूर जाकर वशिष्ठ मुनिके आश्रमपर ठहरे।

सेनावालोंने उस स्थानपर अनेक उपद्रव करे तब भगवान वशिष्ठ भी आश्रमपर आये, और अपने बनको टूटा देखकर बहुत क्रोध किया, और अपनी गौसे बोले कि, तुम घोर रूपवाले भयानक मनुष्योंको उत्पन्न करो वशिष्ठके बचन सुन गौने वैसा ही किया, उनको देखते ही विश्वामित्रकी सेना इधर उधर भागने लगी, तब अपनी सेनाको भागती हुई सुन विश्वामित्रने तप करनेका विचार किया, और सरस्वतीके तटपर इस तीर्थमें आकर नियम और उपवासोंसे शरीरको सुखाते हुए तपस्या करने लगे, कभी जल पीकर रह जाते थे, कभी वायु और कभी सूखे पत्ते ही खाते थे और पृथ्वीमें सोते थे, उनके यह सब नियम देखकर देवता विघ्न करने लगे। परन्तु महात्मा विश्वामित्रकी बुद्धि कुछ भी भ्रष्ट न हुई। थोड़े दिनमें बहुत तप करके सूर्य्यके समान तपस्वी होगये फिर उनके घोर तपको देखकर ब्रह्मा बरदान देनेको आये तब विश्वामित्रने यह बरदान मांगा कि हम ब्राह्मण होजांय ब्रह्माने कहा ऐसा ही होजायगा। इस प्रकार महातपस्वी विश्वामित्र ब्राह्मण होकर अपना काम सिद्ध करके देवतोंके समान जगत्में घूमने लगे।

महाबलवान् बलरामने इस तीर्थमें बहुत धन दूधदेनेवाली गाय पलङ्ग वस्त्र भूषण खाने पीनेकी वस्तु ब्राह्मणोंको दान दिये।

वहांसे वकदालभ्य नामक मुनिके आश्रमको चले गये।

४० अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज जनमेजय! प्रसन्न बलवान बलराम वकदालभ्य मुनिके आश्रममें पहुंचे वहीं महात्मा वकदालभ्यने तप किया था। यह स्थान वह है जहां जानेसे दूसरी जातिके मनुष्य भी ब्राह्मण होजाते हैं। यह स्थान विचित्र वीर्य्यके पुत्र धृतराष्ट्रके राज्यमें है, इहांपर महात्मा वकदालभ्य मुनि क्रोध करके अपने तप और नियमोंसे शरीरको सुखाते हुए तपस्या करते थे।

हे राजन्! पहिले समयमें जब मुनियोंने नैमिषारण्यमें राजा विश्वजित्के लिये बारह बर्षकी यज्ञ करी थी, और पाञ्चालदेशके मुनि वहां आये थे। तब उन्होंने यज्ञमेंसे व्याधि रहित इक्कीस बैल दक्षिणामें पाये तब वकदालभ्य मुनिने मुनियोंसे कहा तुमलोग इन बैलोंको बांटलो हम इनमेंसे नहीं लेंगे, और राजा धृतराष्ट्रके पास जाकर दूसरे बैल मांग लावेंगे।

ऐसा बिचार कर वे राजाधृतराष्ट्रके पास गये और बैल मांगे, तब उन्होंने क्रोध करके कहा कि, हे ब्राह्मणाधम! हमारी ये सब गौ मरीपड़ी हैं, यदि तुम चाहो तो यही लेजाओ।

राजाके बचन सुन धर्म्मके जाननेवाले वकदालभ्य मुनिको महाकोप हुआ और कहने लगे। कि इस मूर्खने हमें सभाके बीचमें ऐसे कठोर बचन कहे।

थोड़े समय तक ऐसा बिचार कर वकदालभ्य मुनिने उनका राज्य नाश करनेकी इच्छा करी और उन ही मरी हुई गौओंको ले गये, फिर सरस्वतीके तटपर जाकर उनका मांस काट काट करके राजा धृतराष्ट्रके नामसे आहुती देने लगे, महातपस्वी वकदालभ्यने सरस्वतीके तटपर आग जलाकर उसी मांससे आहुती देनी आरम्भ करी, जब यह भयानक यज्ञ विधिके अनुसार होने लगी, तब राजा धृतराष्ट्रका राज्य नाश होने लगा।

हे महाराज! उस देशका इस प्रकार नाश होने लगा, जैसे कुल्हाड़ीसे काटनेसे बनका। राज्यभरके मनुष्य व्याकुल होगये।

अपने राज्यको व्याकुल देख राजा धृतराष्ट्र घबड़ाये और शोचने लगे, कि अब हम क्या उपाय करें? जब सब ब्राह्मण और राजा सब उपाय करके थक गये, तब उन्होंने ज्योतिषियोंको बुलाकर पूछा, तब उन्होंने कहा कि तुमने एक ब्राह्मणका निरादर किया था, वही गौवोंके मांससे होम कर रहा है, इसीसे तुम्हारे राज्यका नाश हुआ जाता है। महात्मा बकदालभ्य सरस्वतीके तटपर यज्ञ कर रहे हैं। उन्हींके तपके बलसे तुम्हारे राज्यका नाश हुवा जाता है।

उनके बचन सुन राजा धृतराष्ट्र बकदालभ्य मुनिके पास जाकर गौ देकर और पृथ्वीमें गिर कर शिरसे प्रणाम किया। और हाथ जोड़ कर कहा, हे भगवन्! हे नाथ! मेरी बुद्धि मूर्खतासे नष्ट होगई है, मैं दीन और लाभी हूं, इसलिये आप मेरा अपराध चमा कीजिये इस समय मैं आपकी शरण हूं इसलिये आप प्रसन्न हूजिये।

राजाको इस प्रकार शोकसे व्याकुल और रोते देखकर मुनिको कृपा आगई और उनके राज्यको आहुतियोंसे छुड़ाय दिया महात्मा बकदालभ्य प्रसन्न होकर क्रोधको दूर किया और उस राज्यको आपत्तिसे छुड़ानेके लिये आहुति देनी आरम्भकरी उस राज्यको आपत्तिसे छुड़ाकर फिर राजा धृतराष्ट्रसे बैलमांगे उन्होंने प्रसन्न होकर बहुतसे बैल दिये

महात्मा बकदालभ्य उन बैलोंको लेकर प्रसन्न होकर अपने आश्रमको चले गये, महातपस्वी महाराज धृतराष्ट्र भी सावधान होकर अपने देशको चले गये।

हे महाराज! इस ही तीर्थमें देवतोंकी बिजय और राचसोंके नाशके लिये महा बुद्धिमान बृहस्पतिने मांससे यज्ञ करा था तब देवतोंसे हार कर युद्धमें राचसोंका नाश होगया था।

इस तीर्थमें भी यशस्वी बलदेवने हाथी घोड़े खच्चर रथ रत्न बहुत धन अन्न और बस्त्रादि दान किया।

हे महाराज! यहांसे बलदेवजी ययाति नामक तीर्थमें पहुंचे इस तीर्थमें जब महात्मा नहुष पुत्र ययातिने यज्ञ किया था, तब सरस्वती घी और दूधको होकर बही थी, उसी यज्ञके प्रतापसे महाबाहु राजा ययाति इसी शरीरसे ऊपरको उड़कर स्वर्गको चले गये।

जब दूसरी बार महाराज ययातिने इस तीर्थमें यज्ञ करी थी, तब उदारता और भक्ति बढ़ाकर ब्राह्मणोंको बहुत दान किये थे, जो ब्राह्मण जहां बैठा था, उसने जिस बातकी इच्छा करी उसे वहीं वही बस्तु मिली थी, तब उस यज्ञमें ब्राह्मणोंको घर शय्या और छःरस युक्तके भोजन मिले थे, राजाको उस उत्तम भक्तिको देखकर ब्राह्मणोंने उनको बहुत आशीर्वाद देकर उनकी प्रशंसा करी, उस यज्ञको देखकर देवता मनुष्य और गन्धर्व्व प्रसन्न होकर आश्चर्य करने लगे।

४१ अध्याय समाप्त।

राजा जनमेजय बोले, हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! महामुने! बशिष्ठके आश्रममें यह अपवाह नामक तीर्थ कैसे हुआ नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वतीने उस ऋषिको क्यों बहाया था? उन मुनि और सरस्वतीसे बैर क्यों होगया था? आपकी बाणी सुननेसे हमारा जी तृप्त नहीं होता, इस लिये यह कथा भी आप कहिये।

श्रीबैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! महामुनि बिश्वामित्र और बशिष्ठसे बहुत बैर हो गया था क्यों कि उन दोनोंको तप करते करते दोनोंमें बिरोध बढ़ गया था। महात्मा बशिष्ठका आश्रम स्थाणु तीर्थमें था, और उससे पूर्व्वकी ओर बिश्वामित्रका आश्रम था।

हे महाराज! उसी स्थानमें तीर्थमें बिश्वामित्र घोर तप करते थे, सरस्वती और शिवकी पूजा करते थे, और उसी दिनसे उस तीर्थका अभिषेक किया था, उसी तीर्थमें जिस प्रकार बिश्वामित्रने बशिष्ठको उग्र तपके बलसे चलित कर दिया था सो कथा तुम हमसे सुनो।

हे महाराज! महातपस्वी बिश्वामित्र और बशिष्ठ उस स्थानमें रहकर परस्पर बिरोधसे घोर तप करने लगे, परन्तु महामुनि बिश्वामित्र बशिष्ठका अधिक तेज देखकर दाह और शोच करने लगे, एकदिन बैठे बैठे उन्होंने यह बिचारा कि यदि यह सरस्वती नदी सदा धर्म्म करनेवाले महातपस्वी मुनि और ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ बशिष्ठको अपने जलमें बहाकर मेरे पास ले आवेतो उन्हें मार डालूं।

ऐसा बिचार महामुनि बिश्वमित्रने क्रोधसे लालनेत्र करके सब नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वतीका ध्यान किया।

ध्यान करते ही सरस्वती बहुत व्याकुल होगई इतने समयमें महावीर्य्यवान् बिश्वामित्रको और भी क्रोध बढ़ गया तब सरस्वती मलीन होकर कांपती हुई हाथ जोड़कर और अनाथ स्त्रीके समान दीन होकर बिश्वामित्रके पास आई और कहने लगी कि, हे भगवन्! हम आपका कौनसा काम करें।

बिश्वामित्र बोले, हम बसिष्ठको मारेंगे, इस लिये तुम उन्हें अपने पानीमें बहा लावो उनके बचन सुन कमलके समान नेत्रवाली सरस्वती नदी वायुसे हिलती हुई लताके समान कांपने लगी।

महानदी सरस्वतीकी यह दशा देख बिश्वामित्र बोले, तुम बिना बिचारे बशिष्ठको हमारे यहां ले आवो।

बिश्वामित्रके ऐसे बचन सुन और उनके मनमें पाप जानकर उधर बशिष्ठके भी असाधारण प्रतापको जानकर सरस्वती बहुत घबड़ाई और बशिष्ठके पास जाकर बुद्धिमान बिश्वामित्रके सब बचन कह सुनाये।

दोनोंके शापसे डरती मलीन चिन्तायुक्त धर्म्मात्मा बशिष्ठने ऐसे बचन सुनाये।

बशिष्ठ बोले, हे नदियोंमें श्रेष्ठ! सरस्वती तुम अपनी रक्षा करो और हमें बहाकर बिश्वामित्रके पास ले चलो, इससे कुछ बिचार मत करो नहीं तो वे तुम्हें शाप दे देवेंगे।

कृपाशील बशिष्ठ मुनिके ऐसे बचन सुन नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वती शोचने लगी कि अब कौनसा काम करनेसे हमारा कल्याण होगा। फिर उसने बिचारा कि बशिष्ठने मेरे ऊपर बहुत ही कृपा करी है इसलिये जिसमें उनका कल्याण हो सो काम करना मुझे उचित है।

एक दिन सरस्वतीने महामुनि बिश्वामित्रको होम और जप करते देखकर बिचारा कि इस समयमें नहीं उठ सकेंगे।

ऐसा बिचारकर उन्होंने अपना तट तोड़ दिया, और बशिष्ठको वहां ले चली बहते हुए बशिष्ठ उनकी स्तुति करने लगे।

बशिष्ठ बोले, हे सरस्वती! तुम ब्रह्माके तलावसे निकली हो सब जगत् तुम्हारे उत्तम जलसे पूरित है। तुम आकाशमें जाकर मेघोंको जलसे पूरित करती हो तुम सब जलोंका रूप हो, तुम्हारे हो प्रतापसे हम लोग वेद पढ़ते हैं। तुम पुष्टी, कान्ती, कीर्त्ति, सिद्धि, बुद्धि और बाणी रूपी हो। तुम इस सब जगत्में व्याप्त हो तुम सब जगत्में चार रूप करके बसती हो।

बशिष्ठकी ऐसी स्तुती सुन सरस्वती बेगसे बहने लगी फिर उनके आश्रमके पास जाकर बिश्वामित्रसे कह दिया, मैं बशिष्ठको ले आई।

बशिष्ठको अपने पास आये देख, बिश्वामित्रको बहुत क्रोध हुआ और बशिष्ठके मारनेके लिये शस्त्र ढूंढ़ने लगे।

बिश्वामित्रको क्रोध देख ब्रह्महत्याके भयसे

वशिष्ठको सरस्वतीने सावधान होकर पूर्व्वकी ओर वेगसे बहा दिया।

इस प्रकार सरस्वतीने दोनों मुनियोंका बचन सत्य किया।

वशिष्ठको बहते देख क्रोधी विश्वामित्र क्रोध करके बोले, हे नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वती तू हमसे छल करके चली गई।

इसलिये तेरा जल रुधिर होजाय और उसे राक्षस पियें।

बुद्धिमान विश्वामित्रने ऐसे बचन सुनते ही सरस्वतीका जल रुधिर होगया और एक बर्ष-तक वैसा ही रहा।

सरस्वतीकी यह दशा देख ऋषी, देवता, गन्धर्व्व और अप्सरा आदि सब घबड़ा गये।

हे पृथ्वीनाथ! फिर सरस्वती वैसी ही होंगे उसी दिनसे इस तीर्थका नाम वशिष्ठाप्रवाह तीर्थ हुआ।

४२ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमे-जय क्रोधभरे बुद्धिमान् विश्वामित्रका शाप होनेसे सरस्वतीको उस तीर्थमें रुधिर बहने लगा। एक दिन एक राक्षस उस शुद्ध तीर्थ-पर आया और उस रुधिरको पीकर बहुत प्रसन्न होकर इस प्रकार नाचने और हंसने लगे जैसे स्वर्गमें देवता।

एक दिन अनेक तपस्वी तीर्थ करते करते तीर्थोंमें स्नान करने जाते उस रुधिर बहनेवाले तीर्थमें भी पहुंचे।

हे राजेन्द्र! महातपस्वी और महाभाग मुनीश्वर सरस्वतीके उस तीर्थमें पानीको रुधि रसे भरा और उसे राक्षसोंका पीते देख मुनि-योंने सरस्वतीके उद्धारका यत्न किया अनन्तर महाव्रतधारी और महाभाग मुनियोंने नदि-योंमें श्रेष्ठ सरस्वतीको बुलाकर पूंछा। हे कल्याणी! तुम्हारा यह तालाव ऐसा नष्ट क्यों होगया है? इसका कारण हमसे कहो सो सुनकर हम लोग कुछ उपाय करेंगे।

ऋषियोंके बचन सुनि कांपती हुई सरस्व-तीने सब वृत्तान्त कह सुनाया।

सरस्वतीको दुःखित देख तपस्वी बोले, शाप और उसका कारण हम लोगोंने सुना अब कुछ उपाय करेंगे।

सरस्वतीसे ऐसा कहकर ऋषियोंने परस्पर बिचार किया कि, सरस्वतीको इस शापसे छुड़ाना उचित है। फिर उन सबने तप उपास और कठोर व्रत करके जगत्‌के स्वामी शिवको प्रसन्न करके सरस्वतीका शाप छुड़ा दिया।

उन ब्राह्मणोंकी कृपासे सरस्वतीका जल पहिलेके समान निर्म्मल होगया, और पहिलेके समान बहने लगो।

सरस्वती जल निर्म्मल देखकर वे राक्षस भूखे मरने लगे। तब हाथजोड़कर उन दया-वान् मुनियोंके शरण गये, और कहने लगे। हम लोग सनातन धर्म्मसे भ्रष्ट होकर राक्षस हुए हैं, और अब भूखसे व्याकुल होरहे हैं, अब हम लोगोंकी यह इच्छा नहीं है, कि हम सब आप लोगोका द्वेश करके पापी बने और और पापमें पड़े हमलोग ब्रह्मराक्षस हैं। योनि दोष और स्त्रियोंके दोष हमें पाप करना ही होता है। जो वैश्य, शूद्र और क्षत्रिय ब्राह्मणोंके द्वेष करते हैं। वे हमारे ही समान राक्षस होंगे, जो आचार्य्य ऋत्विग गुरु और बूढ़ेका द्वेष करते हैं। प्रथम जो किसी प्राणीका द्वेष करते हैं, वे भी राक्षस होंगे।

हे मुनीश्वरों तुम लोग तीनों लोकका उद्धार करनेमें समर्थ हो इसलिये हम लोगोंका भी उद्धार कीजिये।

राक्षसोंके बचन सुनकर ऋषियोंने महा-नदीसे कहा कि जो अन्न सड़ा कीड़ोंसे खाया जूठा बालयुक्त और रोते हुए मनुष्यसे दिया हुआ

उनको देख महायोगी कार्त्तिकेय भी शूलधारी देवराज शिवके पासको चले, कार्त्तिकेयको आते देख शिव, पार्व्वती, गङ्गा और अग्नि इन चारोंके मनमें यह बात उठी कि यह बालक पहिले हमारे ही पास आवेंगे।

इन चारोंका यह अभिप्राय जान भगवान् कार्त्तिकेयने क्षण भरमें अपनी मायासे चार शरीर बना लिये उन चारोंके ये नाम हैं, शाख विशाख, नैगमेय, और स्कन्द, इस प्रकार चार अद्भुत शरीर भगवान कार्त्तिकेयने बनाये।

तिनमेंसे स्कन्द शिवके पास, विशाख पार्व्वतीदेवीके पास भगवान साधुमूर्त्ति शाख अग्निके पास और अग्निके समान तेजस्वी नैगमेय गङ्गाके पास गये, वे चारों महातेजस्वी और समान रूपवाले, चारों एकही समय चारोंके पास गये यह देखकर देवता, दानव और राक्षस विस्मय करके हाहाकार करने लगे, और इन सबके रोंए खड़े होगये।

तब शिव, पार्व्वती, अग्नि और गङ्गाने कार्त्तिकेयको ब्रह्माके पैरोंमें डाल दिया और प्रणाम करके चारों बोले।

हे भगवन्! आप हमलोगोंकी प्रसन्नताके लिये इस बालकको कहींका स्वामी बना दीजिये।

उनके बचन सुन भगवान बुद्धिमान ब्रह्मा शोचने लगे। कि इस बालकको क्या देना चाहिये? सब रत्न पहिले ही देवता, गन्धर्व्व, राक्षस, भूत, पक्षी और सर्पोंको दे चुके हैं और सब ऐश्वर्य्य भी सब पा चुके हैं। थाड़े समयतक बिचार करके ब्रह्माने उन्हें सब ऐश्वर्य्य भोगनेमें समर्थ समझा और देवतोंका सेनापति बना दिया फिर देवतोंके सब राजोंको बुलाकर ब्रह्माने यह आज्ञा सुना दी।

अनन्तर हिमाचलके सहित ब्रह्मादिक देवता कार्त्तिकेयको सङ्ग लेकर इनका अभिषेक करनेके लिये सब नदियोंमें श्रेष्ठ पवित्र सरस्वती देवीके तटपर तीनों लोक विख्यात समंतपञ्चक नामक तीर्थपर आये, वहां पवित्र सब गुणोंसे भरे सरस्वतीके तटपर सब देवता प्रसन्न होकर बैठे।

४४ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! जनमेजय तब बृहस्पति अभिषेकको सब सामग्री इकट्ठे करके शास्त्रमें लिखी बिधिके अनुसार होम करने लगे।

अनन्तर हिमाचलके दिये उत्तम मणिजटित सिंहासनपर कार्त्तिकेयको बिठलाकर, सब मङ्गलकी सामग्री रखकर और सब अभिषेकको वस्तु इकट्ठी करके महाबलवान इन्द्र, विष्णु, सूर्य्य, चन्द्रमा, धाता, विधाता अग्नि, वायु, पूषा, भग, अर्य्यगण, अंश, विवस्वान्, रुद्र, मित्र, बरुण, वसु, आदित्य, अश्विनीकुमार, मरुत, साध्य, गन्धर्व्व, पितर, अप्सरा, यक्ष राक्षस, सांप, देवऋषि, ब्रह्मर्षि, वैखानस, बालखिल्य, वायुभक्षी, किरणभक्षी, भृगु, अङ्गिरादि महात्मा ययाती, सर्प, विद्याधर, आदि पवित्र योगी, सिद्ध, ब्रह्मा, पुलस्त्य, महातपा पुलह, अङ्गिरा, कश्यप, अत्रि मरीचि, भृगु, क्रतु, हर, प्रचेता, मनु, दक्ष, यक्ष, तारे, ग्रह, मूर्त्तिमान्, सनातन वेद, समुद्र, तालाव, अनेक प्रकारके तीर्थ, पृथ्वी, आकाश, दिशा, वृक्ष, देव माता अदिति, ह्री श्री, स्वाहा, सरस्वती, सती, सिनीवाली अनुमती, कुहू, राका धिषणा, आदि देवतोंकी स्त्री, हिमाचल, विन्ध्याचल, अनेक शृङ्गोके सहित सुमेरु, सेवकोंके सहित ऐरावत, कला, काष्ठा, महीना, पक्ष, रात्रि, दिन, ऋतु, घोड़ोंमें श्रेष्ठ उच्चैःश्रवा नागराज बासुकि, अरुण, गरुड़, वृक्ष, औषधी, भगवान धर्म्म, शमन सहित यमराज, काल और सेवकों सहित मृत्यु, आदि सब देवता अपने अपने घरोंसे अभिषेकके लिये जलके घड़े भरकर और मङ्गलकी सामग्री लेकर आये।

फिर देवतोंने प्रसन्न होकर सोनेके घड़ोंमें सरस्वतीका पवित्र और दिव्य जल भरकर राक्षसोंको भय देनेवाले महात्मा कार्त्तिकेयका अभिषेक किया। जैसे पहिले समयमें जलराज-वरुणका अभिषेक हुआ था, ऐसे ब्रह्माने और महातेजस्वी कश्यप आदि ऋषियोंने कार्त्तिकेयका अभिषेक किया।

फिर ब्रह्माने प्रसन्न होकर वायुके समान शीघ्र चलनेवाले, इच्छानुसार बलधारी सिद्ध पार्षद दिये।

ब्रह्माने कार्त्तिकेयको नन्दिषेन, लोहिताक्ष घण्टाकर्ण और विख्यात कुमुदमाली पारिषद दिये।

भगवान महातेजस्वी शिवने अनेक माया जाननेवाले दानवोंका नाश करनेवाला महाबलवान एक पार्षद दिया, उसीने देवासुर संग्राममें क्रोध करके चौदह प्रयुत राक्षसोंको अपने पैरोंसे पीस दिया था।

अनन्तर देवतोंने विष्णुरूपिणी दानवोंका नाश करनेवाली किसीसे न हारनेवाली नैऋत सेना उनको दे दी तब इन्द्रादिक सब देवता, गन्धर्व्व, यक्ष, राक्षस, मुनि और पितर उनकी जय जय पुकारने लगे।

हे राजन्! अनन्तर प्रतापवान सूर्य्यने प्रसन्न होकर अपने सङ्ग रहने वाले काल और यम-राजके समान बलवान अपने समान तेजस्वी शुभ्रज और भास्वर नामक दो अनुचर दिये।

ब्रह्माने भी महाबलवान प्रथम और उन्माथ नामक दो अनुचर दिये।

चन्द्रमाने कैलाशके शिखरके समान सुन्दर श्वेत मालाधारी और सुमणि नामक दो अनुचर दिये।

अग्निने अपने पुत्र कार्त्तिकेयको शत्रुओंकी सेनाको नाश करनेवाले, महावीर ज्वालाजिह्व और ज्योति नामक दो सेवक दिये।

अंशनामक देवताने बुद्धिमान कार्त्तिकेयको परिघ, कभीरु, महाबलवान दहती, और महावीर दहन नामक पांच सभासद दिये।

शत्रुनाशन इन्द्रने वज्रधारी, उत्क्रोश और दण्डधारी पञ्चवक्त्र नामक दो सेवक दिये।

उन्होंने युद्धमें अनेक दानवोंका नाश किया था।

महायशस्वी विष्णुने चक्र, विक्रम और संक्रम नामक तीन बलवान सभासद दिये।

वैद्योंमें श्रेष्ठ अश्विनीकुमारने सब विद्याओंसे पूर्ण वर्द्धन और नन्दन नामक दो पारिषद दिये।

महात्मा कार्त्तिकेयको धाताने कुन्द कुसुम, कुमुद डम्बर, और आडम्बर नामक सेवक दिये।

त्वष्टाने माया जाननेवाले, महाबलवान मेघ चक्र संज्ञक चक्र और अतिचक्र नामक दो अनुचर दिये।

महात्मा कार्त्तिकेयको भगवान मित्रने सब माया जाननेवाले, महासुव्रत और सत्यसन्ध्र नामक दो बलवान पार्षद दिये ये दोनोंपार्षद विद्या और तपसे भरे थे।

विधाताने अत्यन्त सुन्दर तीनलोकोंमें विख्यात् महात्मा सुव्रत और शुभकर्म्मा नामक दो सेवक दिये।

पूषाने कार्त्तिकेयको सब माया जाननेवाले, पाणी तक और कालो नामक दो पार्षद दिये।

हे भरतकुल श्रेष्ठ! वायुने कार्त्तिकेयको बड़े मुख और बड़े बलशाली बल और अतिबल नामक दो पार्षद दिये।

सत्यवादी वरुणने बड़े मुख और बड़े बलवाले यम और अतियम नामक दोपार्षद दिये

अग्निके पुत्र कार्त्तिकेयको हिमाचलने सुवर्चा और अतिवर्चा नामक दो अनुचर दिये।

मेरु पर्व्वतने अग्नि पुत्रको महात्मा कांचन और मेघमाली नामक दो अनुचर दिये। फिर मेरुने स्थिर और अति स्थिर नामक दो अनुचर और दिये।

विन्ध्याचलने पत्थरोंसे युद्ध करनेवाले महा-पराक्रमी उच्छृङ्ग और अति स्हङ्ग नामक दो अनुचर दिये।

समुद्रने गदाधारो संग्रह और विग्रह नामक दो अनुचर दिये।

सुन्दरी पार्व्वतीने उन्माद, शंकुकर्ण्ण और पुष्पदन्त नामक सेवक दिये।

सर्पराज वासुकीने अग्नि पुत्रको जय और महाजय नामक दो सर्प दिये।

इसी प्रकार साध्य, रुद्र, पितर, वसु, समुद्र, नदी, और पर्व्वतोंने कार्त्तिकेयको शूल और पट्टिश धारी अनेक सेनापति दिये।

हे राजन्! अनेक प्रकारसे युद्ध करनेवाले, सब युद्ध विद्याके जाननेवाले बिचित्र भूषण-धारी इन गणोंके नाम भी तुम सुनो शंकु-कर्ण्ण निकुम्भ, पद्म, कुमुद, अनन्त, द्वादश भुजा, उपप्रश्न, प्राणश्रवा, कपिस्कन्द, कांच-नाच, जलन्धर, अचसन्तर्प्पन, कुन्दीक, तम, अन्तकृत, एकाच, द्वादशाच, एकजट, सहस्र बाहु, विकट, व्याघ्राच, चितिकम्पन, जरायु-नामा, सुनामा, सुचक्र, प्रियदर्शन, परिश्रुत, कोकनद, प्रियमाली, प्रियानुलेपन, अजोदर, गजशिरा, स्कन्धाच, शतलोचन, ज्वालाजिह्व, करालाच, शितिकेश, जटी, हरी, परिश्रुत, कोकनद, कृष्णकेश, जटाधर, चतुर्दंष्ट्र, अष्टजिह्व, मेघनाद, पृथश्रवा, विधूताच, धनुर्व्वक्र, मारुता-शन, उदाराच, रथाच, वज्रनाभ, वसुप्रभु, समु-द्रवेग, शैलकम्पी, वृषमेष, प्रवाह, नन्द, उपनन्द, धूम्र, श्वेत, कलिङ्ग, सिद्धार्थ, वरद, प्रियक, नन्द, प्रतापी, गोनन्द, आनन्द, प्रमोद, स्वस्तिक ध्रुवक, क्षेमवाह, सुवाह, सिद्धपात्र, गोव्रज, कनकापीड़, महा पारिषदेश्वर, गायन, हसन, बाण, बल-वान्, खङ्ग वैताली, गतिताली, कथक, वातिक, हंसज, पङ्क, दिग्धाङ्ग, समुद्रोन, मादन, रणोत्कट, प्रहास, श्वेतसिद्धनन्दन, कालकण्ठ, प्रभास, कुम्भा ण्डोदर, कालकच, शित, भूत, मथुन यज्ञबाहु, सुबाहु, देवयाजी, सोमप, मज्जान, महातेजा, क्रथ, क्राथ, तेजधर, तुहार, बलवान, चित्रदेव, सुप्रसाद, मधुर, महाबलवान, किरीटी, वत्सल, मधुवर्ण्ण, कलशोदर, धर्म्मद, मन्मथकर, बलवान् सूची वेणु, सुवक्त, श्वेतवक्र, चारुवक्त, पांडुर, दण्डबाहु, रज, सुबाहु, कोकिल, अचल, कनकाच बालाप्रिय, सञ्चारक, कोकनद, गृध्र, पत्र, जम्बुक, लोहवक्र, अजवक्र, जवन, कुम्भवक्र, कुम्भक स्वर्णग्रीव, कृष्णोजा, हंसवक्र, चन्द्रमा पाणीकुच, शम्बुक, पञ्चवक्र, शिचक, चाषवक्र, जम्बुक, शाकवक्र और कुण्डल आदि ब्रह्माके बनाये योगी महात्मा सदा ब्राह्मणोंके प्यारे सहस्रों पारिषद कार्त्तिकेयके पास आये।

हे जनमेजय! इनमेंसे कोई युवा, कोई बालक और कोई बूढ़े थे अब उनके अनेक प्रकारके मुखोंका वर्णन सुनो कोई कछुवे, कोई मूसे, कोई खरहे, कोई उल्लू कोई गधे, कोई सुअर, कोई बिलावके समान मुखवाले थे किसीका लम्बा, मुख था, कोई नो उल्लू, कौवे, मूंस, मोर, मछली, बकरो, मेढ़ा, भेड़, भैंस, रीछ, शार्दूल, गैड़ा, सिंह, भयानक हाथी, नाकी, गरुण, गिद्ध, कङ्क, भेड़िया, गाय, गधा, और चीतेके समान मुखवाले थे!

किसीका बड़ा पेट किसीके बड़े पैर और किसीके तारेके समान नेत्र थे किसीका मुख परे वा किसीका बैल किसीका कोकिला, किसीका बाज किसीका तीतर, किसीका गिरगट, किसीका सांप, और किसीका शूलके समान भयानक मुख था, ये सब उस समय निर्म्मल-वस्त्र धारण किये थे, और सांपोंके भूषण पहिने थे।

किसीके नाक गायके ऐसी थी, और किसीका मुख गायके ऐसा था, और किसीका शरीर बहुत दुबला और पेट बहुत बड़ाथा, किसीका शरीर बहुत मोटा और पेट छोटा था, किसीकी गरदन छोटी थी, और कान भारी थे, कोई

सांप लपेट रहा था, कोई हाथीका चमड़ा ओढ़ रहा था, और कोई मृगछाला ओढ़ रहा था।

किसीका मुख कंधेमें किसीका पेटमें किसीका पीठमें किसीका ठोड़ीमें किसीका जांघमें और किसीका पसलीमें मुख था किसीके अनेक मुख थे किसीके सब शरीरमें मुखी मुख थे, किसीके शरीरमें अनेक सांपोंके मुख लगे थे किसीके अनेक हाथ और किसीके अनेक शिर थे, किसीके अनेक वृक्षोंके समान हाथ थे और किसीका कमरमें मुख था, किसीका मुख सांपके फणोंके समान था, ये सब अनेक देशोंके रहनेवाले थे अनेक प्रकारके सोनेके भूषण धारण किये थे, अनेक प्रकारके वस्त्र और माला पहिरे थे, अनेक प्रकारके सुगन्ध लगाये थे, चमड़ा ओढ़े थे, कोई पगड़ी बांधे थे कोई मुकुट बांधे थे कोई सुन्दर कंठ-वाले और कोई महातेजस्वी थे, कोई किरीट बांधे थे किसीके पांच शिखायें किसीके सोनेके समान शिखा थी, किसीके दो शिखा थीं और किसीके सात शिखा थीं, किसीका शिर मुड़ा था और किसीकी जटा बढ़ी थी, किसीके मुखपर बड़े बड़े बाल थे कोई विचित्र माला पहिने थे ये सब वीर रणके प्यारे और देवतोंको भी जीतनेवाले थे।

सबकाल सूखे मुख बड़े बड़े कमर और पेटवाले थे, किसीकी कमर बड़ी भारी और किसीकी कमर छोटी थी किसीका पेट बड़ा और किसीका लिङ्ग बड़ा भारी था, किसीका हाथ बड़ा और किसीके छोटे छोटे थे, कोई बहुत लम्बे और कोई बौने ही थे कोई कुबड़े और कोई छोटी जांघवाले थे।

किसीका कान किसीकी नाक और किसीका शिर हाथीके समान था, किसीकी नाक कछुवेके समान थी, किसीकी नाक भेड़ि-येके समान थी कोई लम्बे श्वांस लेता था, किसीकी जङ्घा बड़ी भारी थी किसीका मुख बड़ा भयानक और नीचेको था।

हे राजन्! किसीके बड़े बड़े दांत किसीके चार दांत और किसीके हाथीके समान दांत थे किसीका बड़ा सुन्दर और तेजस्वी शरीर था। कोई उत्तम आभूषण पहिने था, किसीके नेत्र बन्दरके समान थे, किसीके कान छोटे छोटे थे, किसीकी नाक लाल थी, किसीके लम्बे और चौड़े दांत थे। किसीके मोटे मोटे ओठ और पीले पीले बाल थे, किसीके अनेक चरण किसीके अनेक ओठ किसीके अनेक हाथ किसीके अनेक दांत और किसीके अनेक शिर थे। अनेक प्रकारके चमड़े ओढ़े अनेक भाषाको जाननेवाले ये सब गण परस्पर वार्त्ता करने लगे, और प्रसन्न होकर सभामें आये। किसीका ऊंटके समान गला था किसीके बड़े बड़े नखून थे किसीके बड़े बड़े चरण और किसीके बड़े बड़े हाथ थे।

हे भारत! किसीके बन्दरके समान आंख थीं, किसीके गले नीले थे, किसीके लम्बे लम्बे कान थे, किसीका भेड़ियेके समान पेट था, कोई अञ्जनके समान काले शरीरवाला था, किसीकी सफेद आंख और गला था, किसीके पिङ्गलवर्ण नेत्र थे, किसीका विचित्र रङ्ग था, किसीका चमरके समान रंग था, किसीके शरीरपर लाल और सफेद विन्दु थे, किसीके शरीरमें अनेक रंग थे, कोई एक ही रंगवाला था, और किसीका रंग मोरके समान था।

हे राजन्! अब तुम इनके शस्त्रोंका वर्णन सुनो। किसीके हाथमें फांसी, किसीका मुख गधेके समान किसीकी पीठमें आंख थीं, किसीका कण्ठ नीला था। किसीके हाथमें परिघ किसीके शतघ्नी, किसीके चक्र, किसीके मुशल किसीके खड्ग, किसीके दण्ड किसीके गदा, किसीके भुशुण्डी और किसीके हाथमें तोमर था। महाङ्गवाले महात्मा महाबल

वान गणोंके हाथमें और भी अनेक प्रकारके शस्त्र थे।

प्रारब्धसे कार्त्तिकेयका अभिषेक देखकर यह सब युद्ध करनेवाले वीर बहुत प्रसन्न हुए, फिर घण्टे बांधकर नांचने लगे और भी अनेक पारिषद यशस्वी महात्मा कार्त्तिकेयके पास आये। देवतोंको आज्ञासे पृथ्वी और अन्तरिक्षमें रहनेवाले वायुके समान वेगवान राजा और पहिले लिखे गणोंके समान हजारों लाखों करोड़ों और पद्मों गण अभिषेक होते हुए कार्त्तिकेयके चारों ओर खड़े होगये।

४५ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! अब हम कार्त्तिकेयके सङ्ग रहनेवाली शत्रुनाशनी मातृगणोंका वर्णन करते हैं। तुम सुनों।

हे भारत इन हो यशस्विनी। कल्याणी मातृयोंसे य सब जगत् व्याप्त है।

प्रभावती, विशालाक्षी, पालिता, श्रीमती, बहुला, बहुपुत्रिका, अप्सजाता, गोशाली, वृहदम्बिका, जयावती मालतिका, ध्रुवरत्ना, भयङ्करी वसुदामा, क्षमा, विशाका, नान्दनी, एक चूड़ा, महाचूड़ा, चक्रनेमी उत्तेजिनी, जयत्सेना, कमलाक्षी, अशोभना क्राधना, शलभी, खरी, माधव, शुभवक्ता, तीर्थश्रेणी, गीतप्रिया कल्याणी रुद्ररोमा, मिताशना मेघस्वना भोगवती, सम्मु कनकावती, अलाताक्षी वीर्य्यवती विद्युज्जिह्व, पद्मावती, सुनक्षत्रा कन्दरा बहुयोजना, सन्तानिका महावला, कमला, सुदामा, बहुदामा, सुप्रभा, यशश्विनी, नृत्यप्रिया, शता, उलूखलमेखला, शतघण्टा, शतानन्दा, भगानन्दा, भाविनी वपुष्मती, चन्द्र सीता भद्रकाली, ऋक्षा, अम्बिका निषटिका, वामा चत्वरसिनी, सुमङ्गला, अस्तिमती बुद्धिकामा, जयप्रिया, धनदा, सुप्रसादा, भवदा, महेश्वरी, येड़ी, भेड़ी, समेजतु, वेतालजननी, कण्डूती, कालिका, देवमित्रा, वसुपोई, कोटरा, चित्रसेना, कुक्कुटिका, स्वङ्खलिका, शकुनिका, कुण्डरिका, कौकुलिका, कुम्भिका, शतोदरा, उत्क्राथिनी, जलेला, महावेगा, कङ्कण मनोजवा कण्ठकिनी प्रघासा, पूतना केशयन्त्री त्रुटी वामा क्रोशना, तल्लित्प्रभा मन्दोदरी मुण्डी, कोटरा मेघवाहिनी सुभगा लाम्बनी, लम्बाताम्र चूड़ा, विकाशिनी, ऊर्ध्ववेणीधरा, पिंगाक्षी लोहमेखला, प्रथवस्त्रा, मधूलिका, मधुकुम्भा, पक्षालिका, मत्कुलिका, जरायुजड़, जरानना, दहदहा, धमधमा, खड्गा अखड्ग, पूषणा मणिकुट्टिका, अमोघा, लम्ब, पयोधरा, वेणी, वीणारा पिंगाक्षी, लोहमेखला, शशउलूक मुखी, कृष्णा खरजिह्वा, महाजवा, शिशुमारमुखा, शता लोहिताक्षी, विभीषणा जयालिका कामचरी, दीर्घजिह्वा महोत्कटा, कार्दोहका, वामनिका, मुकुटा, लोहिताक्षी, महाकाया, हरिपिण्डा, एकत्त्वचा, सुकुसुमा, कृष्णा कर्णा, क्षुरकर्णा, चतुःकर्णा, कर्णप्रावर्णा, चतुष्पदा, निकेता, महिशयना, खकर्णी, महाकर्णी, भेरस्वना, महाधरा, शङ्कवा, भगदा महाबला गणा सुगणा भीति कामदा चतुष्पदता, भूततीर्था, अन्यगोचरी, पासुका, महायशा, पयोदा गोदा, महिटादा, विशाल, प्रतिष्ठा, सुप्रतिष्ठा, रोचमाना, सुरोचना, नीकर्णा मुख कर्णा विशोष, मन्थिनी एकचन्द्रा मेघ माला और विरोचना।

हे भरतकुल सिंह! इनको आदि लेकर और भी सहस्रों मातृगण अनेक प्रकारके स्वरूप वनाकर कार्त्तिकेयके संग रहती हैं। इन सबके बड़े बड़े दांत और बड़े बड़े मुख हैं। सब बल मधुरता, योवन, भूषण और महात्म्यासे भरी हैं। इच्छानुसार रूप धारण करसक्ती है। किसीके शरीरमें मांस नहीं है, कोई सफेद है। किसीका सोनेके समान रङ्ग है। कोई मेघके समानकाली, कोई धूवेंके समान सुन्दर और कोई लाल रङ्गवाली है।

सब बड़े बालवाली सफेद वस्त्र धारिणी, ऊपरको देखनेवाली, पिङ्गवर्ण नेत्रवाली, किसीके बड़े बड़े पेट, लम्बे लम्बे कान, लम्बे लम्बे स्तन, कोई लालनेत्रवाली, किसीके बन्दरके समान नेत्र हैं। ये सब बरदान देनेमें समर्थ हैं और सदा प्रसन्न रहनेवाली हैं और सब इच्छानुसार घूमती हैं। कोई यम, रुद्र, चन्द्रमा, कुबेर, वरुण, इन्द्र, अग्नि, वायु, कार्त्तिकेय, सूर्य्य और कोई बराहको शक्तिसे बनी हैं। रूपमें अप्सराओंके तुल्य हैं; इनको देखते ही मन वशमें नहीं रहता इनकी बड़ी मीठी बाणी है बचनमें कुबेरके समान युद्ध करने और बलमें इन्द्रके समान और तेजमें अग्निके समान हैं। इन्हें देखकर युद्धमें शत्रु बहुत डरते हैं। ये सब इच्छानुसार रूप धारण कर सक्ती हैं। शीघ्र चलनेमें वायुके समान हैं। इनका बल, बीर्य्य और पराक्रम अपार है। ये सब वृक्ष चौराहे, गुफा, स्मशान पर्व्वत और दुर्गोंमें रहती हैं। अनेक प्रकारके वस्त्र, आभूषण और माला धारण करती हैं चित्र वेष बनाती हैं और अनेक प्रकारकी भाषा बोलती हैं।

हे राज शार्दूल! इनको आदि लेकर और भी सहस्रों भयानक गण इन्द्रकी आज्ञासे कार्त्तिकेयके सङ्ग चले; फिर इन्द्रने दानवोंका नाश करनेके लिये बड़े शब्दवाली घंटोंसे युक्त अपने तेजसे प्रकाश करती हुई एक सांगी कार्त्तिकेयको दई और प्रातः कालके सूर्य्यके समान एक पताका तथा अनेक शस्त्र और बलसे भरी महा तेजस्वी शत्रुओंसे लड़नेवाली रुद्रके समान पराक्रमी तीस सहस्र बीरोंसे भरी धनञ्जय नामक सेना शिवने दी। यह सेना कभी युद्धसे लौटना नहीं जानती।

विष्णुने बल बढ़ानेवाली वैजयन्ती माला पार्व्वतीने सूर्य्यके समान दो निर्म्मल वस्त्र, गङ्गाने अमृतसे उत्पन्न हुवा कमण्डलु, बृहस्पतिने प्रसन्न होकर दण्ड, गरुड़ने विचित्र पङ्खवाला अपना प्यारा पुत्र मोर, अरुणने लाल चोटीवाला सुर्गा, राजा वरुणने बलवान सांप, भगवान हरिणका चमड़ा और युद्धमें जय होनेका आशीर्व्वाद दिया।

इस प्रकार कार्त्तिकेय देवतोंके सेनापति बनकर उस पर्व्वतके ऊपर जलती हुई अग्निके समान प्रकाशित होने लगे। फिर अपने पार्षद और मातृगणके सहित कार्त्तिकेय देवतोंके प्रसन्न और राक्षसोंका नाश करनेके लिये चले फिर उस भयानक नेऋत सेनामें शङ्ख और भेर आदि बाजे बजने लगे। ध्वजा उड़ने लगी। जैसे शरत्कालके आकाशमें तारे चमकते हैं ऐसे शस्त्र चमकने लगे। देवतोंने और सब भूत गणोंने सावधान होकर शङ्ख,भेर, पटह क्रकच, बजायके सींग आड़म्बर और बड़े शब्दवाले डिण्डिम आदि बाजे बजाये। फिर इन्द्रादिक देवता कार्त्तिकेयकी स्तुति करने लगे; गन्धर्व्व और देवता गाने लगे और अप्सरा नाचने लगीं।

अनन्तर कार्त्तिकेयने प्रसन्न होकर बरदान दिया कि जो शत्रु तुम लोगोंको मारना चाहते हैं हम उनका नाश करेंगे। कार्त्तिकेयसे बरदान पाकर महात्मा देवता बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने शत्रुओंको मरा हुवा जान लिया। कार्त्तिकेयका बरदान सुनकर सब जन्तु प्रसन्न होकर गर्ज्जने लगे। यह शब्द तीनों लोकोंमें पूरित होगया।

हे राजन्! उस शूल और मुशल धारियोंकी महासेनाको संग लेकर कार्त्तिकेय दैत्योंका नाश और देवतोंकी रक्षा करनेको चले।

हे राजन्! उस अलात, गदा, मुशल, नाराच, सांगी और तोमर धारिणी कार्त्तिकेयकी सेनाके आगे परिश्रम, विजय, धर्म्म, सिद्धि, लक्ष्मी, धारणाशक्ति और स्मरण शक्ति चली कार्त्तिकेयके सेनाके बीर मतवाले सिंहके समान गर्ज्जने लगे।

तेज और बलसे भरे कार्त्तिकेयको आते देख दैत्य, दानव और राक्षस सब ओरसे व्याकुल होकर इधर उधरको भागने लगे। देवता भी शस्त्र लेकर उनके पीछे दौड़े कार्त्तिकेयको भी उन्हें देखकर बहुत क्रोध हुआ और बार बार शक्ति चलाने लगे, उस समय कार्त्तिकेयका ऐसा तेज बढ़ा जैसे आहुती जलातेहुए अग्निका।

हे महाराज! जिस समय अनन्त तेजस्वी कार्त्तिकेयने शक्ती चलाई, उस समय पृथ्वीमें आकाशसे बिजली गिरी और अनेक तारे टूट टूट इस प्रकार गिरे कि जैसे प्रलयमें गिरते हैं।

हे महाराज! जब कार्त्तिकेयने शक्ति छोड़ी उसी समय उससे करोड़ों शक्ति निकलने लगीं। तब भगवान् कार्त्तिकेयने प्रसन्न होकर उन्हीं शक्तियोंसे एक लाख वीरोंके सहित महापराक्रमी महाबली दैत्यराज तारकको मारा, महिषासुरको आठपद्म वीरोंके सहित मारा, त्रिपाद नामक दानवको एक करोड़ दानवोंके सहित मारा और ह्रदोदर नामक दानवको दशनिखर्व दानवोंके सहित मारा, जिस समय अनेक शस्त्रधारी पार्षदोंके सहित कार्त्तिकेय शत्रुओंका नाश कर रहे थे, उस समय दोनों ओरको सेनामें घोर शब्द होने लगा, और वीर नाचने, कूदने, गर्जने और दौड़ने लगे।

हे राजन्! उस समय सब जगत् कार्त्तिकेयकी शक्तिके तेजसे भुना जाता था, सहस्रों दानव शक्तिकी ज्वालासे जल गये, सहस्रों कार्त्तिकेयके शब्दसे मर गये, और सहस्रों ध्वजाकी हवासे उड़ गये। कोई घण्टेका शब्द सुनकर भयसे पृथ्वीमें गिर गये और कोई शस्त्रोंसे कटकर मर गये। इस प्रकार महाबलवान कार्त्तिकेयने सहस्रों दुष्ट दानवोंको मार डाला।

अनन्तर बलीका बेटा बलवान बाण नामक दानव क्रौञ्च पर्व्वतपर खड़ा होकर देवतोंका नाश करने लगा। तब महाबुद्धिमान कार्त्तिकेय उस देवतोंके शत्रुको मारने चले।

वह उनसे डरकर क्रौञ्च पर्व्वतमें छिप गया, तब कार्त्तिकेयने क्रोध करके क्रौञ्चपक्षियोंके शब्दसे भरे, उस पर्व्वतको तोड़ दिया। उसके टूटनेसे बड़े शालके वृक्ष टूटने लगे। बन्दर, हाथी डरकर भागने लगे। लंगूर और रीछ इधर उधरको भागकर चिल्लाने लगे, हरिन घबड़ाकर भागने और बोलने लगे, शरभ और सिंह इधर उधर दौड़ने लगे। उसके शिखरोंपर रहनेवाले, विद्याधर गिरने लगे। शक्तिका शब्द सुनकर किन्नर घबड़ा गये। उस समय उस पर्व्वतकी एक विचित्र शोभा दीखती थी।

अनन्तर उस पर्व्वतसे विचित्र माला और आभूषण पहिने सैकड़ों सहस्रों दानव निकले उन सबको कार्त्तिकेयके वीरोंने मारडाला।

अनन्तर भगवान कार्त्तिकेयने क्रोध करके भाईके सहित बाण नामक दैत्यको इस प्रकार मारा जैसे इन्द्रने वृत्रासुरको मारा था।

शत्रुनाशन कार्त्तिकेयने अनेक वार शक्ति छोड़कर पर्व्वतके एकही बार अनेक टूकड़े कर दिये, कार्त्तिकेयके हाथसे छूट छूटकर शक्ति फिर उन्हीके हाथमें आजाती थी। भगवान कार्त्तिकेय इस प्रकार सहस्रों देवतोंके शत्रु दानवोंको मारकर और क्रौञ्च नामक पर्व्वतको तोड़कर पहिलेसे द्विगुण तेज, प्रभाव, लक्ष्मी, यश और तेजसे प्रकाशित हुए।

हे राजन्! इस प्रकार दानवोंका नाश करके महाबलवान कार्त्तिकेय बहुत प्रसन्न हुए देवता शङ्ख और नगारे बजाने लगे। देवतोंकी स्त्री फूल बर्षाने लगीं, योगी और देवतोंके स्वामी कार्त्तिकेयकी ओर दिव्य सुगन्धी लेकर वायु चलने लगा। गन्धर्व्व, यज्ञ करनेवाले, महात्रृषी इनकी स्तुति करने लगे। इनहीं कार्त्तिकेयको कोई ब्रह्माका पुत्र, कोई सनातन

कोई शिवकापुत्र, कोई अग्निकापुत्र, कोई कृत्तिकापुत्र, कोई पार्व्वतीका पुत्र, और कोई गंगाका पुत्र मानते हैं। कोई एक शरीर कोई दो शरीर, कोई तीन शरीर, और कोई सहस्रों शरीर मानते हैं।

हे राजन्! हमने देवता और योगियोंके स्वामी कार्त्तिकेयके अभिषेककी कथा तुमसे कही अब सरस्वतीके पवित्र तीर्थकी कथा सुनो।

जब कार्त्तिकेयने दानवोंको मारा तभी से यह तीर्थ स्वर्गके समान होगया वहीं बैठकर कार्त्तिकेयने सबको अलग अलग ऐश्वर्य्य बांट दिये प्रधान नैऋतोंको तीनों लोक दिये।

हे महाराज! इस प्रकार दैत्योंके वंशनाशक कार्त्तिकेयका इस तीर्थपर अभिषेक हुआ था।

इस तीर्थका नाम तैजस तीर्थ है, यहींपर देवतोंने वरुणको जलका राजा बनाया था।

उस तीर्थमें स्नान करके बलदेवने कार्त्तिकेयकी पूजा करी और प्रसन्न होकर ब्राह्मणोंको सोना, वस्त्र और आभूषण दान किये, फिर प्रसन्न होकर एक रात रहकर पूजा करी और तीर्थमें स्नान किये।

हे राजन्! तुमने जो हमसे पूंछा था, सो हमने कहा इस प्रकार सब देवतोंने आकर भगवान कार्त्तिकेयका अभिषेक किया था।

४६ अध्याय समाप्त।

राजा जनमेजय बोले, हे ब्रह्मन्! आपने हमसे विधिपूर्व्वक कार्त्तिकेयके अभिषेककी अद्भुत कथा कही जिसको सुनकर मैंने अपने शरीरको पवित्र माना। कार्त्तिकेयका अभिषेक और दैत्योंका नाश सुनकर हमारे रोंये खड़े होगये और मन प्रसन्न होगया।

हे महाबुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ! आप सब विषयोंमें निपुण हो और मुझे कथा सुननेमें परम प्रीति और इच्छा है, इसलिये आप हमसे वरुणके अभिषेककी कथा कहिये देवतोंने किस प्रकार वरुणको जलका राजा बनाया था।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! अब यह पहिले कल्पकी अद्भुत कथा तुमसे कहते हैं सुनो, पहिले सतयुगमें सब देवतोंने वरुणसे आकर कहा, हे देव! जैसे इन्द्र भयसे हमलोगोंकी रक्षा करते हैं। तैसे ही आप भी नदियोंके स्वामी होकर जलकी रक्षा कीजिये आपको रहनेके लिये मछलियोंका स्थान समुद्र मिलेगा, नद और नदियोंका स्वामी समुद्र तुम्हारे वशमें रहेगा। तुम्हारी वृद्धी और हानि चन्द्रमाके घटने और बढ़नेके अनुसार हुआ करेगी, अर्थात् चन्द्रमाके बढ़नेसे बढ़ोगे और घटनेसे घटोगे।

देवतोंके वचन सुन वरुणने कहा कि बहुत अच्छा। तब सब देवता समुद्रके तटपर आये, और शास्त्रमें लिखी विधिके अनुसार वरुणको जलका स्वामी बनाया, फिर जल और जलजन्तुओंकेपति वरुणकी प्रशंसा करते हुए सब देवता अपने अपने घरको चले गए। महायशस्वी वरुण भी जलका अधिकार पाकर समुद्र नदी, नद और तलावोंकी इस प्रकार रक्षा करने लगे। जैसे इन्द्र देवतोंकी रक्षा करते हैं।

प्रलम्बासुरनाशक बलराम उस तीर्थमें भी स्नान करके अनेक प्रकारके दान देकर अग्नि तीर्थको चले गये।

हे पापरहित जनमेजय! इसही तीर्थमें अग्निशमी गर्भमें आकर छिपे थे, उस समय सब जगत् नष्ट होनेको उपस्थित होगया था। तब सब देवता ब्रह्माके पास जाकर बोले कि, हे जगत्पते! न जाने भगवान अग्निका किस कारण नाश होगया है, इस जगत्का नाश हुवा जाता है। अब आप अग्निको सम्पादन कीजिये।

राजा जनमेजय बोले, हे भगवन्! जगत्पूज्य भगवान अग्नि कैसे नष्ट होगये थे? और

फिर देवतोंने उन्हें कैसे जाना? यह कथा आप हमसे कहिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, एक समय भृगुके शापसे प्रतापवान अग्नि बहुत डरकर शमी नामक लकड़ोके भीतर घुस गये और वहीं नष्ट होगये।

अग्निको नष्ट हुए देख सब देवता बहुत घबड़ाये और अत्यन्त दुःखित होकर इन्द्रादिक उन्हें ढूढ़ने लगे। फिर अग्नितीर्थमें आकर देखा कि अग्नि शमी वृक्षके भीतर विधिके अनुसार वास करते हैं।

हे पुरुषसिंह! उनको देखकर वृहस्पति आदि देवता बहुत प्रसन्न हुए, और फिर अपने अपने घरको चले गये। अग्नि भी भृगुके शापसे सब वस्तु खानेवाले होगये यह कथा तुमने पहिले सुनी है, उस तीर्थमें भी स्नान करके बुद्धिमान बलराम ब्रह्मयोनि तीर्थको चले गये।

हे राजन्! ब्रह्माने पहिले इसी तीर्थमें विधि पूर्ब्बक देवतोंके तीर्थ बनाये थे, और देवतोंके सहित स्नान भी किया था। बलदेव वहां भी स्नान करके कौवेर नामक तीर्थको चले गये।

हे राजन्! इसी स्थानमें तपस्या करनेसे इलविलाके पुत्र कुबेर धनपति हुए थे, इनको वहीं धन और निधि प्राप्त हुई थी, वहां भी बलरामने विधिपूर्ब्बक ब्राह्मणोंको बहुत धन दान किया और जलमें यक्षराज महात्मा कुबेरका यह स्थान देखा जहां कुबेरने तपस्या करके धनपतिका पद और महातेजस्वी शिवसे मित्रता पाई थी, वहीं कुबेर धनपति देवता और लोकपाल बने थे, और वहीं उनके नलकूबर नामक पुत्र हुआ था वहीं देवतोंने उनका अभिषेक किया था। वहीं उन्हें बहुत शीघ्र चलनेवाला हंसयुक्त पुष्पक नामक दिव्य विमान मिला था, और वहीं वे निर्ऋत कुलके स्वामी बने थे, वहां स्नान करके और अनेक प्रकारके दान करके सफेद चन्दनधारी बलराम शीघ्रता सहित अनेक जन्तुवोंसे भरे सब ऋतुयोंमें फलने और फूलनेवाले वृक्षोंसे शोभित बदरपाचन नामक तीर्थको चले गये।

४७ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! वहांसे चलकर बलराम बदरपाचन नामक तीर्थमें पहुंचे, इसी स्थानमें एक कन्याने व्रत धारण करके सिद्धोंके समान तप किया था वह श्रुवती नामक कन्या भरद्वाज मुनिकी पुत्री जगत्में असाधारण रूपवती और बालकहीसे ब्रह्म चारिणी थी।

हे महाराज! उसने देवराज इन्द्रको अपना पति बनानेके लिये घोर तप और नियम करने आरम्भ किये इस प्रकार स्त्रियोंसे न होने योग्य अनेक घोर तप और नियम करते करते उस कुमारी कन्याको बहुत वर्ष बीत गये।

हे पृथ्वीनाथ! उसके इस प्रकार तप, भक्ति, नियम प्रेम और आचरण देखकर देवतोंके स्वामी भगवान इन्द्र प्रसन्न हुए और महात्मा वशिष्ठका रूप बनाकर उसके आश्रममें आये।

हे भारत! महातपस्वी वशिष्ठको अपने यहां आये देख उस कन्याने शास्त्रकी विधिके अनुसार उनकी पूजा करी फिर वह नियम जाननेवाली कल्याणभरी कन्या मीठे बचन बोली।

हे भगवन्! हे मुनिश्रेष्ठ! हे व्रतधारण करनेवाले! आप क्या आज्ञा देनेको मेरे पास आये हैं? आपकी जो आज्ञा होगी सो मैं सत्यके अनुसार पूरी करूंगी, परन्तु मेरी भक्ति इन्द्रमें अधिक है, इसलिये मैं तुम्हारी स्त्री न बनूंगी।

हे तपोधन! मैंने यह प्रतिज्ञा की है, कि व्रत, नियम और तपसे तीन लोकोंके स्वामी इन्द्रको प्रसन्न करूंगी।

हे भारत ! भगवान इन्द्र उस कन्याके ऐसे बचन सुन हंसकर उसकी ओर देखने लगे और उसके नियम जानकर बोले।

हे कल्याणी ! हे उत्तम व्रतधारिणी ! तुम घोर तप कर रही हो; हम जानते हैं। तुमने जो इच्छा धारण करके यह व्रत किया है। वह सब वैसे ही सिद्ध होगा; जगत्में तपसे सब कुछ मिल सक्ता है, मनुष्य तपसे देवतोंके स्थानोंमें जाता है, तपसे महासुखप्राप्त होता है यह विचारकरभी मनुष्य तप करके शरीर छोड़ते हैं और दूसरा जन्म पाकर देवता होजाते हैं। अब हम तुमसे जो बचन कहते है, सो सुनिये पांच बेर तुम्हारे पास हम धरे जाते हैं, तुम इनको पकावो और हम नहाकर आते हैं, ऐसा कहकर भगवान इन्द्र वहांसे चलेगये और वहांसे थोड़ी दूर जाकर तीनों लोकोंमें विदित इन्द्रतीर्थमें जाकर तप करने लगे और उस कन्याकी परीक्षा करनेके लिये ऐसी माया करी कि अग्निमें बेर न पक सकें।

हे राजन् ! तब उस कन्याने पवित्र और सावधान होकर आगमें उन बेरोंको पकाना आरम्भ किया, परन्तु पकाते पकाते सब दिन बीत गया और वे बेर न पके जब उसकी सब लकड़ी भी जल चुकीं तब बहुत घबड़ाई और आगमें अपना शरीर जलानेकी इच्छा करी। सुन्दरी श्रुतावतीने पहिले आगमें अपने पैर जलाये जलते हुए पैरोंको बार बार आगमें जलाती थी, इस प्रकार निन्दारहित श्रुतावतीने वशिष्ठके प्रसन्न करनेके लिये ऐसा घोर कर्म्म किया, और उसका कुछ बिचार न किया, और कुछ उसके मनमें दुःख न हुआ और कुछ उसके मुखका रङ्ग भी न बदला, जैसे कोई पानी पड़नेसे प्रसन्न होता है, ऐसे ही वह आगसे जलनेसे प्रसन्न होती थी, उसके मनमें यह निश्चय रहा कि मैं जैसे होगा वैसेही बेर पकाऊंहोगी, इस प्रकार उसने निश्चय कर लिया परन्तु बेर तब भी न पके भगवान् अग्निने उसके सब पैर जला दिये परन्तु तौभी उसके मनमें कुछ दुःख न हुआ।

तब तीन लोकके स्वामी इन्द्र प्रसन्न हुए और उसको अपना रूप दिखलाकर बोले, हे दृढ़व्रतवाली सुन्दरी ! मैं तेरी भक्ति और तपसे प्रसन्न हुआ अब तेरे मनकी इच्छा पूरी होगी, हे महाभागे ! अब तुम थोड़े दिनमें शरीर छोड़कर स्वर्गको जाओगी और वहां हमारे सङ्ग रहोगी और लोकमें यह तुम्हारा तीर्थ स्थिर रहैगा, हे सुन्दर भौंहवाली ! इस सब पापनाशन तीर्थका नाम बदरपाचन होगा, इसमें सदा ब्रह्मऋषी स्नान करेंगे।

हे पापरहित ! महाभाग्यवती ! इस ही तीर्थपर अरुन्धतीको छोड़कर सप्त ऋषी हिमाचलको चले गये थे, वहां जाकर इन्होंने फल, मूल खाकर तप करना आरम्भ किया, तब हिमाचलपर बारह वर्ष तक जल न बर्षा परन्तु ये तपस्वी आश्रम बनाकर रहते ही रहे।

भगवती अरुन्धती भी यहां रह कर तप करने लगी उसका घोर तप करते देख महायशस्वी बरदान देनेवाले शिव प्रसन्न हुए।

अनन्तर ब्राह्मणका वेष बनाकर उसके पास आये और कहने लगे कि, हे सुन्दरी ! हम तुमसे भिक्षा चाहते हैं।

सुन्दरी अरुन्धती बोली, हे ब्राह्मण ! हमारे यहां अन्न घट गया है, ये बेर खाइये महादेव बोले, हे उत्तम व्रतधारिणी ! इनको पका दो शिवके बचन सुन अरुन्धती शिवके प्रसन्न करनेके लिये जलती हुई अग्निमें उन बेरोंको पकाने लगी और शिव उनके पास बैठकर दिव्य पवित्र और मनोहारिणी कथा सुनाते रहे, कुछ न खाते, पकाते और कथा सुनाते अरुन्धतीको वह बारह बर्षका अकाल एक दिनके समान बीत गया।

तब सप्तऋषी भी फल लेकर पर्व्वतसे लौटे

तब शिवने अरुन्धतीसे कहा कि, हे धर्म्म जाननेवाली! हम तुम्हारे नियम और तपसे बहुत प्रसन्न हुए अब तुम जैसे पहिले मुनियोंके सङ्ग जाती थीं वैसे ही जाओ फिर भगवान् शिवने अपना रूप दिखाकर अरुन्धतीका चरित्र सुनाया और कहा कि तुम लोगोंने जो हिमाचलमें तप किया और अरुन्धतीने जो घरमें तप किया सो हमारे सम्मतमें दोनों समान नहीं हुए तपस्विनी अरुन्धतीने घोर तप किया इसने बारह वर्षतक कुछ नहीं खाया और बेर पका कर समय बिता दिया।

अनन्तर भगवान् शिव फिर प्रसन्न होकर अरुन्धतीसे बोले, हे कल्याणी! तेरे मनमें जो इच्छा हो सो बरदान हमसे मांगो। महादेवके वचन सुन बड़े बड़े लाल नेत्रवाली अरुन्धती सप्तऋषियोंके बीचमें बोली यदि आप मुझसे प्रसन्न हुए हैं, तब यह बरदान दीजिये कि इस तीर्थका फल अद्भुत होजाय सिद्ध, देवता और ऋषी इससे प्रेम करें और इसका नाम बदरपाचन तीर्थ हो। जो तीन दिनतक पवित्र होकर इस तीर्थमें रहे और उपवास करे, उसे बारह वर्षका फल होय। शिवने उस तपस्विनीसे कहा कि, ऐसा ही होगा, तब सप्तऋषियोंने उनकी स्तुति करी और वे अपने लोकको चले गये, अरुन्धतीको सावधान भूख और प्याससे रहित तथा पहिलेके समान सुन्दर देखकर ऋषियोंको विस्मय हुआ। इस प्रकार पतिव्रता अरुन्धतीको इस तीर्थमें सिद्धिप्राप्ति हुई थी, हे कल्याणी! तुमने भी हमारे लिये ऐसा ही व्रत किया, परन्तु तुमने कुछ विशेष किया इसलिये हम प्रसन्न होकर अधिक वर देते हैं, अरुन्धतीको महात्मा शिवने जो वरदान दिया था उसके प्रताप और तुम्हारे तेजसे हम यह बरदान देते हैं कि जो मनुष्य सावधान होकर इस तीर्थमें एक दिन रहेगा और स्नान करेगा वह मरकर दुर्लभ लोकोंको जायगा ऐसा कहकर देवतोंके स्वामी प्रतापवान भगवान् इन्द्र स्वर्गको चले गये।

हे राजन्! इन्द्रके जाते ही श्रुतावतीके ऊपर पवित्र सुगन्ध भरे फूलोंकी वर्षा होने लगी, देवता आकाशमें खड़े होकर नगारे बजाने लगे। उत्तम पवित्र और सुगन्धि भरा वायु चलने लगा फिर श्रुतावती मरकर उग्र तपके प्रभावसे इन्द्रकी स्त्री बनी और उनके संग विहार करने लगी।

राजा जनमेजय बोले, हे भगवन्! सुन्दरी श्रुतावतीकी माता कौन थी? और वह कहां पली थी? यह कथा आप हमसे कहो हमें सुननेकी बहुत इच्छा है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, एक दिन महात्मा भरद्वाजके आश्रमके पासको विशालनेत्री घृताची चली जाती थी उसको देखकर मुनिका वीर्य्य गिरा, मुनीश्वरने उसे अपने हाथमें लेकर दोनामें रख दिया उससे यह कन्या उत्पन्न होगई। भगवान् भरद्वाजने उसका जातकर्म्म करके ब्रह्मऋषियोंकी सभामें उसका नाम श्रुतावती रक्खा फिर उसे अपने आश्रममें छोड़कर हिमाचलके बनमें तपस्या करनेको चले गये।

वृष्णिकुलश्रेष्ठ महानुभाव बलवान उस तीर्थमें स्नान करके ब्राह्मणोंको बहुत दान देकर इन्द्रतीर्थको चले गये।

४८ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! यदुकुलश्रेष्ठ महाबलवान बलदेव वहांसे चलकर इन्द्र तीर्थपर पहुंचे और वहां ब्राह्मणोंको अनेक रत्न और धन विधिपूर्व्वक दान किये।

हे राजेन्द्र! इस ही स्थानपर इन्द्रने सौ यज्ञ करी थीं और बृहस्पतिको बहुत धन दिया था। इन्द्रने उन यज्ञोंकी सर्वांग सम्पन्न

और वेदपाठी ब्राह्मणोंको पूर्ण दक्षिणा देकर विधिपूर्व्वक पूर्ण किया था, उसी दिनसे महातेजस्वी इन्द्रका नाम शतक्रतु अर्थात् सौ यज्ञ करनेवाला हुआ उन्हींके नामसे यह सनातन और प्रसिद्ध तीर्थ भी होगया इसपर जानेसे सब प्रकारके पाप दूर होजाते हैं।

वहांपर मुशलधारी बलदेवने ब्राह्मणोंको उत्तम भोजन और वस्त्रादिक दान करके राम तीर्थकी यात्रा करी।

हे राजन्! इस ही तीर्थपर भृगुवंशी महाभागी महातपस्वी परशुरामने उत्तम क्षत्रियोंका नाश करनेके पीछे मुनियोंमें श्रेष्ठ कश्यपको पुरोहित बनाकर बाजपेय यज्ञ और सौ अश्वमेध यज्ञ करी थी वहीं उन्होंने दक्षिणामें सब पृथ्वी दान कर दी थी।

बलदेवने वहां भी ब्राह्मणोंको अनेक प्रकारके रत्न, गौ, हाथी, दास, दासी, बकरी और भेड़ आदि दान करी।

अनन्तर मुनियोंको प्रणाम करके उस देवऋषि पूजित तीर्थसे यमुना तीर्थको छोड़ गये, इसी तीर्थमें दितीके पुत्र सफेद रंगवाले वरुणने राजसूय यज्ञ करी थी जब यह राजसूय यज्ञ आरम्भ हुई तब तीनों लोकोंको भय देनेवाला देवता और दानवोंका घोर युद्ध होने लगा। वरुणने पहिले भी देवता और दानवोंको जीतकर यज्ञारम्भ करा था, यह नियम है कि राजसूय यज्ञके अन्तमें घोर युद्ध होता है।

हे महाराज! बलरामने वहां भी ब्राह्मण और ऋषियोंकी पूजा करके भिक्षुकोंको उनकी इच्छानुसार दान दिया।

बनमालाधारी कमलनेत्र बलराम ऋषियोंके मुखसे कथा सुनते हुए प्रसन्न होकर वहांसे चले और आदिति तीर्थपर पहुंचे।

हे राजोंमें श्रेष्ठ! वहीं यज्ञ करनेसे सूर्य्यको इतना तेज और नक्षत्रोंका राज्य मिला है। इसी तीर्थपर रहनेसे इन्द्रादिक सब देवता, विश्वेदेव, मरुत, गन्धर्व्व, अप्सरा, वेदव्यास, शुकदेव, मधुनाशक, कृष्ण, यक्ष, राक्षस और अनेक पिशाचादि सहस्रों योगी सिद्ध होगये हैं। यह सरस्वतीका तीर्थ बहुत ही पवित्र और कल्याण दायक है, इस ही तीर्थमें पहिले समयमें विष्णुने मधु और कैटभ नामक दानवोंको मारा था, इसी उत्तम तीर्थमें स्नान करनेसे धर्म्मात्मा वेदव्यासको योग और परम सिद्धि प्राप्त हुई थी इसी तीर्थमें महातपस्वी असित देवलने योग किया था और सिद्ध होगये थे।

४९ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! पहिले समयमें इस तीर्थमें गृहस्थ धर्म्म धारण करके महातपस्वी धर्म्मात्मा असित देवल मुनि रहते थे, वे मनसे, वचनसे और कर्म्मसे सब प्रानियोंको समान समझते थे, पवित्र होकर सदा धर्म्म करते थे, इन्द्रियोंको सदा वशमें रखते थे, दण्ड धारण करते थे कभी क्रोध नहीं करते थे, अपनी निन्दा और स्तुतीको समान ही मानते थे, शत्रु और मित्रको एकसा सोने और ढेलेको समान ही मानते थे, सदा देवता, ब्राह्मण और अतिथियोंकी पूजा किया करते थे, सदा ब्रह्मचर्य्य धारण और धर्म्म करते थे।

हे महाराज! एक दिन उनके पास जैगिषव्य नामक बुद्धिमान योगी मुनि आये और महातेजस्वी देवलके आश्रममें सावधान होकर ठहरे, सदा योग करनेवाले महातपस्वी सिद्ध देवल महामुनिने जयगिषव्यको देखकर धर्म्मके अनुसार पूजन करी।

अनन्तर महातेजस्वी जैगिषव्य ऋषी भी उनके आश्रमके पास ही रहने लगे। इस प्रकार इन दोनोंको रहते रहते बहुत समय बीत गया।

हे जनमेजय! देवलने कभी भी उनको भोजनके समय न देख एकदिन महामुनि जैगिषव्य भिक्षाके समय धर्म्म जाननेवाले, देवल ऋषीके आश्रममें आये महात्मा महातेजस्वी जैगिषव्यको अपने आश्रममें आया देख देवलने बहुत प्रसन्न होकर उनका बहुत आदर किया, और बिधिपूर्व्वक शक्तिके अनुसार उनको पूजा भी करी तब जैगिषव्य महात्मा देवलके स्थानमें रोज आने लगे। एक दिन देवलने बिचारा कि मैं कै वर्षसे इस अतिथीको पूजा करता हूं। परन्तु इसे कुछ भी आलस्य नहीं है, ऐसा बिचारते हुए धर्म्मात्मा श्रीमान् देवल मुनि घड़ा लेकर आकाश मार्गसे नदियोंके स्वामी समुद्रको चले, वहां जाकर देखा कि महातेजस्वी जैगिषव्य बेठे हैं। तब उनको बहुत आश्चर्य्य हुआ और कहने लगे कि यह भिक्षुक यहां कैसे आगया।

फिर महामुनि देवलने बिधिपूर्व्वक समुद्रमें स्नान करके नित्य कर्म्म और जप किया फिर घड़ेमें जल भरकर अपने आश्रमको चले आये।

हे जनमेजय! जब देवल अपने आश्रममें आये तब देखा तो जैगिषव्य वहीं बैठे हैं। परन्तु कुछ बोलते नहीं केवल काष्ठके समान बेठे तपस्या कर रहे हैं। और जलमें भीगे हैं, समुद्रके समान गम्भीर जैगिषव्यको देखकर देवलमुनिको बहुत चिन्ता हुई। उनको वैसे ही आसनमें बैठे छोड़ गये थे, जैगिषव्यके योग प्रभावको देखकर देवलको बहुत आश्चर्य्य हुआ, वे कहने लगे, कि मैंने इन्हें अभी समुद्रमें देखा था, अब ये यहां कैसे आगये?

ऐसा बिचारते देवल मुनि उसकी परीक्षा करनेको फिर आकाशको उड़े आकाशमें उड़नेवाले सिद्ध जैगिषव्यकी पूजा कर रहे हैं।

अनन्तर दृढ़व्रतधारी महापरिश्रमी देवलने एक ओर जाते जैगिषव्यको देखा, वहांसे पितर लोकको, वहांसे यमलोक, वहांसे चन्द्र लोक, वहांसे एकान्तमें यज्ञ करनेवाले मुनियोंके लोक, वहांसे अग्निहोत्रियोंके लोक, वहांसे दर्श और पौर्णमास यज्ञ करनेवाले महात्माओंके लोकमें वहांसे पशुओंसे यज्ञ करनेवालोंके लोकमें, वहांसे देवपूजित चातुर्मास्य यज्ञ करनेवालोंके लोकमें, वहांसे अग्निष्टोम यज्ञ, करनेवालेके लोकमें, वहांसे बहुत दक्षिणायुक्त बाजपेय यज्ञ करनेवालोंके लोकमें, वहांसे राजसूय और पुण्डरीक यज्ञ करनेवाले महाबुद्धिमानोंके लोकमें, वहांसे अश्वमेध और नरमेध यज्ञ करनेवालोंके लोकमें वहांसे अत्यन्त दुःखसे कहने योग्य सर्व्वमेध और सौत्रामणिय यज्ञ करनेवालोंके लोकमें, वहांसे द्वादशाह यज्ञ करनेवालोंके लोकमें, वहांसे मित्रावरुण लोकमें, वहांसे आदित्य लोकमें, वहांसे रुद्रलोक, बृहस्पति लोक, गोलोक, ब्रह्मयज्ञ लोक, तीन महालोक और वहांसे पतिव्रता लोकमें जाते देखा उसके पश्चात् महामुनि जैगिषव्य अन्तर्ध्यान होगये, और देवल उन्हें न देख सके। तब महाभाग देवल जैगिषव्यके प्रभाव; व्रत, सिद्धि और योगबलका बिचार करने लगे।

अनन्तर महाधोरधारी देवल बोले कि, हे सिद्धों! हम महातेजस्वी जैगिषव्यको नहीं देखते तुम लोग ब्रह्मयज्ञ करते हो इसलिये, कहो कि जैगिषव्य कहां गये? हमें सुननेकी बहुत इच्छा है।

सिद्ध बोले, हे दृढ़व्रतधारी देवल! जैगिषव्य सनातन ब्रह्म लोकको चले गये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, ब्रह्मयज्ञ करनेवाले सिद्धोंके बचन सुन देवल मुनि शीघ्रतासहित ब्रह्मलोकको चले परन्तु गिर पड़े तब वे सिद्ध फिर बोले, हे तपोधन देवल! तुम ब्रह्मलोकमें नहीं जासक्ते हो वहां जानेको शक्ति जैगिषव्यहीको है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, सिद्धोंके बचन सुन महामुनि देवल क्रमसे उन्हीं लोकोंमें उतरते

हुए अपने पवित्र आश्रममें आये और देखा कि जैगिषव्य मुनि वहीं बैठे हैं।

तब देवलने धर्म्मयुक्त बुद्धिसे विचार कर और महात्मा जैगिषव्यके योगबलको देखकर हाथ जोड़कर देवल मुनि बोले, हे भगवन्! हम आपसे मोक्ष धर्म्म सुनना चाहते हैं। देवलके बचन सुन महामुनि जैगिषव्यने शास्त्रके अनुसार उन्हें ज्ञान उपदेश किया। तब महामुनि देवलने विधिपूर्व्वक सब कर्म्मोंको छोड़कर सन्यास लेनेकी इच्छा करी।

उन्हें सन्यासी होते देख सब पितर और देवता रोकर कहने लगे, कि अब हमारी पूजा कौन करेगा?

सब ओरसे देवतोंके करुणायुक्त बचन सुन देवलने सन्यास छोड़नेकी इच्छा करी।

उन्हें सन्यास छोड़ते देख पवित्र फल, मूल और वृक्ष रोरोकर कहने लगे, कि मूर्ख क्षुद्र देवल अब फिर हमारा नाश करेगा इसने पहिले सब प्राणियोंको अभय दान किया और अब फिर मूर्खता करता है।

तब देवल मुनि फिर बिचारने लगे, कि गृहस्थधर्म्म अच्छा है वा सन्यास?

हे राजेन्द्र! तब उनको बुद्धिमें सन्यास धर्म्म अच्छा ठहरा और उसके करनेसे उन्हें परम सिद्धी और योग प्राप्त हुआ। तब बृहस्पति आदि देवता जैगिषव्यके पास आकर उनकी प्रशंसा करने लगे। तब ऋषिश्रेष्ठ नारद बोले।

जैगिषव्य कुछ तपस्वी नहीं है, इसने देवलको भ्रममें डाल दिया।

और नारदके बचन सुन देवता बोले, आप महात्मा जैगिषव्यको ऐसे बचन मत कहिये इनके तप, तेज और योगके समान किसीका प्रभाव नहीं है।

हे राजन्! हमने महात्मा जैगिषव्य और देवलका इस प्रकार प्रभाव बर्णन किया यह तीर्थ उन्ही दोनों महात्माओंका स्थान है। महात्मा उत्तम कर्म्म करनेवाले बलदेवने वहां भी ब्राह्मणोंको अनेक दान देकर धर्म्म और अर्थको प्राप्त किया फिर वहांसे सोमतीर्थको चले गये।

५० अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! इसी तीर्थपर चन्द्रमाने राजसूय यज्ञ किया था, और यहीं तारकासुरसे घोर युद्ध हुवा था। वहां भी स्नान करके और ब्राह्मणोंको दान देकर सावधान बलदेव महाऋषि सारस्वतके तीर्थको चले गये।

हे राजन्! इस ही तीर्थपर बारह बर्षके अकालमें सारस्वत मुनिने ब्राह्मणोंको वेद पढ़ाया था।

राजा जनमेजय बोले, पहिले समयमें जब बारह बर्षका अकाल पड़ा था, तब सारस्वत मुनिने ब्राह्मणोंको कैसे बेद पढ़ाया था।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज! पहिले समयमें महातपस्वी ब्रह्मचारी और बुद्धिमान दधीच नामक मुनि थे, उनके तपसे इन्द्र सदा भय करते थे, परन्तु अनेक लोभ दिखलानेपर भो दधीचि मोहित नहीं होते थे तब इन्द्रने सुन्दर रूपवती अलम्बुषा नामक अप्सराको उनका तप भङ्ग करनेके लिये भेजा।

वह अप्सरा सरस्वतीमें देवतोंका तर्पण करते महात्मा दधीचिके पास पहुंची उस सुन्दरीको देख महात्मा दधीचिका बीर्य्य सरस्वतीमें गिरा सरस्वतीने प्रसन्न होकर पुत्र होनेके लिये उस बीर्य्यको धारण किया और कुछ समयमें उनके पुत्र हुआ।

तब सरस्वती उस पुत्रको लेकर दधीचिके पास गई और उस पुत्रको देकर ऋषियोंके बीचमें ऋषिश्रेष्ठ दधीचिसे बोली, हे ब्रह्मऋषे!

जिस समय अलम्वुषा नामक अप्सराको देख कर तुम्हारा वीर्य्य गिरा था, तब तुम्हारा तेज नष्ट न हो यह बिचारकर मैंने उस वीर्य्यको धारण कर लिया था, सो अब उत्तम पुत्र हुआ है। आप लीजिए हमने केवल तुम्हारी भक्तीहीसे इसे धारण किया था।

सरस्वतीके वचन सुन दधीचि मुनि बहुत प्रसन्न हुए फिर पुत्रको लेकर उसको कण्ठसे लगाया और उसका माथा सूंघा फिर महामुनि दधीचिने सरस्वतीको यह वरदान दिया कि, हे सरस्वती! तुम्हारे जलमें तर्पण करनेसे विश्वेदेव, पितर अप्सरा और गन्धर्व्व तृप्त होंगे।

हे राजन्! ऐसा कहकर दधीचि मुनि प्रसन्न होकर महानदी सरस्वतीकी इस प्रकार स्तुति करने लगे।

हे महाभागे! तुम पहिले ब्रह्माके तलावसे निकली हो महाव्रतधारी ब्राह्मण तुम्हें जानते हैं। हे प्रियदर्शने! तुमने हमारा बहुत प्रिय काम करो इसलिये तुम्हारे इस महातपस्वी लोक पूजित पुत्रका नाम सारस्वत मुनि होगा, ये बारह वर्षके अकालमें ब्राह्मणोंको वेद पढ़ावेंगे, तुम हमारी कृपासे सब नदियोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ होजावोगी।

हे राजन्! ऋषोके ऐसे वचन सुन और बरदान पाकर सरस्वती उस पुत्रको लेकर अपने घर चली गई। उसी समय देवता और दानवोंका घोर युद्ध होने लगा तब भगवान इन्द्र राक्षसोंको मारने योग्य शस्त्र ढूढ़नेको तीनों लोकोंमें घूमे परन्तु कहीं न मिला तब देवतोंसे बोले कि, दधीचिकी हड्डीके बिना हम दानवोंको नहीं मार सक्ते इसलिये तुम दधीचिसे जाकर उनकी हड्डी मांगो।

देवतोंने जाकर उनसे कहा, हे दधीचि! तुम अपनी हड्डी हमको दो हम इनसे दानवोंका नाश करेंगे, देवतोंके वचन सुन दधीचि मुनिने बिना विचारे अपना प्राण छोड़ दिया, और देवतोंका कल्याण करनेके लिये अक्षय लोकको चले गये, तब इन्द्रने प्रसन्न होकर दधीचिकी हड्डियोंसे अनेक गदा, वज्र, चक्र, और भारी भारी दण्ड बनाये।

महाऋषी प्रजापति पुत्र भृगुने बहुत तपस्या करके महा तेजस्वी दधीचिको लोककासार लेकर बनाया था। ये पर्व्वतके समान भारी और ऊंचे थे, इन्द्र सदा इनके तेजसे डरते थे।

हे राजन्! इन्द्रने उस हो ब्राह्मणके तेजसे उत्पन्न हुए बज्रको क्रोध और मन्त्रसे छोड़कर आठ सौ दश दानवोंको मारा जब वह भयानक काल बीत गया तब बारह वर्षका घोर अकाल पड़ा।

हे महाराज! इस अकालमें बड़े बड़े ऋषी भूखसे व्याकुल होकर इधर उधर दौड़ने लगे। उनको भागते देख सारस्वत मुनिने भी भागनेकी इच्छा करी, तब उनसे सरस्वती बोली, हे पुत्र! तुम कहीं मत जाओ हम तुम्हें खानेके लिये प्रतिदिन मछली देंगी, तुम उन्हें हो खाओ और यहीं रहो। सरस्वतीके बचन सुन सारस्वत मुनिने देवता और पितरोंका तर्पण किया और मछली खाकर वेद पढ़ाने लगे। उस घोर अनावृष्टिमें एक मुनि दूसरेसे खानेको पूछने लगे भूखसे व्याकुल इधर उधर भागते मुनियोंको वेद भूल गये।

हे राजेन्द्र! तब एक मुनिने निर्ज्जन बनमें बैठे वेदपाठी महामुनि सारस्वतको देवतोंके समान देखा तब उसने जाकर सब मुनियोंसे कह दिया तब सब मुनि सारस्वतके पास आकर बोले, आप हम लोगोंको वेद पढ़ाइये, उनके बचन सुन सारस्वत बोले, तुम सब विधिपूर्व्वक हमारे शिष्य बन जाओ।

उनके बचन सुन मुनि बोले, हे पुत्र! तुम अभी बालक हो हमें शिष्य कैसे करोगे?

सारस्वत मुनि बोले, जो अधर्म्मसे कहे और जो अधर्म्मसे किसीको शिष्य करे उन

दोनोंका नाश होजाता है। हमारा धर्म्म नाश नहीं होगा प्राचीन मुनि अधिक अवस्था बूढ़े बाल, धन और बान्धवोंकी सहायतासे तप नहीं करते थे, अर्थात् ब्राह्मणोंमें अधिक अवस्था, बूढ़े बाल, धन और बन्धुओंसे कोई बूढ़ा नहीं कहाता हम लोगोंमें जो अधिक विद्वान् होता है वही बड़ा कहाता है, सारस्वत मुनिके ऐसे वचन सुन साठ सहस्र मुनि उनके शिष्य होगये और उनसे वेद पढ़कर धर्म्म करने लगे। साठ सहस्र ऋषी सारस्वतके आसनके लिये एक एक मुट्ठी कुशा लाते थे और उस बालक ऋषीके वशमें रहते थे।

महाबलवान् कृष्णके बड़े भाई रोहिणीपुत्र बलदेवने वहां भी प्रसन्न होकर बहुत दान किया फिर वहांसे वृद्ध कन्या नामक तीर्थको चले गये।

५१ अध्याय समाप्त।

जनमेजय बोले, हे ब्रह्मन्! उस स्थानमें रहकर कन्याने कैसे किसलिये और कौन कौन नियमोंसे तप किया था? हम ये सविस्तर कथा आपसे सुनना चाहते हैं अब आप हमसे यथार्थ वर्णन कीजिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! पहिले समयमें एक महातपस्वी महायशस्वी और महावीर्य्यवान कुणीगर्ग नामक मुनि हुए थे, उन्होंने घोर तप करके मनसे सुभ्रू नामक कन्या उत्पन्न करी, उसको देखकर मुनि बहुत प्रसन्न हुए और शरीर छोड़कर स्वर्गको चले गये, कल्याणी कमलनयनी सुभ्रू भी आश्रम पर रहकर उपवास, नियम और घोर तप करके देवता और पितरोंकी पूजा करने लगी।

अनन्तर घोर तप करके उस कन्याने बहुत समय बिता दिया यद्यपि उसके पिताने उसका विवाह न करना चाहा परन्तु उसने अपने समान पति न पानेके कारण विवाह न किया और अपने शरीरको घोर तपसे सुखाने लगी। हे राजन्! कुछ दिन तप करते करते वह कन्या बूढ़ी होगई तब उसने उस तपके बलसे अपनेको कृतार्थ माना जब वह एक चरण भी चलनेमें समर्थ न रही तब उसने परलोकमें जानेकी इच्छा करी।

उसको शरीर छोड़ते देख नारद मुनि बोले, कि हमने महाव्रतधारियोंसे देव लोकमें सुना है कि बिना विवाही कन्याको स्वर्ग नहीं मिलता यद्यपि तुमने बहुत तपस्या करी परन्तु किसी लोकमें जाने योग्य नहीं हुई।

नारदके वचन सुन कन्या बोली कि जो मुझसे ब्याह करे उसको मैं अपना आधा तप दे दूंगी कन्याके वचन सुन गालवके पुत्र शृङ्गवान् मुनि बोले, हे सुन्दरी! हम तुमसे विवाह करते हैं, और एक नियम कर लेते हैं कि एक ही रात्रि तुम्हारे सङ्ग रहेंगे, उस कन्याने यही स्वीकार करके विधिपूर्व्वक अग्निमें आहुति देके ब्याह कर लिया, उस रात्रिको सुभ्रू बड़ी सुन्दरी युवती होगई दिव्य वस्त्र और दिव्य गन्ध धारण करके अपने पतिके पास गई उसको घरमें चान्दना करते हुये देख शृङ्गवान् बड़े प्रसन्न हुये और रात भर उसके सङ्ग रहे।

प्रातःकाल सुभ्रू अपने पतिसे बोली, हे ब्राह्मण! हमने जो तुमसे प्रतिज्ञा करी थी, सो पूरी हुई अब हम जाती हैं तुम्हारा कल्याण हो।

हे राजन्! ऐसा कहकर वह सुभ्रू वहांसे चली गई और चलती चलती कहने लगी, जो मनुष्य एक रात्रि रहकर इस स्थानमें देवतोंको पूजा करेगा उसे ५८ अठावन वर्ष ब्रह्मचर्य्य करनेका फल मिलेगा, ऐसा कहकर पतिव्रता सुभ्रू स्वर्गको चली गई।

उसके मरनेसे शृङ्गवान् ऋषी भी उसके रूपके शोचमें व्याकुल होगये और प्रतिज्ञाके अनुसार उसका आधा तप बहुत दुःखसे ग्रहण

किया, फिर तप करके शरीर छोड़के उसीके पास चली गयी, जीवन भर उसके रूपका स्मरण करके दुःख भोगते हैं।

हे राजन्! हमने तुमसे वृद्ध कन्याकी कथा ब्रह्मचर्य्य और स्वर्ग जानेका वर्णन करी वहां भी हलधारी बलरामने ब्राह्मणोंको अनेक दान किये वहीं उन्होंने सुना कि पाण्डवोंने शल्यको मारकर जला दिया तब यहांसे चलकर समन्त पञ्चक नामक तीर्थके द्वारपर आये और ऋषियोंसे कुरुक्षेत्रका फल पूंछने लगे।

यदुकुलसिंह शत्रुनाशन बलरामका प्रश्न सुन मुनि लोग कुरुक्षेत्रका यथार्थ फल कहने लगे।

५२ अध्याय समाप्त।

ऋषी बोले, हे राम! यह सनातन समन्तपञ्चक तीर्थ ब्रह्माकी उत्तरवेदी कहा जाता है, यहीं उत्तम वर देनेवाले देवतोंने अनेक यज्ञ करीं थीं पहिले समयमें महातेजस्वी राजऋषी बुद्धिमान महात्मा कुरुने अनेक वर्षतक इसमें निवास किया था और इस पृथ्वीको जोता था इसलिये इसका नाम कुरुक्षेत्र हुआ।

बलराम बोले, हे महर्षियों! महात्मा कुरुने इस पृथ्वीको क्यों जोता था? यह कथा हम आप लोगोंसे सुनना चाहते हैं।

ऋषी बोले, हे राम! पहिले समयमें कुरुको प्रतिदिन यह पृथ्वी जोतते देख इन्द्र स्वर्गसे आये और पूंछने लगे।

इन्द्र बोले, हे राजर्षी! आप प्रतिदिन अत्यन्त यत्न करके इस पृथ्वीको क्यों जोतते हैं?

कुरु बोले, हे इन्द्र! हमारी यह इच्छा है कि जो मनुष्य यहां मरेंगे, वह स्वर्गको जावेंगे, इन्द्र उनके वचन सुन बहुत हंसे और स्वर्गको चले गये राजा कुरु भी उसी प्रकार पृथ्वी जोतते रहे।

इस प्रकार अनेक बार इन्द्र आये और पूंछकर हंस हंसकर स्वर्गको चले गये, जब इसी प्रकार तप करते करते कुरुको बहुत दिन होगये तब इन्द्रने देवतोंको बुलाकर कुरुकी यह इच्छा कह सुनाई।

इन्द्रके वचन सुन देवता बोले, यदि यही उचित होतो राजऋषि कुरुको बरदान दीजिये परन्तु कठिनता यही है कि यदि कुरुक्षेत्रमें मरे सब मनुष्य स्वर्गको चले आवेंगे तो हमें यज्ञमें भाग नहीं मिलेगा।

देवतोंके वचन सुन इन्द्र राजऋषि कुरुके पास आकर बोले, आप वृथा परिश्रम कर रहे हैं। हमारे वचन सुनिये जो पशु वा मनुष्य इस स्थानमें भोजन छोड़कर और सावधान होकर मरेगा, अथवा युद्धमें मरेगा वह स्वर्गको जायगा।

इन्द्रके वचन सुन कुरुने कहा बहुत अच्छा फिर कुरुकी आज्ञा लेकर इन्द्र प्रसन्न होकर स्वर्गको चले गये।

हे यदुकुलश्रेष्ठ! इस प्रकार पहिले समयमें राजऋषि कुरुने इस तीर्थकी स्थापन किया था, इन्द्र और ब्रह्मादिक देवतोंने इस प्रकार इसे वरदान दिया था, जगत्में इस स्थानके समान पवित्र स्थान और नहीं है जो मनुष्य यहां घोर तप करते हैं, वह मरनेके पश्चात् ब्रह्मलोकको जाते हैं, जो यहां दान देते हैं उनका वह दान शीघ्र ही सहस्र गुण होजाता है, जो कल्याण चाहनेवाले मनुष्य सदा यहां निवास करते हैं वे कदापि यमराजकी पुरी नहीं देखते, जो राजा यहां उत्तम यज्ञ करते हैं वे पृथ्वी रहने तक स्वर्गमें रहते हैं।

हे हलायुध! देवराज इन्द्रने इस तीर्थके विषयमें जो कुछ कहा है सो सुनो, कुरुक्षेत्रकी धूलिवायुसे उड़कर जिस मनुष्यके ऊपर गिरजाती है वह महापापी हो तौभी परम गतिको प्राप्त होता है।

हे पुरुषसिंह ! इस स्थानमें यज्ञ करनेसे अनेक देवता ब्राह्मण और नृग आदि राजा शरीर छोड़कर स्वर्गको चले गये ।

तरन्तुक, अरन्तुक, रामह्रद और मच-क्रुक इन तीर्थके बीचकी भूमिका नाम कुरु-क्षेत्र, समन्तपञ्चक और ब्रह्माकी उत्तर बेदी है, यह सब गुणोंसे भरा देवतोंसे सेवित और कल्याणदायक तीर्थ है, इसलिये तीर्थमें मरे राजा सब स्वर्गको जायंगे, इन्द्र और ब्रह्मादिक देवतोंने यही कहा था और ब्रह्मा, विष्णु तथा शिवने इसकी बड़ी प्रशंसा करी थी ।

५३ अध्याय समाप्त

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजा जनमे-जय ! कुरुक्षेत्रमें जाकर बलरामने बहुत दान दिये वहांसे महुवे, आम, पाकर, बड़गद, करञ्जवा, कटहल और इन्द्रजवके वृक्षोंसे पूरित पवित्र आश्रमकी ओर चले गये, वहां जाकर मुनियोंसे पूंछा कि यह पवित्र उत्तम लक्षणोंसे भरा श्रेष्ठ आश्रम किसका है ?

ऋषी बोले, हे राम ! यह जिसका आश्रम है उसकी कथा विस्तारसे सुनो यहांपर पहिले देवश्रेष्ठ विष्णुने घोर तप किया था यहीं उन्होंने अनेक सनातन यज्ञ समाप्त किये थे, यहींसे बाल ब्रह्मचारिणी ब्रम्हाणी नामक तपस्विनी याग और तप करके सिद्ध होकर स्वर्गको गई थी ।

हे राजन ! महात्मा शाण्डिल्य मुनिकी पुत्री पतिव्रता ब्रह्मचारिणीने ऐसा घोर तप किया जो स्त्रियोंसे नहीं हो सक्ता अन्तको वह महा-भाग्यवती ब्रह्माणी देवता और ब्राह्मणोंसे पूजित होकर स्वर्गको चली गई ।

हे राजन ! ऋषियोंके वचन सुन बलदेव हिमाचलपर उस आश्रमका दर्शन करनेको गये और ऋषियोंको प्रणाम किया ।

अनन्तर वहीं सन्ध्यावन्दन करके ताड़की ध्वजावाले बलराम थोड़ी दूरतक पर्व्वतके ऊपर चढ़े, वहां उस आश्रमको देखकर बहुत आश्चर्य करने लगे । वहां सरस्वतीके प्रभा-वसे एक पाकरके वृक्षमेंसे जल निकलते देखा, वहांसे उत्तम तीर्थ करके बनको चले गये, वहां अनेक प्रकार दान किये, और पवित्र निर्म्मल ठण्डे जलमें स्नान करके देवता और पितरोंका तर्पण किया ।

महाबलवान महायोद्धा बलरामने वहां ब्राह्मणों और सन्यासियोंके सहित एक रात्रि-रहकर मित्रवरुणाश्रमको यात्रा करी ।

हे राजन ! इस ही तीर्थमें पहिले इन्द्र, अग्नि, और अर्थमा प्रसन्न हुये थे, वहांसे यमु-नाकी ओर चले गये । महाबलवान बलदेव जीने वहां जाकर ऋषी और सिद्धोंके सहित स्नान किया, और बहुत प्रसन्न हुए, और वहां बैठकर ऋषियोंसे उत्तम उत्तम कथा सुनने लगे, उसी समय सोनेके समान वस्त्र पहिने सोनेका डण्डा हाथमें लिये कमण्डलु धारण किये मोठे शब्दवाली मनोहर बीन बजाते, नाचते और गानेमें निपुण देवता और ब्राह्मणोंसे पूजित सदा लड़ाई करानेवाले लड़ाईके प्यारे भगवान नारदऋषी आये, उनको देखकर श्रीमान बल देव खड़े होगये और नियमके अनुसार पूजा करके महाव्रतधारी ब्रह्मऋषी नारदसे कौर वोंका समाचार पूछने लगे ।

बलराम बोले, हे तपोधन ! यद्यपि मैंने यह सब समाचार सुना है, तो भी विस्तारसे सुनना चाहता हूं ? मैं आपसे दोन बातोंसे पूंछता हूं ? कि कुरुक्षेत्रमें जो क्षत्रिय और राजा इकट्ठे हुए थे उनकी क्या दशा है ?

हे राजन ! रोहिणीपुत्रके वचन सुन सब धर्म्म जाननेवाले नारदने कुरुकुल नाशक इस प्रकार वर्णन करना आरम्भ किया ।

नारद बोले, हे रोहिणीपुत्र ! भीष्म, द्रोणा-

चार्य्य, जयद्रथ, महारथ पुत्रोंके सहित कर्ण, भूरिश्रवा, और महापराक्रमी मद्रराज शल्य, आदि अनेक राजा और राजपुत्र अपने प्यारे प्राणोंको छोड़कर स्वर्गको चले गये, उन सब युद्धसे न हटनेवाले वीरोंने दुर्य्योधनकी विजयके लिये प्राणदिये। अब दुर्य्योधनकी ओरके वीरों मेंसे केवल शत्रुनाशन कृपाचार्य्य, कृतवर्म्मा, और वीर अश्वत्थामा यही तीन जीते बचे हैं, ये भी पाण्डवोंके डरसे इधर उधर भागे फिरते हैं।

शल्यके मरने और कृपाचार्य्य आदि वीरोंके भागनेपर राजा दुर्य्योधन दुःखसे व्याकुल होकर द्वैपायन नामक तालावमें घुस गये, उस स्तम्भन किये हुए जलमें दुर्य्योधनको सोते सुन श्रीकृष्णके सहित पाण्डव आये, चारों ओरसे वचनरूपी कोड़े मारने लगे।

तब महावीर दुर्य्योधन भी भारी गदा लेकर पानीसे निकले और अब भीमसे घोर युद्ध करेंगे, यदि शिष्योंका घोर युद्ध देखनेकी आपको इच्छा हो तो शीघ्र जाइये क्योंकि यह भयानक युद्ध अभी होने वाला है।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, नारदके ऐसे बचन सुन बलदेवने ब्राह्मणोंको पूजा करके बिदा किया, और अपने सङ्गियोंसे कहा कि तुम सब द्वारिकाको जावो।

अनन्तर बार बार सरस्वतीको देखते हुए अच्चयप्रस्रवणसे चलकर पर्व्वतसे उतरे और प्रसन्न होकर ब्राह्मणोंके आगे नीचे लिखे पद्य कहने लगे।

दोहा।

सरस्वती तट वास सम, और कहां जग वास।
सरस्वती तट गुण सदृश, और कहां गुण रास॥
सरस्वतीं सो रति कहां, जहां नाय नर वृन्द।
गये स्वर्ग सब भाजि हैं, सदाहि सकल अनन्द॥
सरस्वती सब नदिनमें, श्रेष्ठ कहो सब लोग।
दुहुं लोकके शोक जहां, छूटत दुष्कृत भोग॥

अनन्तर यदुकुलश्रेष्ठ शत्रुनाशन बलराम शीघ्र चलनेवाले, सफेद घोड़ोंके रथपर चढ़कर शिष्योंका युद्ध देखनेको चले।

५४ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! इस प्रकार यह घोर युद्ध होना आरम्भ हुवा तब राजा धृतराष्ट्रने दुःखमें भरकर सञ्जयसे पूछा।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जब बलराम युद्धमें पहुंच गये, तब हमारे पुत्र दुर्य्योधनने भीमसेनके सङ्ग कैसे युद्ध किया? सञ्जय बोले, हे महाराज! बलदेवको अपने पास आया देख तुम्हारे पुत्र महाबलवान महाबाहु दुर्य्योधन बहुत प्रसन्न हुए।

महाराज युधिष्ठिर भी हलधारी बलरामको देख प्रसन्नता सहित खड़े हुये, और विधिपूर्व्वक उनकी पूजा करके आसन दिया तथा, कुशल पूछी।

अनन्तर बलराम मीठे धर्म्मयुक्त और सब वीरोंके कल्याणसे भरे, बचन बोले, हे राजोंमें श्रेष्ठ! हमने ऋषियोंसे सुना है कि कुरुक्षेत्र स्वर्ग देनेवाला और परम पवित्र तीर्थ है, वहां देवता ऋषि और महात्मा ब्राह्मण रहते हैं। वह ब्रह्माकी उत्तर वेदी है, वहां जो युद्धमें मरता है वह सदा इन्द्रके सहित स्वर्गमें निवास करता है।

हे राजन्! इसलिये हम सब लोग भी समन्त पञ्चक तीर्थमें चलें वहां जो युद्धमें मरेगा वही स्वर्गको जायगा।

हे राजन! जगत्के हितैच्छु, महावीर राजा युधिष्ठिर उनके बचन सुनकर समन्तपञ्चककी ओर चले उनके सङ्ग ही राजा दुर्य्योधन भी भारी गदा लेकर मतवाले हाथीके समान झूमते झूमते चले, कुरुराजको उनके सङ्ग

कवच और गदा धारण किये पैरोंपैरो सावधान चलते देख अन्तरिक्ष और वायु मण्डलमें घूमनेवाले देवता और सिद्ध साधु साधु और धन्य धन्य कहने लगे ।

तब सेनामें शङ्ख और भेर आदि बाजे बजने लगे। सब वीर सिंहोंके समान गर्ज्जने लगे। यह शब्द सब दिशाओंमें पूरित होगया तब ये सब वीर क्रमसे चलते चलते कुरुक्षेत्रमें पहुंचे।

अनन्तर उस बहुत देनेवाले तीर्थमें दुर्य्योधनको सम्मतिसे सरस्वतीके दक्षिण तटपर पूर्व्वको मुंह करके दुर्य्योधन और भीमसेन खड़े हुए। उस समयानुसार अर्थात् ऊसरर हित पृथ्वीमें युद्ध करनेको खड़े हुए तब भीमसेन कवच पहिनकर भारी गदा लेकर गरुड़के समान शीघ्रतासे युद्धभूमिमें आये। इधरसे दुर्य्योधन भी टोप और सोनेका कवच पहनकर सोनेके पर्व्वतके समान अचल होकर युद्धभूमिमें खड़े हुये, ये दोनों पुरुषसिंह भाई दुर्य्योधन और भीमसेन कवच पहनकर दो मतवाले, हाथियोंके समान उपस्थित हुए।

हे महाराज ! उस समय ये दोनों वीर ऐसे दीखते थे, जैसे एक समय उदय हुए चन्द्रमा और सूर्य्य एक दूसरेको मारनेकी इच्छासे इस प्रकार देखने लगे, मानों भस्मकर देंगे ।

अनन्तर क्रोधसे लाल नेत्र करके दांत चबाकर सांस लेते हुए बलवान दुर्य्योधनने गदा उठाई और भीमसेनको ओर देखकर ऐसे ललकारा जैसे हाथी हाथीको ललकारता है।

अनन्तर बलवान भीमसेनने भी पहाड़के समान भारी गदा उठाकर राजा दुर्य्योधनको इस प्रकार पुकारा जैसे बनमें सिंह सिंहको पुकारता है। ये दोनों गरुड़के समान वीर यम और इन्द्रके समान युद्धमें खड़े हुए; ये दोनों श्रीकृष्ण, बलदेव, कुवेर, मधु, कैटभ, शुन्द, उपशुन्द, राम, रावण, बालि, सुग्रीव, काल और मृत्युके समान खड़े होकर मतवाले हाथीके समान युद्ध करनेको लगे। दोनों क्रोधी सांपके समान क्रोध रूपी विष छोड़ने लगे। दोनों वीर एक दूसरेको तरफको देखने लगे। दोनों शार्दूलके समान पराक्रमी, युद्ध विद्याके जाननेवाले, भरत कुलसिंह वीरसिंहके समान युद्ध करने लगे। दोनों नखून और दांत रूपी शस्त्रयुक्त सिंहके समान वीर, दोनों प्रलयकालमें बढ़े हुए, दो समुद्रोंके समान दुस्तर, दोनों महाबलवान, महारथ, पृथ्वीके लिये इस प्रकार युद्ध करने लगे, जैसे शरत ऋतुमें एक हथिनीके लिये दो मतवाले हाथी लड़ते हैं। दोनों गर्ज्जते और बर्षते हुए, बर्षाऋतुके पूर्व्व और पश्चिमके मेघके समान दोनों शत्रुनाशन दो मङ्गल ग्रहोंके समान, दोनों महात्मा, महातेजस्वी, महादीप्तमान कुरुकुलश्रेष्ठ प्रलयकालमें उदय होते हुए, सूर्य्योंके समान दीखने लगे। दोनों महाबाहु वीरसिंह और केशरीके समान युद्ध करने लगे। दोनों गदाधारी वीर शिखरधारी पर्व्वतके समान दीखने लगे। और दोनोंके ओठ क्रोधसे फरकने लगे। दोनों एक दूसरेको ओर देखने लगे, दोनों पुरुष उत्तम महात्मा वीर गदा लेकर युद्धमें खड़े हुए और दोनों अत्यन्त प्रसन्न होकर उत्तम घोड़ोंके समान कूदने लगे। मतवाले हाथी, और बैलोंके समान गर्ज्जने लगे। उस समय इन दोनोंकी शोभा दो दानवोंके समान दीखती थी ।

तब अर्ज्जुन, नकुल, सहदेव, महात्मा कृष्ण, महापराक्रमी बलदेव, केकयवंशी क्षत्रिय सृञ्जयवंशी क्षत्रिय और महात्मा पाञ्चालदेशीय वीरोंके बीचमें बैठे अभिमानसे भरे महाराज युधिष्ठिरसे दुर्य्योधन वीरोंके समान बचन बोले, आज आप सब राजोंके सहित बैठकर हमारा और भीमसेनका गदा युद्ध देखिये ।

महाराजने दुर्य्योधनके बचन सुन वैसाही किया, अर्थात् बैठकर देखने लगे। उस समय वह युधिष्ठिरकी राज सभा ऐसी सुन्दर दीखती

थो जैसे आकाशमें सूर्य्यका मण्डल। उस सभाके बीचमें बैठे हुए नील वस्त्रधारी गोरे वर्णवाले, श्रीमान् बलराम ऐसे दीखते थे, जैसे तारोंके बोचमें रात्रिको चन्द्रमा।

हे महाराज! उस समय ये दोनों यशुनाशन महापराक्रमी वीर एक दूसरेको कठोर वचन कहने लगे। एक दूसरेको इस प्रकार देखने लगे। जैसे वृत्रासुर और इन्द्र परस्पर देखते थे।

५५ अध्याय समाप्त।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन्! पहिले भीमसेन और दुर्य्योधनका घोर वचन युद्ध हुआ तब राजा धृतराष्ट्र दुःखित होकर सञ्जयसे बोले।

हे पापरहित सञ्जय! मनुष्यके बलको धिक्कार है, जिसका फल ऐसा घोर होता है। देखो जो मेरा पुत्र किसी समय ग्यारह अक्षौहिणियोंका स्वामी था, जिसकी आज्ञामें सब राजा चलते थे, जो इस पृथ्वीका राज्य करता था वही आज गदा लेकर एकला पैरों युद्ध करनेको चला। जो इस जगत्का स्वामी कहलाता था, सो ही आज गदा लेकर एकला पैरों युद्ध करनेको चला जाता है। यह देखकर हम प्रारब्धका बलवान् न कहैं तो किसको कहैं?

हाय! हमारा पुत्र घोर आपत्तिमें पड़े हैं, ऐसा कहकर महाराज धृतराष्ट्र चुप होगये।

सञ्जय बोले, हे महाराज! अनन्तर महावीर्य्यवान् दुर्य्योधनने प्रसन्नतासे मेघ और मतवाले बैलके समान गर्जकर युद्ध करनेके लिये भीमसेनको ललकारा।

हे महाराज! जिस समय महात्मा दुर्य्योधनने भीमसेनको पुकारा उस समय घोर अशकुन होने लगे। घोर वायु चलने लगा, आकाशसे धूलि बर्षने लगी, दशोंदिशामें अन्धकार होगया, अनेक बिजली घोर शब्द करती हुई पृथ्वीमें गिरी, बिना समय राहु सूर्य्यका ग्रास करने लगा, बन और वृक्षोंके सहित पृथ्वी कांपने लगी, पर्व्वतोंके शिखर टूट टूटकर पृथ्वीमें गिर गये अनेक प्रकारके जन्तु चारों ओर घूमने लगे। रोती हुई शियारी मुखसे आग निकालती हुई चारों ओर घूमने लगीं, दीप्त दिशामें हरिन अपशकुनका चिन्ह देने लगे। अनेक प्रकारके शरीर रहित भूतोंके शब्द सुनाई देने लगे जल बढ़ने लगा।

इत्यादि और भी अनेक अपशकुन देखकर भीमसेन अपने बड़े भाई धर्म्मराज युधिष्ठिरसे बोले।

हे पाण्डव! हे राजेन्द्र! हे महाराज! मूर्ख दुर्य्योधन मुझे युद्धमें नहीं जीत सक्ता। आज मैं बहुत दिनसे हृदयमें भरा क्रोध निकालूंगा, आज दुष्ट दुर्य्योधनको मारकर आपके हृदयका शल्य निकालूंगा, आज इस कुरुकुलाधमको गदासे मारकर आपके गलेमें विजय कीर्त्तिको माला पहिनाऊंगा, आज इस गदासे युद्धमें इस पापीके शरीरके सौ सौ टुकड़े करूंगा, अब यह फिर हस्तिनापुरमें नहीं जायगा।

हे भरतकुलसिंह! हे पापरहित! शय्यापर सांप छोड़ने, भोजनमें विष देने, यमुनामें डुबने, लाक्षागृहमें जलाने, सभामें हंसने, कपटसे सर्व्वस्व छीनने, एक वर्ष छिपकर रहने, और बारह वर्ष बनमें रहने आदि सब दुःखोंके आज पार जाऊंगा, इसने हमें इतने दिनोंतक दुःख दिया है सो मैं आज एक दिनमें मारकर उसका बदला लेलूंगा, पापी दुर्बुद्धी दुर्य्योधनको अवस्था समाप्त होगई, अब इस पापीको माता पिता और स्त्रियोंका दर्शन नहीं होगा। अब इसका सुख समाप्त होगया यह कुरुकुलश्रेष्ठ सन्तानका कुलकलङ्क दुर्य्योधन राज्यलक्ष्मी और प्राण छोड़कर पृथ्वीमें सोवेगा। आज अपने पुत्रको मरा हुवा सुन राजा धृतराष्ट्र भी शकुनीके वचनोंका स्मरण करेंगे।

हे राज शार्दूल ऐसा कहकर भीमसेनने गदा उठाई और जैसे इन्द्रने वृत्रासुरको पुकारा था ऐसे दुर्य्योधनको ललकारा ।

अनन्तर गदाधारी दुर्य्योधनको शिखरधारी कैलाशके समान देख क्रोध करके भीमसेन बोले, अरे दुर्बुद्धे ! मैंने आज तुझे प्रारब्धहोसे युद्धमें देखा है, तू अपने और धृतराष्ट्रके पापोंका स्मरणकर जो हमारे सङ्ग बारणावत नगरमें करे थे तुझको स्मरण है, कि सभामें रजस्वला द्रौपदीको कैसे दुःख दिये थे ? सभामें तैंने और शकुनीने राजाको छला था, हमने बनमें कैसे कैसे दुःख उठाये हैं विराटनगरमें हमको ऐसा जान पड़ता था कि मानो जन्महो दूसरा है, आज वह सब क्रोध तुझे मारकर शान्त करूंगा । तेरेही लिये महारथ गङ्गापुत्र भीष्म शिखण्डीके हाथसे मरकर शरशय्यापर सोते हैं । तेरे हो लिये द्रोणाचार्य्य, कर्ण, प्रतापी शल्य, बैररूपी अग्निको जलानेवाला शकुनी, द्रौपदीको क्लेश देनेवाला पापी प्रातिकामी और विचित्र युद्ध करनेवाले शूरवीर तथा और भी अनेक राजा मारे गये अब तुझे भी गदासे निःसन्देह मारूंगा ।

हे राजेन्द्र! ऊंचे स्वरसे ऐसे बचन भीमसेनके सुन सत्यपराक्रमी दुर्य्योधन बेडर होकर बोले, रे क्षुद्र ! रे कुलाधम ! तुझ ऐसे साधारण मनुष्योंके बचनोंसे और मनुष्योंके समान दुर्य्योधन नहीं डरेगा, क्यों वृथा बक बक करता है युद्ध कर आज मैं तेरी युद्धकी इच्छा मिटा दूंगा बहुत दिनसे मेरी इच्छा थी कि तेरा और मेरा गदायुद्ध हो सो आज प्रारब्धसे वही समय आगया यह बात देवतोंने भी ऐसे ही रची थी । रे दुर्बुद्धे ! बहुत कहनेसे क्या होता है जो तैंने बचन कहा है, उसे कर्म्म करके सत्य कर ।

दुर्य्योधनके बचन सुन सोमकवंशी क्षत्रिय आदि सब राजा उनकी प्रशंसा करने लगे और उन्हें क्रोध बढ़ानेके लिये ताली बजाने लगे । अपनी प्रशंसा सुन कुरुराजके रोंये खड़े होगये और युद्ध करनेका निश्चय करने लगे ।

अनन्तर महात्मा भीमसेन गदा लेकर वेगसे महात्मा दुर्य्योधनकी ओर दौड़े उस समय बिजयी पाण्डवोंके हाथी चिल्लाने लगे । घोड़े हींसने लगे और शस्त्र चमकने लगे ।

५६ अध्याय समाप्त ।

सञ्जय बोले, भीमसेनको अपनी ओर आते देख प्रसन्न दुर्य्योधन भी गर्ज्जते हुये वेगसे उनकी ओर दौड़े । ये दोनों महात्मा इस प्रकार लड़ने लगे । जैसे दो सींगवाले बैल लड़ते हैं, गदाओंमें गदा लगनेसे घोर शब्द होने लगा इन दोनों बिजय चाहनेवाले बीरोंका ऐसा घोर युद्ध हुआ जैसा इन्द्र और प्रह्लादका हुआ था । इस युद्धको देखकर बीरोंके रोंये खड़े होने लगे ।

अनन्तर दोनों गदाधारी बीर रुधिरमें भीगकर फूले हुए टेसूके समान दीखने लगे । दोनोंकी गदाओंसे आगके पतङ्गे निकलने लगे और उनसे आकाश ऐसा शोभित होगया जैसा जुगुनुवोंसे । दोनों शत्रुनाशन बीर थोड़े समयतक ऐसा घोर युद्ध करके थक गये फिर मुहूर्त्त मात्र सांस लेकर दोनोंने गदा उठाई और एक दूसरेको मारने लगे । दोनों महापराक्रमी पुरुषसिंह बीर थोड़े समयतक सांस लेकर फिर इस प्रकार युद्ध करने लगे । जैसे एक हथिनीके लिये दो मतवाले हाथी लड़ते हैं । उन दोनोंको गदा धारण किये और समान बलवान देखकर देवता गन्धर्व्व और मनुष्य आश्चर्य्यमें आगये और बिजयमें बहुत सन्देह होने लगा ।

अनन्तर ये दोनों बलवान् भाई एक दूसरेको मारनेके लिये अन्तर देखने लगे और

अनेक प्रकारकी गतिसे चलने लगे। उस समय भीमसेनकी भयानक गदा देखनेवालोंको यमराजके दण्ड और इन्द्रके वज्रके समान दीखती थी जिस समय भीमसेन गदा चलाते थे तब मुहूर्त्त भर उसीका घोर शब्द सुनाई देता था इसी प्रकार महावेगवाली दुर्य्योधनकी गदा भी चलती थी और सब लोग देखकर आश्चर्य्य करते थे।

हे भारत! अनेक प्रकारके मार्गसे चलते हुये भीमसेनकी शोभा बहुत बढ़ी ये दोनों वीर अपनी अपनी रक्षा करते हुए बार बार इस प्रकार युद्ध करने लगे। जैसे मांसके लिये दो बिलाव लड़ते हैं तब भीमसेन अनेक प्रकारके मार्गोंसे अनेक प्रकारके मण्डल करने लगे। कभी गत (शत्रुके सम्मुख जाना) कभी प्रत्यागत (शत्रुके आगेसे बिनामुख फेरे पीछेको लौटना) कभी विचित्र अस्त्र यन्त्र (किसी मर्म्मको देखकर अस्त्र मारना अथवा शत्रुके शस्त्रसे अपने शस्त्रको बचाना) कभी अनेक प्रकारके स्थान (शस्त्र मारने योग्य मर्म्मस्थानोंको देखना) परिमोक्ष (शस्त्रको वृथा कर देना) प्रहार वञ्चन (शत्रुके शस्त्रसे बचना) परिधावन (शीघ्रतासे दहिने बायें जाना) अभिद्रवण (शीघ्रतासे आगे आना) आक्षेप (शत्रुके हाथसे चले हुये शस्त्रको अथवा उसके यत्नको वृथा करनेका उपाय करना) अवस्थान (सावधान और स्थिर होकर आगे खड़ा रहना) विग्रह (खड़े हुए शत्रुसे युद्ध करना) परिवर्त्तन (सब ओरसे घूमकर शत्रुको मारना) सम्वर्त्तन (शत्रुके शस्त्रको रोकना) अवप्लुत (शत्रुके शस्त्रसे नीचा होकर बचना) उपप्लुत (उछलकर बचना) उपन्यस्त (पास आकर शस्त्र मारना) और अपन्यस्त (घूमकर पीठकी ओर हाथ करके शत्रुको मारना, आदि अनेक प्रकारकी गती दिखलाने लगे। दोनों कुरुकुलश्रेष्ठ बीर, दोनों गदा विद्या जाननेवाले, दोनों महापराक्रमी, अनेक प्रकारके मण्डल करते हुए युद्धमें चारों ओर खेलने लगे और एक दूसरेको गदासे इस प्रकार मारने लगे। जैसे एक मतवाला हाथी दूसरेको दांतसे मारता है। तब दोनों रुधिरमें भीग गये।

हे शत्रुनाशन! यह भयानक गदा युद्ध इन दोनोंका ऐसा हुवा जैसा इन्द्र और वृत्रासुरका हुवा था।

हे महाराज! इस प्रकार इस घोर गदा-युद्धमें तुम्हारे पुत्र दहिने और भीमसेन बायीं ओर घूमने लगे।

हे महाराज! बाईं ओर घूमते हुए भीमसेनकी पसुरीमें तुम्हारे पुत्रने एक गदा मारी परन्तु भीमसेनने उसका कुछ भी विचार न किया और यमराजके दण्डके समान भयानक तथा इन्द्रके वज्रके समान घोर गदाको घुमाने लगे। उस समय घूमती हुई भीमसेनकी गदा मण्डलके समान दीखने लगी।

अनन्तर शत्रुनाशन दुर्य्योधन भी अपनी घोर गदाको उठाकर घुमाने लगे चारों ओर उसका वायु छा गया उस समय महातेजस्वी दुर्य्योधन गदाको घुमाते हुए अनेक मार्गोंसे चलने लगे। तब उनका तेज भीमसेनसे बहुत अधिक होगया तब भीमसेन भी अधिक बलसे अपनी गदा घुमाने लगे। और उससे घोर शब्द आगकी, चिनगारी तथा धुआं निकलने लगा। भीमसेनकी गदाका वेग देखकर दुर्य्योधन भी पर्व्वतके समान भारी गदाको बलसे घुमाने लगे! महात्मा दुर्य्योधनकी गदाके वायुका वेग देखकर सब पाण्डव और सोमकवंशी क्षत्रिय डरने लगे।

अनन्तर ये दोनों शत्रुनाशन बीर एक दूसरेको गदासे इस प्रकार मारने लगे जैसे दांतसे एक हाथी दूसरे हाथीको मारता है दोनों युद्धमें घूमने लगे।

अनन्तर ये दोनों रुधिरमें भीग गये यह युद्ध उस दिन ऐसा घोर हुवा जैसे इन्द्र और वृत्रासुरका हुआ था।

हे महाराज! बलवान् दुर्य्योधन भीमसेनको अपने आगे खड़ा देख विचित्र मार्गसे चलकर उनकी ओर दौड़े तब क्रोध भरे भीमसेनने दुर्य्योधनको सोनेसे जड़ी गदामें एक गदा मारो उसके लगते हो दोनों गदाओंमेंसे आगके पतङ्गे निकलने लगे। और दो बज्र लड़नेके समान घोर शब्द उठा, जब भीमसेनने अपनो गदा दुर्य्योधनको गदामें मारो तब पृथ्वो कांपने लगो।

हे राजेन्द्र! उस गदा प्रहारको दुर्य्योधन क्षमा न कर सके और भीमसेनको खड़ा देख ऐसा क्रोध हुवा जैसे हाथीको देखकर दूसरे हाथोको क्रोध होता है।

अनन्तर शीघ्रतासे बाईं ओर आकर भीमसेनके शिरपर एक गदा मारी परन्तु भीमसेन उससे कुछ भी कम्पित न हुये, इस आश्चर्यको देखकर सब सेनाके वीर आश्चर्य्य और भीमसेनकी प्रशंसा करने लगे।

अनन्तर भीमसेन भी सोनेसे मढ़ो प्रकाशसे भरी एक गदा दुर्य्योधनके फेंकके मारी परन्तु दुर्य्योधनने उस गदाको बचा दिया, महा बलवान दुर्य्योधनको इस विद्याको देखकर सब सेनाके लोग आश्चर्य्य करने लगे। वह भीमसेनके हाथसे छूटो हुई महावज्रके समान शब्दवाली गदा जब पृथ्वीमें गिरो तब सब पृथ्वी हिलने लगी। भीमसेन उस समय पागलके समान इधर उधर घूमने लगे।

उनको पागलके समान इधर उधर घूमते और गदाको पृथ्वीमें पड़ो देख दुर्य्योधनने एक गदा उनको पसुलीमें मारी उस गदाके लगनेसे भीमसेनको अपने करने और न करने योग्य कामोंका कुछ भी ध्यान न रहा।

भीमसेनको यह दशा देख पाञ्चाल और पाण्डवोंके सब सङ्कल्प नष्ट होगये और सब अत्यन्त मलीन होगये परन्तु भीमसेनको अत्यन्त क्रोध हुआ, जैसे अङ्कुश लगनेसे हाथीको।

अनन्तर गदा उठाकर तुम्हारे पुत्रकी ओर ऐसे दौड़े, जैसे हाथी हाथीकी ओर अथवा सिंह हाथीकी ओर दौड़ता है।

अनन्तर गदायुद्धमें निपुण भीमसेनने दौड़कर एक गदा मारी उसके लगनेसे दुर्य्योधनने व्याकुल होकर अपने घुटने पृथ्वीमें टेक दिये।

हे राजन्! कुरुकुलश्रेष्ठ दुर्य्योधनकी यह दशा देख सृञ्जयवंशी वीर गर्जने लगे। परन्तु भरतकुलश्रेष्ठ दुर्य्योधन उस गर्जनेको क्षमा न कर सके और क्रोधमें भरकर सांस लेते हुये, हाथीके समान खड़े हुए और भीमसेनकी ओर इस प्रकार देखने लगे, मानो इन्हें भस्म कर देंगे।

अनन्तर महापराक्रमी महात्मा दुर्य्योधन गदा लेकर महात्मा भीमसेनकी ओर इस प्रकारसे दौड़े मानो अभी इनका शिर तोड़ डालेंगे फिर एक गदा भीमसेनकी कनपटीमें मारी परन्तु भीमसेन उसके लगनेसे पर्व्वतके समान खड़े ही रहे और रुधिरके बहनेसे उनकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे मद बहते हुए हाथीकी अनन्तर शत्रुनाशन भीमसेनने शत्रुओंका नाश करनेवाली लोहेकी बनी बज्र और बिजलीके समान घोर शब्दवाली गदा दुर्य्योधनके शरीरमें मारी।

हे महाराज! उसके लगनेसे दुर्य्योधनके शरीरको सन्धि ढीली होगई और इस प्रकार चक्कर खाकर पृथ्वीमें गिर पड़े जैसे आंधी लगनेसे फला हुआ सालका वृक्ष टूटकर गिरता है।

हे महाराज! दुर्य्योधनको पृथ्वीमें पड़ा देख पाण्डव बहुत प्रसन्न हुए फिर दुर्य्योधन चैतन्य होकर इस प्रकार उठे जैसे मतवाला हाथी तालावसे निकलता है।

महारथ शिक्षित दुर्य्योधनने उठकर आगे खड़े हुये, भीमसेनके शरीरमें एक गदा मारी

उसके लगते ही भीमसेन मूर्च्छित होकर पृथ्वीमें गिर पड़े, तब दुर्य्योधन सिंहके समान गर्ज्जने लगे, और फिर एक गदासे बज्रके समान दृढ़ भीमसेनका कवच तोड़ दिया उस समय आकाशमें खड़े देवता और अप्सरा फूल बर्षाने लगे। और प्रशंसा करने लगे।

पुरुषश्रेष्ठ भीमसेनको कवच रहित पृथ्वीमें पड़ा देख सोमक, सृञ्जय और पाण्डवोंको बहुत भय हुआ।

अनन्तर एक मुहूर्त्तमें भीमसेनने चैतन्य होकर रुधिरमें भीगा मुंह पोंछा; आंख खोलीं और सावधान होकर बलसे खड़े हुए।

५७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! जब इन दोनों कुरुकुलश्रेष्ठ बीरोंका इस प्रकार घोर युद्ध होने लगा तब अर्ज्जुनने यशस्वी कृष्णसे पूछा।

हे जनार्द्दन! ये दोनों बीर युद्ध कर रहे हैं, आपकी सम्मतिसे इन दोनोंमेंसे कौन अधिक श्रेष्ठ है? और किसमें कौन गुण अधिक है? सो आप हमसे कहिये।

श्रीकृष्ण बोले, हे अर्ज्जुन! इन दोनोंको बिद्या समानही है, परन्तु भीमसेनमें बल अधिक है। तैसे ही दुर्य्योधन भीमसेनसे चतुर और सावधान अधिक है. इसलिये भीमसेन धर्म्मयुद्धसे इसको न मार सकेंगे, परन्तु यदि अन्यायसे युद्ध करें तो अवश्य ही जीतेंगे, हमने सुना है कि देवतोंने छलसे अनेक दानवोंको जीता है, इन्द्रने बिरोचनको छलसे मारा था, वृत्रासुरका तेज छलसे नष्ट किया था, इसलिये भीमसेन भी छलसे युद्ध करें।

हे अर्ज्जुन! भीमसेनने जूवेके समय भी प्रतिज्ञा करी थी, कि मैं गदासे तेरी जङ्घा तोड़ंगा सो अब शत्रुनाशन भीम छली दुर्य्योधनके सङ्ग छल करके अपनी प्रतिज्ञाको पालन करें यदि भीमसेन केवल अपने बलके भरोसे न्यायसे युद्ध करते रहेंगे, तो राजा युधिष्ठिरको घोर आपत्तिमें पड़ना पड़ेगा।

हे पाण्डव! अब हम तुमसे और वर्णन करते हैं, सो सुनो धर्म्मराज युधिष्ठिरके अपराधसे अब हम लोगोंको फिर भी घोर भयमें पड़ना हुआ, भीष्मादिक बीरोंको मारकर घोर कर्म्म करके जय और उत्तम यश प्राप्त किया, तथा बैर शान्त किया, परन्तु अब वही प्राप्त हुई बिजय फिर सन्देहमें पड़ गई। धर्म्मराज युधिष्ठिरने यह बड़ी भूल करी जो दुर्य्योधनसे यह कह दिया कि, तुम हममेंसे एकको मारकर राजा होजाओगे, दुर्य्योधन चतुर, बीर और एकायन गत अर्थात् मरने या बिजय होनेको निश्चय कर चुका है।

हे अर्ज्जुन! शुक्रने अपनी नीतिमें जो कुछ लिखा है, सो तुम सुनो जो शत्रु भागकर फिर युद्ध करनेको लौटै और जो बचनेकी इच्छा न करे और जो मरते मरते शत्रुके कुलसे शेष रह जाय उससे सदा डरता रहे, क्योंकि इसे अपने हारने और मरनेका कुछ भय नहीं होता।

हे अर्ज्जुन! केवल साहससे युद्ध करते हुए और जीनेकी आशा छोड़कर लड़ते हुये शत्रुके आगे इन्द्र भी नहीं लड़ सक्ता।

यह दुर्य्योधन युद्ध छोड़कर भागा है, तालाबमें छिपा था, युद्धमें हार कर बनमें जानेकी इच्छा करता था, इसकी सब सेना मारी गई थी ऐसा कौन बुद्धिमान होगा जो ऐसे शत्रुको द्वन्द्व युद्ध करनेको बुलावे? अब हमको यह सन्देह होगया है, कि ऐसा न हो कि दुर्य्योधन हमारा जीता हुवा राज्य छीन ले क्योंकि इसने तेरह बर्षतक भीमसेनको मारनेके लिये नीचे ऊपर घूमकर गदा युद्धका अभ्यास किया है, यदि महाबाहु भीमसेन अन्यायसे नहीं युद्ध करेंगे, तो अवश्य ही दुर्य्योधन राजा होजायगा अर्थात् भीमसेन मारे जांयगे।

महात्मा श्रीकृष्णके ऐसे वचन सुन अर्ज्जुनने भीमसेनको दिखलाकर अपनी बांई जांघमें हाथ मारा उस चिन्हको देखकर भीमसेन भी चैतन्य होगए, और गदा लेकर युद्धमें अनेक प्रकारके विचित्र यमक, अयमक, दक्षिण, वाम और गोमूत्र आदि अनेक मण्डलोंसे घूमते हुये, दुर्य्योधनको मोहित करने लगे। उसी प्रकार तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन भी भीमसेनके लिये अनेक प्रकारकी गतियोंसे घूमने लगे। ये दोनों वीर यमराजके समान क्रोध करके बैर समाप्त करनेके लिये चन्दन और अगर लगी गदाको घुमाने लगे।

दोनों वीर एक दूसरेको मारनेके लिये इस प्रकार लड़ने लगे। जैसे दो गरुड़ एक सांपका मांस खानेके लिये युद्ध करते हैं, दोनों चारों ओर घूमकर गदा घुमाने लगे। गदामें गदा लगनेसे आगके पतङ्गे निकलने लगे। दोनों वीर उस घोर युद्धमें इस प्रकार उछलने लगे। जैसे वायु लगनेसे दो समुद्र। दोनोंके प्रहार समान हो चलते थे, इन दोनों मतवाले हाथियोंके समान लड़ते हुवे वीरोंकी गदाका शब्द गिरती हुई बिजलीके समान सुनाई देता था। थोड़े समयमें दोनों शत्रुनाशन वीर लड़ाई करते करते थक गए और बैठ गए, फिर क्षण भरमें खड़े होकर क्रोधमें भरकर गदा लेकर घोर युद्ध करने लगे।

हे राजेन्द्र! ये दोनों बैलके समान आंखवाले वीर घार युद्ध करने लगे।

अनन्तर दोनोंके शरीर फूटने और रुधिरमें भीगनेके कारण ऐसे दीखने लगे जैसे हिमाचल पर फूले हुये टेसू।

अनन्तर भीमसेनने दुर्य्योधनको छल करनेके लिये थोड़ा मार्ग दिया। तब भीमसेन उनके पीछे दौड़े। और वेगसे एक गदा फेंककर मारी तब दुर्य्योधनने हटकर उस गदाको वृथा कर दिया, वह गदा पृथ्वीमें गिर पड़ी।

अनन्तर दुर्य्योधनने घूमकर बलसे एक गदा भीमसेनके शरीरमें मारी तब महातेजस्वी भीमसेनके शरीरसे रुधिर बहने लगा और उन्हे मूर्च्छा सी आगई परन्तु दुर्य्योधन यह न समझ सके कि भीमसेन अत्यन्त व्याकुल होगये हैं। उन्होंने यही जाना कि यह हमारे गदा मारना चाहते हैं इसी लिये उन्होंने दूसरी गदा नहीं मारी भीमसेनने भी बहुत कष्ट करके अपने शरीरको स्थिर किया, और थोड़े ही समयमें सावधान होकर प्रतापी भीमसेन गदा लेकर वेगसे दुर्य्योधनकी ओर दौड़े।

महातेजस्वी भीमसेनको अपनी ओर आते देख दुर्य्योधन उनकी उस गदाको नष्ट करनेके लिये इधर उधरको चलने लगे। और फिर छलकर भीमसेनको मारने दौड़े भीमसेनने भी दुर्य्योधनके मनकी बात जान ली और उसे छल करते देख सिंहके समान गर्ज्जकर उनकी ओर दौड़े इतनेमें दुर्य्योधन भी उनके शिरमें गदा मारनेको उछले।

हे राजन्! जैसे ही दुर्य्योधन उनके शिरमें गदा मारनेको उछले वैसे ही भीमसेनने वेगसे उनकी जांघमें गदा मारी वह वज्रके समान भीमसेनकी गदा लगते ही दुर्य्योधनकी अत्यन्त सुन्दर दोनों जङ्घा टूट गईं।

हे महाराज! जङ्घा टूटते ही तुम्हारे पुत्र पृथ्वीमें शब्द करते हुए गिर पड़े, उस समय भयानक वायु चलने लगा बिजली गिरी आकाशसे धूलि और रुधिर बर्षने लगा; इन्द्र, यक्ष राक्षस और पिशाच आकाशमें गर्ज्जने लगे। भयानक पक्षी और हरिन घोर शब्द करने लगे, पाण्डवोंकी ओरके बचे हुये हाथी, घोड़े और वीर गर्ज्जने लगे। दुर्य्योधनको गिरा हुआ देख पाण्डवोंकी सेनामें शङ्ख, भेर, मृदङ्ग, बजने लगे। अनेक देवता आकाशमें बाजे बजाने लगे, चारों ओर ध्वजा और शस्त्र लेकर अनेक पैर और अनेक हाथवाले भयानक रूपवाले और भय देनेवाले कवन्ध घूमने लगे।

हे राजन्! कुए, तलाव और नदियोंके सब सोतोंमें रुधिर बहने लगा। पुरुष, स्त्री और स्त्री पुरुषोंके समान दिखाई देने लगी।

इन घोर उत्पातोंको देखकर पाञ्चाल और पाण्डव बहुत घबड़ाए।

हे राजन्! देवता, गन्धर्व्व, अप्सरा, सिद्ध और चारण इस ही युद्धका वर्णन करते और दोनों पुरुषसिंहोंकी प्रशंसा करते हुये अपने अपने घरको चले गये।

५८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! दुर्य्योधनको कटे हुए शाल वृक्षके समान पृथ्वीमें पड़ा हुवा देख पाण्डव अत्यन्त प्रसन्न हुए, जैसे मतवाला हाथी सिंहसे मरकर पृथ्वीमें गिर जाता है, ऐसेही दुर्य्योधनको पड़ा देख सोमकवंशी क्षत्री अत्यन्त प्रसन्न हुये।

हे महाराज! पृथ्वीमें पड़े हुए दुर्य्योधनके पास जाकर प्रतापवान् भीमसेन बोले, रे दुर्बुद्धे! रे मूर्ख! तैंने एक वस्त्रधारिणी द्रौपदीको सभामें बुलाकर हंसकर हमको बैल बैल कहा था यह उसी हंसनेका फल तुझको प्राप्त हुवा।

हे महाराज! ऐसा कहकर भीमसेनने अपना बायां पैर दुर्य्योधनके शिरपर रख दिया, फिर शत्रुनाशन भीम राजसिंह दुर्य्योधनके शिरको अपने बायें पैरसे ठुकराते हुये कहने लगे।

जो मूर्ख पहिले हमको बैल बैल कहकर नाचते थे, अब हम भी इन्हें बैल बैल कह कर बार बार नाचते हैं। हम लोग छल अग्नि, फांसी, जुआ और कपटसे किसीको जीतना नहीं चाहते परन्तु अपने बाहुबलसे शत्रुओंको जीतते हैं।

हे राजन्! इस वैरको समाप्त करके भीमसेन हंसकर युधिष्ठिर, श्रीकृष्ण, अर्ज्जुन, नकुल, सहदेव और धृष्टद्युम्न आदि पाञ्चालोंसे बोले।

जिन मूर्खोंने रजस्वला द्रौपदीको सभामें बुलाकर वस्त्र खींचा था उन धृतराष्ट्रके पुत्रोंको पाण्डवोंने युद्धमें मारा, देखो यह द्रौपदीके तपका फल है जिन दुष्ट धृतराष्ट्रके पुत्रोंने हमें पहिले नपुंसक कहा था उनको हमने बन्धु और सेनाके सहित मारा अब हम चाहे नरकमें जांय और चाहे स्वर्गमें।

हे महाराज! अनन्तर भीमसेन फिर दुर्य्योधनके पास जाकर उनके कन्धेपर रक्खी हुई गदा हाथसे पकड़कर और बायां पैर शिरपर रखकर कि यही छली दुर्य्योधन है।

क्षुद्र भीमसेनको कुरुकुलश्रेष्ठ दुर्य्योधनके शिरपर बायां पैर रखते देख धर्म्मात्मा सोमकवंशी क्षत्रिय प्रसन्न न हुये।

अनन्तर भीमसेनको बार बार नाचते और दुर्य्योधनको इस दशामें पड़े देख महाराज युधिष्ठिर भीमसेनसे बोले।

हे पापरहित भीम! तुमने धर्म्म अथवा अधर्म्मसे वैर समाप्त किया और अपनी प्रतिज्ञा पूरी करी अब दुर्य्योधनके पाससे हट जावो यह राजा और अपने वंशका मनुष्य है इसके शिर पर पैर देना उचित नहीं है, इसके शिर पर पैर मत देवो, घोर अधर्म्ममें मत पड़ो; यह ग्यारह अक्षौहिणियोंका स्वामी और कुरुकुलका महाराज था। इसके बान्धव, मन्त्री, सेना, भाई और पुत्र सब युद्धमें मारे गये, यह हमारा सपिण्ड हो नहीं किन्तु साक्षात भाई ही है। इसके सङ्ग ऐसा करना घोर अधर्म्म है; ये महाराज आज सब प्रकार सोचनीय दशामें पड़े हैं, पहिले सब मनुष्य कहते थे कि भीमसेन धर्म्मात्मा हैं, सो तुम आज ऐसा अधर्म्म क्यों कर रहे हो?

हे महाराज! भीमसेनसे ऐसा कहकर रोते हुए युधिष्ठिर शत्रुनाशन दुर्य्योधनके पास जाकर अत्यन्त दीन होकर कहने लगे।

हे प्यारे दुर्य्योधन भाई ! तुम कुछ क्रोध मत करना और कुछ शोच भी नहीं करना क्यों कि पहिले किये हुवे पापोंका फल अवश्य ही होता है मनुष्यकी प्रारब्धमें लिखा फल भोगना ही पड़ता है ?

हे कुरुकुलश्रेष्ठ ! यदि यह बात सत्य न होती तो क्या तुम हमसे और हम तुमसे वैर करते ?

हे भारत ! तुम अपने अपराधसे, लोभसे और बालबुद्धिसे इस घोर आपत्तिमें पड़े तुम मित्र, भाई, पिता, पुत्र और पोते आदिकोंका नाश कराके अब मरे तुम्हारे अपराधसे तुम्हारे भाई और जातिके सब लोग मारे गये ।

हे पापरहित कौरव ! अब हमें तुम्हारा कुछ शोच नहीं है, परन्तु अपना ही भारी शोच है ।

हाय ! अब हम अपने प्यारे बन्धुओंसे हीन होकर जगत्‌में शोक कैसे भोगेंगे ? हाय ! हम शोकसे रोती हुई भाई और बेटोंकी विधवा स्त्रियोंको कैसे देखेंगे ?

हे राजन् ! तुम्हें धन्य है जो सुखसे स्वर्गमें वास करोगे और हम इस नरकमें रह-कर अनेक प्रकारके दुःख उठावेंगे राजा धृतराष्ट्रके पुत्र और पोतोंकी विधवा स्त्री शोकसे व्याकुल होकर हमारी निन्दा करेंगी ।

सञ्जय बोले, ऐसा कहकर महाराज धर्म्म-राज युधिष्ठिर ऊंचे सांस लेकर दुःखसे व्याकुल होकर बहुत समयतक ऊंचे स्वरसे रोते रहे ।

५८ अध्याय समाप्त ।

राजा धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! हमारे पुत्रको अधर्म्मसे मरा हुआ देख महापराक्रमी गदायुद्धको विशेष रूपसे जाननेवाले रोहिणी-पुत्र बलदेवने क्या किया और क्या कहा ? सो हमसे कहो ।

सञ्जय बोले, राजा दुर्य्योधनके शिरपर भीमसेनको पैर रखते देख बलवान् बलरामको महा क्रोध हुवा फिर शस्त्र चलानेवालोंमें श्रेष्ठ हलधारी बलदेव राजोंके बीचमें हाथ उठाकर ऊंचे स्वरसे बोले ।

भीमसेनको धिक्कार है, भीमसेनको धिक्कार है, भीमसेनको बारबार धिक्कार है, हमने गदायुद्धके शास्त्रमें कहीं ऐसा नहीं देखा जैसा अधर्म्म युद्धमें भीमसेनने किया, नाभीके नीचे शस्त्र न मारे यह शास्त्रका निश्चय है, परन्तु इस मूर्खने कुछ शास्त्र नहीं पढ़ा इसलिये इच्छा-नुसार जो चाहता है सो कर बैठता है ।

हे राजन् ! ऐसा कहते कहते क्रोधके मारे बलदेवके नेत्र लाल होगये फिर युधिष्ठिरकी ओर देखकर कृष्णसे बोले, यह असाधारण हमारे समान वीर एकला नहीं गिरा बरन हम भी इसके सङ्गही गिर गये, क्यों कि जो जिसके आश्रयसे रहता है उसके गिरनेसे आश्र-यमें भी दोष आजाता है ।

हे महाराज ! ऐसा कहकर बलवान् बलदेव हल उठाकर भीमसेनकी ओर दौड़े उस समय ऊपरको हाथ उठाये हल लिये महात्मा बलदेवका ऐसा रूप दीखने लगा जैसे अनेक धातुयुक्त सफेद पर्व्वतका । बलदेवको भीमसेनकी ओर वेगसे जाते हुए देख बलवान् श्रीकृष्णने दौड़कर अपने लम्बे और मोटे हाथोंसे पकड़ लिया और हाथ जोड़कर विनय करने लगे । उस समय इन दोनों यदुकुलश्रेष्ठ वीरोंकी ऐसी शोभा दीखती थी जैसे सन्ध्या समय आकाशमें उदय हुये सूर्य्य और चन्द्रमाकी ।

श्रीकृष्ण बोले, हे पुरुषसिंह ! अपनी वृद्धि मित्रकी वृद्धि, मित्रके मित्रकी वृद्धि, शत्रुकी हानि, शत्रुके मित्रकी हानि और शत्रुके मित्रके मित्रकी हानि, ये छः प्रकारकी अपनी वृद्धि समझी जाती हैं, यदि इन छः वृद्धियोंमेंसे अपने मित्रके लिये उलटे फलहों

अर्थात् अपनी, अपने मित्रकी और अपने मित्रके मित्रकी हानि हो और शत्रुकी वृद्धि शत्रुके मित्रकी वृद्धि या शत्रुके मित्रके मित्रकी वृद्धि हो तो मनको कुछ दुःख देना चाहिये और मनको शान्ति देनेका उपाय करना चाहिये। कुलर-क्षित पराक्रमी पाण्डव हमारे स्वभावहीसे मित्र हैं, अर्थात् हमारी फूफीके पुत्र हैं। इनको छलियोंने छल लिया था और हम यह भी जानते हैं कि अपनी प्रतिज्ञा पालन करना ही क्षत्रियोंका धर्म है भीमसेनने पहिले ही सभामें प्रतिज्ञा करी थी कि हम अपनी गदासे दुर्य्योधनकी जङ्घा तोड़ेंगे।

हे शत्रुनाशन! महामुनि मैत्रेयने पहिले ही दुर्य्योधनको शाप दिया था कि तेरी जङ्घा भीमसेन अपनी गदासे तोड़ेंगे, इसलिये आप क्रोध न कीजिये हम इसमें कुछ दोष नहीं देखते।

हे प्रलम्बनाशन! हमारे पितामह और पाण्डवोंके नाना एक ही थे पाण्डव हमारे गाढ़े सम्बन्धी और मित्र हैं, उनकी वृद्धिसे हमारी वृद्धि है इसलिये आप क्षमा कीजिये क्रोध मत कीजिये।

श्रीकृष्णके वचन सुन धर्म्मात्मा बलदेव बोले, तुम्हारे मुखमें जो आता है सोई बकते जाते हो धर्म्मकी एक बात भी नहीं कहते, महात्मा धर्म्म ही करते हैं, और जो मनुष्य उस धर्म्मका नाश करते हैं, अर्थात् अत्यन्त लोभी अर्थका नाश करता है, और अत्यन्त कामी कामका नाश कर देता है, जो मनुष्य धर्म्मसे अर्थका धर्म्मसे कामको और कामसे अर्थका नाश नहीं करता अर्थात् धर्म्मके आश्रयसे अर्थ अर्थके आश्रयसे धर्म्म और अर्थ धर्म्मके आश्रयसे काम करता है वही अत्यन्त सुख भोगता है, यहां भीमसेनने धर्म्मका नाश किया इसलिये सब नाश होगया।

श्रीकृष्ण बोले, यदि इस समय आप शान्त होजांय तो सब लोक आपका क्रोधरहित धर्म्मात्मा और धर्म्मको प्यारा कहेंगे इसलिये आप क्रोध न कीजिये शान्त हूजिये, आप यह जानते हैं कि, कलियुग आगया इसलिये भीम-सेनकी प्रतिज्ञा और वैरको पूरा होने दीजिये।

सञ्जय बोले, श्रीकृष्णके धर्म्मरूपी छलसे भरे वचन सुनके बलराम प्रसन्न न हुये और राजोंके बीचमें बोले।

धर्म्मात्मा दुर्य्योधनको भीमसेनने अधर्म्मसे मारा है, इसलिये जगत्के बीर इन्हें छली योद्धा कहेंगे।

धर्म्मात्मा धर्म्मसे युद्ध करनेवाले धृतराष्ट्रपुत्र राजा दुर्य्योधन भी युद्धरूपी यज्ञमें दीक्षा पाकर शत्रुरूपी अग्निमें अपना शरीर जलाकर सनातन स्वर्गको जायंगे और इनका यश जगत्में बना रहेगा।

हे महाराज! ऐसा कहकर सफेद मेघके समान सुन्दर शरीरवाले रोहिणीपुत्र प्रतापी बलदेव रथपर चढ़कर द्वारिकाको चले गये।

हे राजन्! जब बलदेव द्वारिकाको चले गये तब पाञ्चाल, पाण्डव और श्रीकृष्ण अत्यन्त दुःख करने लगे।

अनन्तर शोकसे व्याकुल चिन्तासे नीचा मुख किये शोकसे सङ्कल्प त्यागे एकान्तमें बैठे युधिष्ठिरके पास जाकर श्रीकृष्ण बोले।

हे पृथ्वीनाथ हे धर्म्मराज! आप धर्म्म जान-करके भी इतना शोच क्यों करते हैं, जब दुर्य्यो-धनके सब बन्धु बान्धव मारे गये तब मूर्च्छामें यदि भीमसेनने उसके शिरपर पैर रख दिया तो क्या अधर्म्म हुवा?

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे कृष्ण! इस कुलनाशके समयमें जो भीमसेनने क्रोध करके राजाके शिरमें पैर मारा सो हमें अच्छा नहीं जान पड़ा, इसलिये हम प्रसन्न नहीं धृतराष्ट्रके पुत्रोंने हमारे सङ्ग बहुत ही छल किये थे, और अनेक कठोर बचन कहके हमें बनको निकाला था, वही महादुःख भीमसेनके हृदयमें भरा था

यही विचारकर हमने इस समय चमा करी अब इस छली, लोभी और कामीको धर्म्म अथवा अधर्म्मसे मारकर भीमसेन इच्छानुसार भोग करे।

सञ्जय बोले, धर्म्मराजके ऐसे बचन सुन श्रीकृष्ण बोले, इस समय हम सब लोगोंकी यही प्रार्थना है, कि आप भीमसेनपर कृपा कीजिये।

भीमसेनका कल्याण चाहनेवाले श्रीकृष्णके ऐसे वचन सुन महाराजने कहा कि बहुत अच्छा।

अनन्तर क्रोधी भीमसेन भी युडमें दुर्य्योधनको मारकर और प्रसन्न होकर अपने बड़े भाईके पैरोंमें आपड़े फिर खड़े होकर हाथ जोड़कर अत्यन्त प्रसन्न होकर बोले।

हे पृथ्वीनाथ! आज यह पृथ्वी आपके शत्रुवोंसे शून्य होगई, अब आप इसका राज्य कीजिये और अपने धर्म्मको पालन कीजिये।

हे महाराज! बैरका मूल छली दुर्य्योधन पृथ्वीमें सोता है, कठोर बचन कहनेवाले दुःशासन, राधापुत्र कर्ण और शकुनी आदि सब आपके शत्रु मारे गये। अब यह रत्नोंसे भरी, बन और पर्व्वतोंके सहित सब पृथ्वी आपकी शत्रुहीन महाराज जानके आपके अधीन है।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे महावीर! राजा दुर्य्योधन मारा गया बैर समाप्त होगया, यह सब काम कृष्णकी सम्मतिसे हुवा, हमने पृथ्वी जीती तुम प्रारब्धहीसे माता और क्रोधके ऋणसे छूटे; प्रारब्धहीसे हमारी बिजय हुई और प्रारब्धहीसे वह शत्रु मारा गया।

६० अध्याय समाप्त।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! दुर्य्योधनको युडमें पड़ा हुवा देख पाण्डव और सृञ्जयोंने क्या किया? सो हमसे कहो।

सञ्जय बोले, जैसे सिंहसे मरकर मतवाला हाथी पृथ्वीमें गिर जाता है, ऐसे ही भीमसेनके हाथसे मरा हुआ दुर्य्योधनको देख सृञ्जय, पाण्डव और श्रीकृष्ण बहुत प्रसन्न हुवे; कोई अपना दुपट्टा घुमाने लगा, कोई सिंहके समान गर्ज्जने लगा। कोई धनुष टङ्कारने लगा, कोई रोदा लगाने लगा, कोई नगारा भी बजाने लगा, कोई शङ्ख बजाने लगा, कोई कूदने लगा, कोई उछलने लगा, और कोई हंसने लगा।

हे महाराज! पृथ्वी उनके इस आनन्दको न सह सकी।

अनन्तर सब बीर भीमसेनके पास आकर कहने लगे। आपने इस समय घोर कर्म्म किया, दुर्य्योधनने बहुत दिनतक युडमें परिश्रम किया था, हम लोग इस कर्म्मको ऐसा समझते हैं, जैसे इन्द्रने बृत्रासुरको मारा था। अनेक मार्ग और मण्डलोंमें घूमते हुए बीर दुर्य्योधनको आपके सिवाय और कौन मार सक्ता था आप बैरके पार होगये, ऐसा कर्म्म दूसरा और चत्रिय कोई नहीं कर सकता आपने प्रारब्धहीसे युडमें मतवाले हाथीके समान दुर्य्योधनके शिरपर पैर दिया।

हे पापरहित! आपने दुःशासनका रुधिर इस प्रकार पिया जैसे भैंसेको मारकर सिंह रुधिर पीता है। जो राजा युधिष्ठिरका बैर करते थे, आपने प्रारब्धहीसे उनके शिरपर पैर दिया; दुर्य्योधन आदि शत्रुओंके मारनेसे आपका यश पृथ्वीमें प्रारब्धसे फैल गया; जैसे बृत्रासुरके मारनेमें इन्द्रकी प्रशंसा देवतोंने करी थी वैसे ही हम लोग आपकी प्रशंसा करते हैं। दुर्य्योधनके मरनेसे जो हम लोगोंके रोंये खड़े हुए हैं सो अबतक नहीं बैठते हैं।

हे महाराज! जहां भीमसेनके पास खड़े हुए सोमक, पाण्डव और सृञ्जय ऐसे बचन कह रहे थे। तहां उसी समय वार्त्तावह समाचार फैलनेवाले, पहुंच गए।

तब श्रीकृष्ण पुरुषसिंह प्रसन्न पाञ्चाल और पाण्डवोंसे बोले, मरे हुए शत्रुको बचनोंसे मारना

उचित नहीं यह पापी उसी समय मारा गया था, जिस समय इसने लज्जा छोड़ दी थी, अब इस मूर्खको कठोर बचन सुनानेसे क्या होगा? इस लोभीके सब पापी ही सहायक थे, ये मित्रोंके बचन नहीं मानता था, कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य, बिदुर, भोष्म और सञ्जयोंके अनेक बार समझाते भी इस नीचने पाण्डवोंको पिताका राज्य न दिया, अब यह दुष्ट शत्रुही हो वा मित्रही हो काष्ठके समान पड़ा है, इसे कठोर बचन सुनानेहीसे क्या होगा? यह पापी प्रारब्धहीसे बंश और मित्रोंके सहित मारा गया, अब आप लोग रथोंमें बैठकर डेरोंको चलिये।

श्रीकृष्णके ऐसे बचन सुन दुर्य्योधनको महाक्रोध आया और उठकर पृथ्वीमें कुहनी टेककर बैठे फिर भौंह टेढ़ी करके श्रीकृष्णको देखा उस समय पैर टूटे राजाकी ऐसी शोभा दीखती थी जैसे क्रोध भरे पूंछ कटे बिषैले सांपकी उस समय महाराज अपने प्राणनाश पीड़ा करनेवाली पीड़ाको भूलकर श्रीकृष्णसे बहुत कठोर बचन बोले।

अरे कंसके दासके दास दुर्बुद्धी पापी कृष्ण! तुझे कुछ भी लज्जा और घृणा नहीं है, सुझे अधर्म्मसे गदायुद्धमें मराहुआ देख तुझे कुछ भी लज्जा नहीं होती, तैंने ही भीमसेनको याद दिला दी कि इसकी जङ्घा तोड़, क्या मैं यह नहीं जानता कि तैंने धर्म्मसे युद्ध करते हुए सहस्रों राजोंको अर्ज्जुनके हाथसे अधर्म्मसे मरवा दिया, तैंने प्रतिदिन पाप और छल करके हमारी तरफके सहस्रों बीरोंको मरवा डाला शिखण्डीको आगे करके पितामहको मारा।

अरे दुर्बुद्धे! अश्वत्थामा नामक हाथीको मारकर बलवान गुरुजीसे शस्त्र रखवा लिये और उनको इस पापी धृष्टद्युम्नने मारडाला; तू देखता रहा तूने इसे न रोका।

क्या मैंने यह नहीं सुना कि पाण्डवोंके मारनेके लिये जो इन्द्रने कर्णको शक्ती दी थी, वह तूने घटोत्कचके ऊपर छुड़वा दी? तेरे समान जगत्में और कौन पापी होगा, जिसने नागराज अश्वसेनको छोड़कर रथका पहिया उठाते हुए घबड़ाये हुए, कर्णको अर्ज्जुनकी बिजयके लिये मरवा दिया?

तेरीही सम्मतिसे हाथकटे बलवान भूरिश्रवाको महात्मा सात्यकोने मारा। यदि मैं कर्ण, भीष्म और द्रोणाचार्य्य, धर्म्मसे युद्ध करने पाते, तो तेरी कदापि बिजय न होती परन्तु तू ऐसा अनार्य्य है कि, तैंने छल करके अनेक धार्म्मिक राजोंको मारडाला।

श्रीकृष्ण बोले, हे दुष्टात्मन् गान्धारीपुत्र! अब तू सेना, भाई, पुत्र और मित्रोंके सहित पाप करता करता मर गया, तेरेही पापसे वीर भीष्म और द्रोणाचार्य्य मारे गये तेरे समान पापी कर्ण भी मारा गया।

अरे मूर्ख! हमने बार बार पाण्डवोंके पिताका राज्य मांगा पर तैंने न दिया। तूने पहिले शकुनीकी सम्मति और लोभसे पाण्डवोंका राज्य न दिया। अरे दुर्बुद्धे! तैंने भीमसेनको विष दिया, माताके सहित सब पाण्डवोंको लाक्षागृहमें जलाया जुवेके समय रजस्वला द्रौपदीको दुःखदिया जुवा न जाननेवाले महात्मा धर्म्मज्ञ युधिष्ठिरको जुवा जाननेवाले शकुनीने छलसे जीता इसी लिये हमने तुझको इस प्रकार युद्धमें मारा।

अरे दुष्ट निर्लज्ज! जिस समय तृणबिन्दु, मुनिके आश्रममें रहते हुये पाण्डव आखेटको गये थे तब पापी जयद्रथने द्रौपदीका केश क्लेश दिया था? अनेक बीरोंने मिलकर एकले बालक अभिमन्युको मारा इसी लिये हमने तुझको इस प्रकार युद्धमें मारा, तैंने जो हमारे अपकार करे थे, उसीसे हमने भी ऐसा किया। तैंने बृहस्पति और शुक्रका उपदेश नहीं सुना, बूढ़ोंकी सेवा नहीं करी इसीसे हमारे कल्याण भरे बचन नहीं सुने थे। तैंने लोभ और तृष्णाके

वश होकर जो जो पाप करे थे, उन सबका फल भोग।

दुर्य्योधन बोले, हे कृष्ण! हमने विधिपूर्व्वक वेद पढ़े, समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वीका राज्य किया, शत्रुवोंके शिरपर पैर दिया हमारे समान महात्मा कौन होगा? महात्मा चत्रिय जिस प्रकार युद्धमें मरनेकी इच्छा करते हैं, उसी प्रकार हम मरे जिन भोगोंको राजा नहीं भोग सकते ऐसे देवतोंके योग्य भोग हमने भोगे, उत्तम ऐश्वर्य्य प्राप्त किया, हमारे समान महात्मा कौन होगा? अब हम अपने मित्र और भाइयोंसे स्वर्गमें जाकर मिलेंगे, तुम लोग शोकसे व्याकुल होकर जगत्में रहोगे और तुम्हारे सब सङ्कल्प नष्ट होजांयगे।

सञ्जय बोले, इस बचनके कहतेही बुद्धिमान कुरुराजके ऊपर पवित्र सुगन्धि भरे फूल बर्षने लगे। गन्धर्व्व मनोहर बाजे बजाने लगे, अप्सरा नाचने लगीं, राजाका यश गाने लगीं सिद्ध दुर्य्योधनको धन्य धन्य कहने लगे। उत्तम सुगन्धि भरा वायु चलने लगा, आकाश निर्म्मल वैदूर्य्य मणिके समान दीखने लगा; और दिशा भी निर्म्मल होगयीं।

हे राजन्! इन अद्भुत शकुनोंको देख और दुर्य्योधनकी प्रशंसा सुनके श्रीकृष्णादिक सब लज्जित होगये, भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कर्ण और भूरिश्रवाको अधर्म्मसे मरा हुआ सुन सब लोग शोकसे व्याकुल होकर शोचने लगे।

पाण्डवोंको दीन और चिन्ता करते देखकर श्रीकृष्ण मेघ और नगारेके समान गम्भीर शब्दसे बोले, जिस मार्गसे महात्मा चलें उसीसे सबको चलना चाहिये, दैत्यनाशक देवतोंने अनेक दानवोंको छलसे मारा है, इसलिये शत्रुको इस प्रकार मारनेका आप लोग शोच मत कीजिये, शत्रुवोंको किसी प्रकार छलादिकसे मारना हो धर्म्म है। केवल धर्म्मयुद्धसे आप लोग भीष्मादिक वीरोंको नहीं मार सकते थे और इस शीघ्र शस्त्र चलानेवालेको भी नहीं मार सकते थे।

मैंने यह सब छल और कपट केवल आप लोगोंके कल्याणहीके लिये किया है और उसीसे ये सब भीष्मादिक युद्धमें मारे गये यदि मैं ऐसे छल नहीं करता तो क्योंकर तुम्हारी विजय होती और राज्य धन कहांसे होता? भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कर्ण और भूरिश्रवा ये चारों महारथ और महात्मा थे, इनको धर्म्म युद्धमें साक्षात् लोकपाल भी नहीं जीत सकते थे और परिश्रमरहित गदाधारी दुर्य्योधनको भी धर्म्मयुद्धमें साक्षात् दण्डधारी यमराज भी नहीं मार सकते थे। आप लोग इसका कुछ विचार न कीजिये अब हम लोग कृतकृत्य होगये सन्ध्या होगई अब डेरोंको चलें सब हाथी, घोड़े और राजा विश्राम करें।

हे महाराज! श्रीकृष्णके ऐसे बचन सुन पाण्डव और पाञ्चाल बहुत प्रसन्न होकर सिंहके समान गर्ज्जने लगे। फिर श्रीकृष्णने पाञ्चजन्य शङ्ख बजाया अनन्तर सब वीर अपने अपने शङ्ख बजाने लगे और दुर्य्योधनको मरा हुआ देखकर बहुत प्रसन्न हुए।

६१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, अनन्तर परिघके समान हाथवाले राजोंने अपने अपने शङ्ख बजाए और प्रसन्न होकर हमारे डेरोंको चले, उस पाण्डवोंकी सेनाके पीछे महाधनुषधारी युयुत्सु, सात्यकी, सेनापति धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और द्रौपदीके पांचोपुत्र आदि महाधनुषधारी चले। अनन्तर सब पाण्डवोंने हमारे स्वामी रहित डेरोंमें जाकर टूटे हुए अखाड़ेके समान महाराज दुर्य्योधनका डेरा देखा उस समय उन डेरोंमें स्त्री, नपुंसक और बूढ़े मन्त्रियोंके सिवाय और कोई न था। उस डेरेकी शोभा ऐसी

दीखती थी जैसे उत्सव रहित भूमि और हाथी रहित तलावको।

तब दुर्य्योधनके सब मन्त्री मैले और गेरूके कपड़े पहने पाण्डवोंके आगे आखड़े हुए।

डेरोंमें पहुंचकर पाण्डव आदि महारथ अपने अपने रथोंसे उतरे।

अनन्तर पाण्डवोंका सदा कल्याण चाहने-वाले कृष्ण अर्ज्जुनसे बोले, तुम बहुत शीघ्र अपना गाण्डीव धनुष चढ़ावो और दोनों अक्षय तूणीर बांधकर शीघ्र रथसे कूदो तब मैं पीछे रथसे उतरूंगा। हे पापरहित! तुम्हारा इस-होमें कल्याण है।

श्रीकृष्णके वचन सुन पाण्डुपुत्र अर्ज्जुनने वैसाही किया।

अनन्तर बुद्धिमान कृष्ण भी घोड़ेकी लगाम छोड़कर रथसे कूद पड़े जगत्स्वामी महात्मा कृष्णके उतरते ही वह रथ बिना लगाये अग्निसे आपही आप जल उठा, दिव्य बन्दर ध्वजा अन्तर्धान होगई थोड़ेही समयमें आसन, लगाम, घोड़े, धर और पहियोंके समेत रथ भस्म होकर पृथ्वीमें गिर पड़ा।

इस रथका पहले ही महारथ द्रोणाचार्य्य और कर्णने अपने शस्त्रोंसे भस्म कर दिया था, अर्ज्जुनके रथको भस्म हुआ देख सब वीर लोग आश्चर्य्य करने लगे।

अनन्तर हाथ जोड़कर और प्रणाम करके अर्ज्जुन श्रीकृष्णसे बोले, हे भगवन्! हे गोविन्द! हे यदुनन्दन! हे महाबाहो! यह क्या आश्चर्य्य हुआ? यह रथ अग्निसे क्यों जल गया यदि आप हमें सुनाने योग्य समझें तो मुझसे कहिये?

श्रीकृष्ण बोले, हे अर्ज्जुन! यह रथ कर्ण और द्रोणाचार्य्यके ब्रह्मास्त्र आदि शस्त्रोंसे पहिले ही जल चुका था परन्तु मैं बैठा था इस-लिये भस्म नहीं होसका अब यह सब काम होचुका इसलिये मैं भी उतर गया, और यह भस्म होगया।

अनन्तर शत्रुनाशन श्रीकृष्ण हंसकर और महाराज युधिष्ठिरका हाथ पकड़ कर इस प्रकार बोले।

हे कुन्तीपुत्र! प्रारब्धहीसे आपकी विजय होती है और प्रारब्धहीसे आपका शत्रु मारा गया, प्रारब्धहीसे आप भीमसेन, अर्ज्जुन, नकुल और सहदेव इस घोर वीर क्षयसे कुशल पूर्व्वक बचे और आपके शत्रु मारे गये अब आपको जो कुछ इस समय करना हो सो शीघ्रतासे कीजिये अब अर्ज्जुनके सहित अपने डेरोंको चलिये।

आपने जो पहिले मधुपर्क देकर हमसे कहा था, कि यह अर्ज्जुन आपका भाई और मित्र है, आप सब आपत्तियोंमें इसकी रक्षा कीजियेगा, और मैंने भी आपके वचन स्वीकार किये थे, सो यह वीर विजयी सत्य पराक्रमी अर्ज्जुन अपने भाइयोंके सहित इस घोर युद्धसे बचे, हमने भी आपकी आज्ञानुसारही इनकी रक्षा करी।

हे महाराज! श्रीकृष्णके ऐसे वचन सुन धर्म्मराज युधिष्ठिरके रोये रोयें प्रसन्न होगये, और श्रीकृष्णसे बोले।

हे शत्रुनाशन! कर्ण और द्रोणाचार्य्यके, छोड़े हुए, ब्रह्मास्त्रको आपके सिवा साक्षात् वज्रधारी इन्द्र भी नहीं सह सकेंगे, आपहीकी कृपासे अर्ज्जुनने संशप्तक सेनाको नाश किया, और घोर युद्धसे नहीं हटा आपहीकी कृपासे हमको अनेक प्रकारके कर्म्म, तेज और उत्तम गति प्राप्त हुई, हमसे बिराट नगरमें पहिलेही वेदव्याससुनिने कहा था, कि जहां धर्म्म तहां कृष्ण और जहां कृष्ण तहां विजय होगी।

हे महाराज! इन सब बातोंको समाप्त करके सब वीर आपके डेरोंमें घुसे वहां उनको कोश (खजाना) रत्न आदि ऋद्धियोंके ढेर चांदी, सोना, मणी, मोती, उत्तम उत्तम आभू-षण, कश्मीरी दुशाले, चमड़े असंख्य दासी, दास, राज्यकी सब सामग्री मिली उस आपके अक्षय

धनको प्राप्त करके शत्रुहीन पाण्डव बहुत प्रसन्न हुए।

अनन्तर वे सब वीर रथोंसे उतरकर थोड़े समयतक वहांपर बैठे रहे और वाहनोंको शान्त किया तब महायशस्वी श्रीकृष्ण बोले, कि सब सेना आज यहीं रहे परन्तु महाराज भीमसेन, अर्ज्जुन, नकुल, सहदेव, सात्यकी और हम मङ्गलके लिये डेरोंसे बाहर रहेंगे।

श्रीकृष्णके वचन सबने स्वीकार किये और वे सातों मङ्गलके लिये डेरोंसे निकलकर सरस्वती नदीको चले गये और रात भर वहीं रहे।

हे महाराज! वहां जाकर महाराज युधिष्ठिरने बहुत विचारकर समयके अनुसार श्रीकृष्णसे ऐसे वचन कहे।

हे शत्रुनाशन कृष्ण! गान्धारी क्रोधसे बहुत ही व्याकुल होगी, इसलिये हमारी इच्छा है कि आप उनके पास जाइये और समयके अनुसार हेतु और कारण भरे ऐसे वचन सुनाइये जिसमें गान्धारी शान्त होय, वहां हमारे पितामह व्यास भी होंगे, जब आप गान्धारीसे कुछ कहेंगे, तब वह आप अवश्य ही शान्त होजावेगी।

हे महाराज! अनन्तर सब लोगोंकी यही सम्मति हुई कि श्रीकृष्णको हस्तिनापुर अवश्य ही भेजना चाहिये तब श्रीकृष्ण भी शैव्य, सुग्रीव, मेघपुष्प और बलाहक नामक शीघ्र चलनेवाले घोड़ोंके रथपर बैठकर दारुक सारथीको साथ लेकर चल दिये, वहां प्रतापी, कृष्णको जाते देख सब पाण्डव श्रीकृष्णसे बोले, कि आप पुत्ररहित यशस्विनी गान्धारीको जाकर समुझाइये पाण्डवोंके वचन सुन श्रीकृष्ण हस्तिनापुरको चल दिये, और पुत्ररहित गान्धारीके पास पहुंचे।

६२ अध्याय समाप्त।

महाराज जनमेजय बोले, हे ब्राह्मणश्रेष्ठ वैशम्पायन मुने! धर्म्मराज युधिष्ठिरने शत्रुनाशन कृष्णको गान्धारीके पास क्यों भेजा? और कृष्ण क्यों गये? इसमें कोई भारी कारण होगा, क्यों कि श्रीकृष्ण इस युद्धसे पहिले ही एक बार शान्ति करानेके लिये हस्तिनापुर गये थे, परन्तु वह इनकी इच्छा पूर्ण नहीं हुई तब फिर श्रीकृष्ण वहां क्यों गये? विशेषकर जब सब शत्रु मारे गये? दुर्य्योधन मर गये जगत्में युधिष्ठिरका कोई शत्रु न रहा शत्रुओंके हेरे शून्य होगये और उत्तम यश भी प्राप्त हो चुका तब फिर स्वयं श्रीकृष्ण हस्तिनापुर क्यों गये? आप हमसे सब वर्णन कीजिये इस कार्य्यका जो कारण हो सो भी आप हमसे कहिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे भरतकुलश्रेष्ठ महाराज! आपने जो प्रश्न किया, वह आपहीके योग्य हैं। अब हम उसका कारण कहते हैं, आप सुनिये, महाराज युधिष्ठिरने महाबलवान दुर्य्योधन को अन्यायसे गदा युद्धमें मरा हुआ देख यह विचारा कि महाभाग्यवती गान्धारी घोरतप करती है। यह अपने तपसे तीनों लोकोंको भस्म कर सकती है, वह जब सुनेगी कि हमारे छलरहित पुत्रको पाण्डवोंने छलसे मारा तब क्रोध करके अपने मनकी अग्निसे भस्म कर देंगी, उस दुःखको वह कैसे सह सकेंगी, ऐसा विचार करते करते महाराजकी बुद्धि भय और शोकसे व्याकुल होगई तब बहुत शोच विचारकर श्रीकृष्णसे बोले।

हे कृष्ण! आपकी कृपासे हमने यह निष्कण्टक राज्य पाया, हम इस राज्यको मनसे भी नहीं पा सकते थे, हे महाबाहो! आपने हमारे देखते देखते इन सब शत्रुओंका नाश कर दिया, आपने देवासुर संग्राममें दानवोंको मारनेके लिये देवतोंको सहायता देकर दानवोंका नाश किया था, ऐसा ही हमे सहायता देकर कौरवोंका नाश किया।

हे वार्ष्णेय! आप यदि अर्ज्जुनके सारथी और स्वामी न होते तो इस शत्रु सेनारूपी समुद्रका नाश कैसे होता? आपने हमारे लिये

परिघ, सांग, भिण्डिपाल, तोमर और परश्वध आदि वज्रके समान आयुधोंकी चोटें खाई और अनेक कठोर वचन भी सुने परन्तु दुर्य्योधनके मरनेसे आपका यह सब परिश्रम सफल हुआ, परन्तु यह सब जिसमें नष्ट न होजाय सो उपाय कीजिये हमें विजय प्राप्त होनेपर भी गान्धारीके क्रोधसे सन्देह है, क्यों कि महाभागिनी गान्धारी सदा घोर तप करती रहती हैं, वे अपने पुत्र और पोतोंको मरा हुआ सुन हमें अवश्य ही भस्म कर देंगी इसलिये उन्हे इस समय प्रसन्न करना हमारी सम्मति है।

हे पुरुषोत्तम! क्रोधसे लालनेत्रवाली और पुत्र शोकसे व्याकुल गान्धारीको आपके सिवाय कौन मनुष्य देख सक्ता है? इसलिये हमारी सम्मतिमें आता है कि आप वहां जाइये; आप जगतके कर्त्ता नाशक और अव्यय हैं इसलिये क्रोध भरी गान्धारीको शान्त कीजिये समयके अनुसार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कारणोंसे भरे वचन सुनाकर आप गान्धारीको अवश्य ही शान्त करेंगे।

हे महाबाहो! हमारे पितामह भगवान् व्यास भी वहीं होंगे आप सदा पाण्डवोंका कल्याण चाहते हैं इसलिये सब प्रकारसे गान्धारीका क्रोध शान्त कीजियेगा।

महाराजके ऐसे वचन सुन यदुकुलश्रेष्ठ कृष्णने दारुकको बुलाकर कहा कि हमारा रथ ले आओ।

दारुकने महात्मा श्रीकृष्णके वचन सुन शीघ्र रथ तयार करके कृष्णसे कहा कि रथ खड़ा है।

अनन्तर यदुकुलश्रेष्ठ शत्रुनाशन श्रीकृष्ण रथपर बैठकर चल दिये और थोड़े ही समयमें रथके शब्दसे दिशाओंको पूरित करते हुए हस्तिनापुर पहुंचे और महाराज धृतराष्ट्रको समाचार देकर उनके पास गये और वहां पहिलेहीसे बैठे मुनिश्रेष्ठ व्यासको देखा।

अनन्तर श्रीकृष्णने वेदव्यास और राजाके चरणोंमें प्रणाम करके गान्धारीको प्रणाम किया। फिर राजाका हाथ पकड़कर ऊंचे स्वरसे बहुत समयतक रोते रहे फिर आंसू पोंछकर मुंह धोकर कुल्ला किया और बैठकर शत्रुनाशन धृतराष्ट्रसे बोले।

महाराज! आप बूढ़े हैं, समयके अनुसार जो कुछ हुआ सो आपने सुना ही होगा आपको कोई बात अविदित नहीं है, आप और पाण्डवोंका चित्त न मिला तब कुरुकुल और क्षत्रियोंका नाश क्यों न होता? धर्म्मात्मा युधिष्ठिरने अपने सब भाइयोंको शान्त कर लिया था, परन्तु आपने उन्हें जूएमें जीतकर उनको बनवास दिया वह भी उन्होंने स्वीकार किया फिर एक वर्षतक अनेक प्रकारके रूप बनाकर छिपकर विराट नगरमें निवास किया इत्यादि और भी अनेक क्लेश पाण्डवोंने सदा समर्थ होने पर भी असमर्थके समान सहे, आगे जब युद्ध होनेको उपस्थित होगया तब स्वयं मैंने आकर आपसे पांच गांव मांगे, परन्तु आपने समयके फेरसे लोभके वश होकर वे भी न दिये कहांतक कहें आपहीके अपराधसे यह क्षत्रीवंश नष्ट होगया; भीष्म, सोमदत्त, बाल्हीक, कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा और बुद्धिमान् विदुरने बहुत बार आपसे शान्ति करनेको कहा परन्तु आपने उनके वचनको भी न सुना।

हे भारत! आपका इसमें कुछ भी दोष नहीं है समय बिगड़नेसे सबकी बुद्धि ऐसी नष्ट होजाती है। आप इस कार्य्यमें मूर्ख होगए इसमें प्रारब्धके और कालके सिवा किसको दोष देवें?

हे महाबुद्धिमान्! आप पाण्डवोंको कुछ दोष न दीजिये क्यों कि इस विषयमें महात्मा पाण्डवोंका कुछ भी दोष नहीं है आप धर्म्म, न्याय और स्नेहसे विचारिये तो यह सब आपहीके किये दोषोंका फल जान पड़ेगा आप पाण्डवोंको किसी प्रकार दोष मत दीजिये क्यों कि वे आपको और गान्धारीको पिण्ड देनेवाले कुलमें उत्पन्न हुये पुत्र हैं।

हे भरतकुलश्रेष्ठ! आप और यशस्विनी गान्धारी पाण्डवोंको ओरसे कुछ द्वेष न करो क्यों कि यह सब आपहीके दोषोंका फल है; हम आपको प्रणाम करते हैं आप कृपा करके पाण्डवोंकी रक्षा कोजिये।

हे महाबाहो! महाराज युधिष्ठिरकी आपकी कैसी भक्ति और प्रीति है सो आप जानते हैं सब अहितकारी शत्रुवोंको मारकर भी आपके और यशस्विनी गान्धारीके सोचसे रात दिन व्याकुल रहते हैं हमने उन्हें कभी भी शान्त नहीं देखा।

हे पुरुषसिंह! आप पुत्रोंके शोकसे व्याकुल होरहे हैं इस ही लज्जासे महाराज स्वयं आपके पास नहीं आए ऐसा कहकर यदुकुल श्रेष्ठ कृष्ण शोकसे पीड़ित गान्धारीसे बोले।

हे सुबलपुत्री! मैं तुमसे जो कहता हूं सो सुनो इस समय पीड़ित जगत्में तुम्हारे समान सौभाग्यवती स्त्री कोई नहीं है, तुमने हमारे आगे सभामें धर्म्म और अर्थसे भरे दोनों ओरके कल्याण करनेवाले वचन कहे परन्तु तुम्हारे पुत्रोंने नहीं माना; युद्धको जाते समय भी तुमने दुर्य्योधनको कठोर वचन कहे कि, रे मूर्ख! जहां धर्म्म है वहीं ही विजय होती है, परन्तु उसने उनको भी नहीं माना।

हे राजपुत्री! तुम्हारे वे सब बचन सत्य होगये इसलिये तुम अपने मनमें कुछ शोक न करो। हे कल्याणी! तुम अपने क्रोध भरे नेत्रोंसे चर और अचर जगत् तथा पृथ्वीको भस्म कर सक्ती हो परन्तु पहिले सब कारण विचारकर पाण्डवोंके नाशका विचार मतकरो।

श्रीकृष्णके बचन सुन गान्धारी बोली, हे महाबाहो कृष्ण! तुम जैसे हो सो अच्छेही हो परन्तु शोकोंके कारण मेरी ही बुद्धि नष्ट होगई है इस समय हमें पुत्ररहित अन्धे राजाकी और वीर पाण्डवोंको केवल आप होकी शरण है, आपके बचन सुनकर मेरी बुद्धि स्थिर होगई ऐसा कहकर पुत्रोंके शोकसे पीड़ित गान्धारी कपड़ेसे मुंह ढककर रोने लगी, तब फिर शोकपीड़ित गान्धारी और धृतराष्ट्रको श्रीकृष्ण अनेक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कारणोंसे समझाने लगे।

उसी समय श्रीकृष्णको अश्वत्थामाकी प्रतिज्ञाका स्मरण आगया तब बहुत शीघ्रतासे उठे और राजा धृतराष्ट्रके चरणोंमें शिर रखकर कहने लगे कि, हे कुरुकुलश्रेष्ठ! आप किसी प्रकारका शोक न कोजिये, आज रात्रिको अश्वत्थामाने पाण्डवोंको मारनेका विचार किया है, इसलिये मुझे वहां जानेकी आज्ञा दीजिए ऐसा कहकर कृष्णने व्यासदेवको प्रणाम किया।

वैशम्पायन् श्रीकृष्णके बचन सुन महाबाहु धृतराष्ट्र और गान्धारी शीघ्रतासे बोले।

हे महाबाहो! हम तुमसे फिर मिलेंगे, अब तुम शीघ्र जाओ और पाण्डवोंकी रक्षा करो।

महाराजके बचन सुन कृष्ण दारुकके सहित रथपर बैठकर सेनाकी तरफ चले गये।

कृष्णके जानेके पीछे महात्मा व्यास राजा धृतराष्ट्रको समझाते रहे महात्मा कृष्ण भी कृतकृत्य होकर हस्तिनापुरसे चलकर पाण्डवोंको देखनेके लिये डेरेमें पहुंचे और उनसे मिलकर प्रसन्नतापूर्व्वक सब समाचार कह सुनाये।

६३ अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जङ्घा टूटनेके पश्चात् अभिमानी हमारे पुत्रने तुमसे क्या कहा? वह हमारा पुत्र सदासे क्रोधी और पाण्डवोंका वैरी था, तब इस आपत्तिमें पड़कर तुमसे क्या कहा?

सञ्जय बोले, हे महाराज! उस आपत्तिमें पड़कर जांघ टूटनेके पश्चात् महाराजने हमसे जो कहा सो सुनिये, मुझको अपने पास खड़े देख जङ्घा टूटे महाराज उठे और मेरी ओर

देखा उस समय महाराजका सब शरीर धूलिसे भर रहा था।

अनन्तर अपने हाथ ऊंचे टेंककर मतवाले, हाथीके समान बैठे और इधर उधर बिथरे हुए बालोंको घुमाते हुए दांतसे दांतोंको पीसकर महाराज युधिष्ठिरको धिक्कार देकर लम्बा सांस लेकर क्रोध और आंसू भरे नेत्रोंसे मेरी ओर देखकर बोले।

हे सञ्जय! किसी समय शान्तनुपुत्र भीष्म, शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ कर्ण, कृपाचार्य्य, शकुनी, महाशस्त्रधारी द्रोण, अश्वत्थामा, वीर शल्य और कृतवर्म्मादि मेरे सङ्ग थे, मैं बारह अक्षोहिणियोंका स्वामी था और आज इस दुर्दशामें पड़ा हूं, समयकी गति बड़ी कठोर है समयको कोई नांघ नहीं सक्ता।

हे महाबाहो! यदि कोई हमारा जीता हुआ मित्र मिले तो कहना कि भीमसेनने दुर्य्योधनको ऐसे अन्यायसे मारा पापी पाण्डवोंने श्रीमान् भीष्म, द्रोणाचार्य्य, भूरिश्रवा और कर्णके सङ्ग भी ऐसेही ऐसे अधर्म्म किये थे, इनका अपयश जगत्में फैलेगा, हमें यह निश्चय है, कि हमारे मित्रोंके मरनेसे और इस छलयुक्त पाण्डवोंकी विजयसे महात्मा प्रसन्न नहीं होंगे, क्यों कि अन्याय कर्म्मको कौन महात्मा प्रशंसा करता है? अधर्म्मसे बिजय करके पापी पाण्डुपुत्र भीमसेनके सिवा और कौन प्रसन्न होगा।

हे सञ्जय! इसमें क्या आश्चर्य्य है जो जङ्घा टूटनेके पश्चात् क्रोधी भीमसेनने मेरे शिरपर पैर धर दिया?

हे सञ्जय! जो तेजसे भरे राज्यपर बैठे बन्धुवोंसे युक्त शत्रुओंका निरादर करे उसकी प्रशंसा करनी चाहिये मेरे माता और पिता दोनों ही युद्ध विद्याको पूर्णरीतिसे जानते हैं। आज वह दुःखसे व्याकुल होंगे। तुम उनसे कहना कि तुम्हारे पुत्रने ऐसे कहा है, कि हमने अपने जीवनमें अनेक यज्ञ करे, सेवकोंको सन्तुष्ट करा, समुद्र सहित पृथ्वीको अपनी आज्ञामें चलाया, जीते हुए शत्रुओंके शिरपर पैर रक्खा, शक्तिके अनुसार दान किये, मित्रोंका हित किया, और शत्रुओंको दबाया हमारे समान और महात्मा कौन होगा, बन्धुवोंका सनमान किया, देवऋण, पितृऋण, और ऋषिऋणसे शरीरको छुड़ाया हमारे समान जगत्में और कौन महात्मा होगा। राजोंमें मुख्य महाराजोंके ऊपर आज्ञा चलाई, दुर्लभमान प्राप्त किया अब उत्तम मार्गसे स्वर्गको जाता हूं। मेरे समान और महात्मा कौन होगा? दूसरोंके राज्य छीने, राजोंसे दासोंके समान सेवा कराई मेरे समान महात्मा कौन होगा। विधिके अनुसार सब वेद पढ़े, अनेक दान दिये, रोगरहित अवस्था पाई और अपने धर्म्मसे स्वर्गको जाता है। मेरे समान और महात्मा कौन होगा, मुझे प्रारब्धहीसे शत्रुवोंने जीतकर अपना दास नहीं बनाया, प्रारब्धहीसे मेरी लक्ष्मी मरनेके पश्चात् शत्रुओंके हाथमें गई, अपना धर्म्म करनेवाले महात्मा क्षत्री जिस रीतिसे मरना चाहते है, आज मैं उसी रीति मरा मेरे समान और महात्मा कौन होगा?

अच्छा हुआ जो मैंने अपना वैर न छोड़ा और न्यायसे न हारा अच्छा हुवा जो मैंने युद्धमें कोई अधर्म्म न किया जो मनुष्य सोतेको, मद्य पियेको मारता है, अथवा विष देकर मारता है उसकी प्रशंसा जगत्में नहीं होती ऐसे ही जो धर्म्म छोड़कर युद्ध करता है, उसकी भी प्रशंसा जगत्में नहीं होती।

हे सञ्जय! तुम बलवान अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मासे हमारी ओरसे यह कहना कि तुम लोग अधर्मी, विश्वासघाती पाण्डवोंका विश्वास कभी न करना।

हे महाराज! मुझसे ऐसा कहकर महापराक्रमी दुर्य्योधन वार्त्तावह (समाचार प्रसिद्ध करनेवाले) लोगोंसे बोले, पापी भीमसेनने हमें

अधर्म्मसे मारा सो अब हम स्वर्गमें जाकर द्रोणाचार्य्य, कर्ण, शल्य, महापराक्रमी वृषसेन, सुबल पुत्र शकुनी, महावीर जलसन्ध, राजा भगदत्त, महाधनुषधारी सोमदत्त, सिन्धुराज जयद्रथ, दुःशासन आदि सौ भाई, महाबलवान दुःशासन पुत्र और लक्ष्मण आदि अपने सहस्त्रों बन्धुओंसे मिलेंगे, मैं उनके पीछे इस प्रकार स्वर्गको जाता हूं जैसे सामग्री रहित बटोही।

हाय हमारी बहिन दुःशला अपने सौ भाई और पतिको मरा हुआ सुन दुःखसे व्याकुल होकर क्या करेंगी? हमारे पिता बूढ़े महाराज वह, पोतोंकी बहू और गान्धारीके सहित किस दुर्दशामें पड़ेंगे? इसमें यह निश्चय है कि, विशालनयनी सुन्दरी लक्ष्मणकी माता पुत्र और पतिको मरा हुआ सुन अवश्य ही मर जायगी।

यदि कहीं महापण्डित सब स्थानोंमें घूमनेवाले, महाभाग चार्व्वाक मेरी इस दशाको सुन ले तो अवश्यही पाण्डवोंसे बदला लेंगे। मैं तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध पवित्र समन्त पञ्चक तीर्थपर मरकर स्वर्गको जाता हूं तुम लोग भी जाओ।

हे महाराज! राजाके ऐसे बचन सुन वार्त्तावह रोने लगी और वहांसे चले गये, राजाका रोना सुनकर सब पशु पक्षी भी भाग गये, चर और अचर बन और समुद्रके सहित सब पृथ्वी कांपने लगी। आकाशसे बिजली गिरी।

ये वार्त्तावह अश्वत्थमाके पास पहुंचे और गदायुद्धमें राजाके गिरनेका समाचार सब कह दिया और-थोड़े समय तक रोते रहे फिर सब इधर उधरको चले गये।

६४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! दुर्य्योधनको पृथ्वीमें गिरपड़ा सुन तेजवान शक्ती, गदा और तोमरादि शस्त्रोंके घावोंसे व्याकुल आपकी ओरके वीरोंमेंसे बचे हुये; अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा, तेज घोड़ोंके रथोंपर बैठकर राजाके पास आये, उन्होंने वहां आकर महात्मा दुर्य्योधनको वायुसे टूटे हुए बनमें पड़े शालवृक्षके समान देखा। उस समय रुधिरमें भीगे, तड़फते हुये महाराजको ऐसी शोभा दीखती थी, जैसे व्याधके बाणसे कटे हुए हाथीकी। रुधिरसे भीगे तड़फते हुये, महाराजकी ऐसी शोभा दीखती थी, जैसे आकाशसे गिरे सूर्य्यकी वायुसे सूखे समुद्रकी और आकाशमें स्थित तेजसे भरे चन्द्रमाके मण्डलकी।

हाथीके समान पराक्रमी धूलसे भरे महाबाहु महाराजको उस समय मांस खानेवाले, जन्तु चारोंओरसे इस प्रकार घेर रहे थे, जैसे लोभी सेवक राजाको घेरे रहते हैं। क्रोधसे आंख फैलाये भौंह टेढ़ी किये क्रोधसे भरे सिंहके समान पुरुषसिंह महाधनुषधारी दुर्य्योधनको पृथ्वीमें पड़े देख एकबार इन तीनों वीरोंको मूर्च्छा आगयी।

अनन्तर रथोंसे उतरकर सब राजाके पास गए और पृथ्वीमें बैठ गये।

अनन्तर आंखोंमें आंसू भरकर ऊंचे सांस लेकर भरतकुलश्रेष्ठ सब लोकोंके राजोंके महाराज दुर्य्योधनसे अश्वत्थामा बोले।

हे पुरुषसिंह! आप आज इस प्रकार धूलमें पड़े लोटते हैं। इससे हमें निश्चय होता है, कि मनुष्यमें कुछ भी शक्ति नहीं है।

हे राजेन्द्र! आप राजोंके महाराज और पृथ्वीके स्वामी होकर भी आज इस भयानक जङ्गलमें एकले क्यों पड़े हैं।

हे भरतकुलसिंह! आज यह क्या है जो आपके पास दुःशासन और महारथ कर्ण आदि मित्रोंको नहीं देखते?

हे महाराज! आप भी आज धूलमें सोते हैं। इससे हमें निश्चय होता है, कि कालकी और जगत्‌की गतिको कोई नहीं जान सक्ता है।

यही शत्रुनाशन महाराज पहिले क्षत्रियोंके आगे चलते थे, सो ही आज धूल और तिन खा रहे हैं।

हे राजोंमें श्रेष्ठ ! आपका वह निर्म्मल छत्र और पङ्खा कहां गया ? आपकी वह महासेना आजकहां गई ? कारणोंसे उत्पन्न हुए कार्य्योंकी गति जानना बड़ा कठिन है, आप लोक पूज्य होकर भी इस दुर्दशाको पहुंच गये।

हे महाराज ! आप सदा इन्द्रकी समानता करते थे, सो आज इस दुर्दशामें पड़े हैं, इससे निश्चय होता है कि लक्ष्मी स्थिर नहीं।

हे महाराज ! दुःख भरे अश्वत्थामाके ऐसे वचन सुन हाथोंसे आंख पोंछकर तुम्हारे पुत्रने कृपादिक वीरोंको देखकर समयके अनुसार ऐसे वचन बोले।

हे वीरो ! ब्रह्माने जगत्‌की ऐसी ही गति बनाई है, कि जो उत्पन्न हुआ है उसे एक दिन मरना ही है सो आप लोगोंके देखते देखते मैं भी इस गतिको प्राप्त हुआ, मैं किसी समय पृथ्वीका राजा था और आज इस दशाको प्राप्त हूं, अच्छा हुआ जो मैं युद्धमें किसी आपत्तिमें न पड़ा, अच्छा हुआ जो पापियोंने मुझे छलसे मारा, अच्छा हुआ जो मैं युद्धके लिये सदा उत्साह करता रहा। आज मैं जाति और बान्धवोंसेरहित होकर प्रारब्धहीसे इस घोर युद्धसे बचे हुए कुशल सहित आप लोगोंको देखता हूं। मैं इससे बहुत प्रसन्न हुआ हूं, आप लोग मेरे मित्र हैं मेरे मरनेका कुछ शोक मत कीजिये, यदि आप लोग वेदोंको सत्य मानते हो तो मैं अपने सत्यसे सनातन स्वर्गको जाऊंगा, मैं महातेजस्वी कृष्णके प्रभावको जानता हूं, इसी लिये सनातन क्षत्रिय धर्म्मसे नहीं नष्ट हुआ मैं स्वर्गको जाता हूं इसलिये आप लोग कुछ शोक न कीजिये। आप लोगोंने जो अपने करने योग्य हमारी विजयके उपाय किये सो आप ही लोगोंके योग्य थे।

हे महाराज ! ऐसा कहकर महाराजकी आंख आंसुवोंसे भर गई और पीड़ासे व्याकुल होकर चुप होगए, राजाको शोकसे व्याकुल रोते देख अश्वत्थामाको क्रोध आया और प्रलयकालकी जलती हुई अग्निके समान उनका रूप होगया।

अनन्तर क्रोधमें भरकर हाथसे हाथ मलकर आंखोंमें आंसू भरकर राजासे बोले।

हे महाराज। क्षुद्र पाञ्चालोंने मेरे पिताको भी अधर्म्मसे मारे, परन्तु मुझे इतना उनका शोक नहीं है जितना शोक आपका होगया है।

हे महराज। मैं आपसे सत्य की शपथ खाकर कहता हूं सुनिये यदि आजकी रात्रिमें कृष्णके देखते देखते सब पाञ्चलोंका नाश करूं तो मुझे इष्टापूर्त्तों, दान और धर्म्म आदि उत्तम कर्म्मोंका फल न होय।

हे महाराज ! अब आप मुझे आज्ञा दीजिये मैं किसी न किसी उपायसे पाञ्चालोंका नाश करूंगा।

अश्वत्थामाके ऐसे वचन सुन दुर्य्योधन बहुत प्रसन्न होकर कृपाचार्य्यसे बोले।

हे गुरुजी ! आप बहुत शीघ्र एक कलश जल भर लाइए, राजाके वचन सुन कृपाचार्य्य बहुत शीघ्र एक कलश जल भरलाए। तब राजाने फिर कृपाचार्य्यसे कहा, हे ब्राह्मणश्रेष्ठ ! यदि आप हमारी प्रसन्नता चाहते हैं तो अश्वत्थामाका सेनापति अभिषेक कीजिये धर्म्म जाननेवालोंने ऐसा कहा है कि, राजाकी आज्ञासे ब्राह्मण भी क्षत्रिय धर्म्मके अनुसार युद्ध करे राजाके वचन सुन कृपाचार्य्यने अश्वत्थामाका अभिषेक किया अश्वत्थामा भी सेनापति बन राजाका हाथ पकड़ सिंहके समान गर्ज्जने लगे और वहांसे चल दिये रुधिर भरे दुर्य्योधन भी उस भयावनी रात्रिको वहीं पड़े रहे।

हे राजेन्द्र ! यह तीनों वीर भी शोक और चिन्तासे व्याकुल होकर उस युद्ध भूमिसे बाहर जाकर सोचने लगे।

६५ अध्याय समाप्त।

गदापर्व्व और शल्यपर्व्व समाप्त।

महाभारत।

सौप्तिकपर्व्व।

दोहा।

नर नारायण व्यास अरु, बन्दि सरस्वति पाय।
भारत की भाषा करूं, सुजननको सुख दाय॥

सञ्जय बोले, हे राजा धृतराष्ट्र! तब वे तीनों वीर दुर्य्योधनके पाससे दक्षिणकी ओरको चले, फिर सन्ध्याके समय डेरोंके पास आकर भयसे व्याकुल होगये, फिर रथोंसे घोड़े छोड़-कर छिपकर डेरोंके पास बैठे उस समय ये तीनों वीर बाणोंके घावोंसे व्याकुल थे, घोड़े थक गये, प्यासके मारे सुख सूख रहे थे, राजाके मरनेसे क्रोध और शोकसे व्याकुल थे, तब थोड़े समय तक वहां बैठे।

अनन्तर पाण्डवोंकी सेनाका भयानक शब्द सुनकर उन्होंने जाना कि ये सब हमें मारनेको इधर ही चले आते हैं। तब भयसे व्याकुल होकर ऊंचे और गर्म सांस लेते हुये, पाण्डवोंका विचार करते हुये पूर्व्वकी ओर भागे।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! भीमसेनने युद्धमें हमारे पुत्रको मारडाला यह बात सुनकर हमें विश्वास नहीं होता क्योंकि दश सहस्र हाथियोंके समान बलवाला तरुण दुर्य्योधन भीमसेनके हाथसे मारा गया, यह सुनकर हमें निश्चय नहीं होता क्यों कि उसका शरीर वज्रके समान था और उसे कोई भी नहीं मार सकता था।

हे गावल्गण पुत्र! पाण्डवोंने दुर्य्योधनको मारडाला यह सुनकर हमें निश्चय होता है कि कोई मनुष्य प्रारब्धको नहीं नांघ सक्ता।

हे सञ्जय! सौ पुत्रोंको भीमसे मरा सुन करके मेरा हृदय फट नहीं गया इससे जानता हूं कि यह पत्थरसे भी अधिक कठोर है, अब हम दोनों बूढ़ोंकी क्या दशा होगी? मैं कदापि युधिष्ठिरके राज्यमें न रह सकूंगा, हाय! आप ही राजा और राजाका पिता होकर मैं अब पाण्डवोंका सेवक होकर कैसे रहूंगा?

हे सञ्जय! सब पृथ्वीको अपनी आज्ञामें चलाकर राजोंके शिरपर रहकर अब युधिष्ठिरकी आज्ञामें कैसे चलूंगा?

महात्मा विदुरका वचन सत्य हुआ, दुर्य्योधनने विदुरकी बात कुछ न मानी इसीसे यह आपत्ति आई।

हे सञ्जय! जिसने मेरे सौ पुत्रोंको मारा उस भीमसेनके वचनोंको मैं कैसे सह सकूंगा?

हे सञ्जय! जब भीमसेनने हमारे पुत्र दुर्य्योधनको अधर्म्मसे मारडाला तब कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और कृतवर्म्माने क्या किया।

सञ्जय बोले, हे महाराज! जब ये तीनों वीर वहांसे पूर्व्वकी ओर भागे, तब थोड़ी दूर जाकर अनेक वृक्ष लताओंसे भरा घोर वन देखा, तब रथोंसे उतरकर थोड़े समयतक ठहरकर वहांपर विश्राम किया और घोड़ोंको पानी पिलाया, तब सूर्य्य भी अस्त होने लगे। तब ये तीनों दक्षिणकी ओर चलकर उस हरिन, पक्षी, वृक्ष, लता और सांपोंसे भरे वनमें घुसे।

अनन्तर चारों ओर देखते हुए चलते वीरोंने उस वनमें एक उत्तम जल भरे उत्तम नीले कमल और सहस्रों सुफेद कमल आदि फूलोंसे भरा एक तालाव देखा और उसीके तटपर अनेक शाखावाला एक बरगदका वृक्ष था, तब वे रथोंसे उतर घोड़ोंको रथसे खोलकर जल स्पर्श करके विधि पूर्व्वक सन्ध्या करने लगे। तब भगवान सूर्य्य भी अस्ताचलके शिखरपर पहुंच गए और सब जगत्की माता रात्रि आगई। उस समय नक्षत्र और तारोंसे भरा आकाश ऐसा सुन्दर दीखने लगा, जैसे सफेद बिन्दुसहित नीलावस्त्र; रात्रिमें घूमनेवाले जन्तु घूमने लगे। और भयानक शब्द करने लगे, मांस खानेवाले जन्तु प्रसन्न होने लगे, दिनमें घूमनेवाले सब सो गये, उस भयानक घोर रात्रिके प्रथम पहरमें शोकसे व्याकुल तीनों वीर एक स्थानमें बैठकर बिचार करने लगे, और उस ही कुरुकुल नाशके शोकसे व्याकुल होगये।

उस समय तीनों परिश्रम, घाव और निद्रासे व्याकुल थे, इसलिये पृथ्वीमें लोट गये, तब सदासे सुख भोगनेवाले, दुःख भोगनेमें असमर्थ शोकसे व्याकुल उत्तम शय्यामें सोने योग्य महारथ कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा, अनाथके समान पृथ्वीहीमें सोगये परन्तु क्रोध भरे अश्वत्थामाको निद्रा न आई और सांपके समान सांस लेते रहे फिर बार बार क्रोधमें भरकर महाबाहु, अश्वत्थामा उस अनेक जन्तुओंसे भरे घोर बनको देखने लगे। फिर उस बरगदके ऊपरको देखा।

हे महाराज! उस बरगद पर सहस्रों कौवे निःसन्देह सो रहे थे, उसी समय एक भयानक शब्दवाला बड़े शरीर, नखों और कच्ची आंखवाला और गरुड़के समान वेगवाला उल्लू आया तब उसने चुप होकर उन सोते हुये कौओंमें प्रवेश किया और शाखापर जाकर सोते हुए सहस्रों कौओंको मारडाला। किसीके पङ्ख काट दिये, किसीका शिर काट दिया और किसीके पैर काट दिये अर्थात् जो कौआ उसके आगे आया उसीको मारडाला। क्षण भरमें उस बड़गदके सब कौवे उसने मारडाले और वह स्थान मरे हुये कौवेके शिरोंसे भर गया। बलवान् उल्लू अपने शत्रुओंको मारकर बहुत प्रसन्न हुआ।

उल्लूका यह घोर कर्म्म देखकर अश्वत्थामाने बिचारा कि इस पक्षीने हमको अच्छा उपदेश किया, शत्रुओंके मारनेका यही समय है और यही रीति है, मैंने राजाके आगे पाण्डवोंके मारनेकी प्रतिज्ञा करी है, परन्तु मैं शस्त्रधारी बिजयी पाण्डवोंको दूसरी रीतिसे नहीं मार सक्ता; अब ऐसे ही पाण्डवोंका नाश करूंगा, यदि न्यायसे युद्ध करूं तो अवश्य ही मेरा नाश इस प्रकार होगा जैसे आगमें पड़नेसे फतिङ्ग जल जाता है, इस समय केवल कपट हीसे मेरा काम सिद्ध होसक्ता है, यद्यपि यह नियम है कि संशयवाले कामोंसे निःसन्देह काम करना अच्छा है, महात्माओंने यह भी कहा है कि जगत्में नीच काम करनेसे निन्दा होती है, परन्तु क्षत्रियधर्म्म करनेवालेकी चरण चरणपर निन्दित और दुष्ट कर्म्म करने होते हैं, पाण्डवोंने भी इस युद्धमें अनेक अधर्म्म करे हैं, महात्माओंने भी ऐसा कहा है कि चाहे शत्रु थका हो, चाहे भागता हो, चाहे भोजन करता हो चाहे चला जाता हो और चाहे बैठा हो उसे अवश्य मारना चाहिये। जिस सेनाका स्वामी मर गया हो, जिसके दो टुकड़े होगये हों, जो सेना सोता हो उसे आधी रातमें मारना चाहिये। यही तप जाननेवाले महात्माओंका सिद्धान्त है।

ऐसा बिचारकर प्रतापवान् अश्वत्थामाने पाञ्चाल और पाण्डवोंके मारनेके लिये दुष्ट बुद्धि करी, फिर सोते हुए अपने मामा कृपाचार्य्य

और कृतवर्म्माको जगाया, तब महाबलवान् कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा उठे और लज्जित होकर अश्वत्थामाके वचनका कुछ उत्तर न दिया, तब थोड़े समयतक बिचारकर आंखोंमें आंसू भरकर अश्वत्थामा कहने लगे। महाबलवान् एक वीर राजा दुर्य्योधन मारे गये। इन्होंके लिये हम लोगोंसे और पाण्डवोंसे वैर हुआ था, धर्म्मात्मा एकले दुर्य्योधनको अनेक पापियोंने मिलकर मार डाला, पापी चुद्र भीमसेनने ग्यारह अचौहिणीके स्वामी महाराजके शिरपर पैर धरा, यह बहुत ही अन्याय किया इस समय पाञ्चाल प्रसन्न होरहे हैं, हंस रहे हैं, शङ्ख और नगारे बजा रहे हैं, ये देखो वायुसे उछलते हुए समुद्रके समान पाण्डवोंकी सेनाके बाजोंका शब्द होरहा है, देखो घोड़े हींस रहे हैं, हाथियोंका शब्द होरहा है, ये इनके रथोंका शब्द सुनकर हमारे रोंवे खड़े हुये जाते हैं, पाण्डवोंने जो कौरवोंका नाश किया उस सेनामेंसे केवल हम तीन ही बचे हैं, जो बीर मारे गये उनमेंसे किसीको सौ हाथीका बल था और कोई सब शस्त्र विद्याके जाननेवाले थे, देखो समय बड़ा कठिन है कोई यह नहीं जानता था कि इस कामका यह फल होगा निश्चय ही कार्य्योंकी गति बहुत कठिन हैं आप इस आपत्तिके समयमें क्या करना चाहिये और क्या करनेसे हमारा कल्याण होगा सो कहिये ?

१ अध्याय समाप्त।

कृपाचार्य्य बोले, तुमने जो कहा सो हमने सब सुना अब कुछ हमारे भी वचन सुनो, हे महाबाहो! सब मनुष्य प्रारब्ध और उद्योगमें बन्धे हैं, केवल प्रारब्धहीसे सब काम सिद्ध नहीं होते और केवल उद्योगहीसे सब काम सिद्ध नहीं होते, अर्थात् प्रारब्ध और उद्योग इन दोनों हीसे काम सिद्ध होते हैं, जगतमें तीन प्रकारके काम होते हैं, एक उत्तम दूसरा मध्यम और तीसरा अधम और तीनो ही काम बिना प्रारब्ध सिद्ध नहीं होते। कहीं जो एक काम यत्नसे सिद्ध होता है और कहीं वही काम उसही यत्नसे नष्ट होता दीखता है, देखो जब जुते हुये खेतमें मेघ बर्षता है तब कैसा उत्तम फल होताहै और वही मेघ जब पर्व्वतपर बर्षता है, तो क्या फल होता है? परन्तु दो रीति हैं कहीं प्रारब्ध उद्योगकी सहायता करता है, और कहीं उद्योग प्रारब्धकी सहायता करता है, पण्डितोंने पहिलेको मुख्य माना है जैसे उत्तम जल बर्षनेसे बीजके गुण बढ़ते हैं, ऐसे ही प्रारब्धकी सहायतासे कर्म्म करनेसे सिद्धी होती है, पण्डित लोग प्रारब्धको बिचार कर उद्योगमें प्रवृत्त होतेहैं, महापुरुष होनेपर भी यदि प्रारब्ध छोड़कर उद्योग करना चाहै तो वह व्यर्थ होजाता है। अब पण्डित और मूर्खों में केवल इतना ही भेद दीखता है कि मूर्ख आलस्यके बश होकर उद्योग करना ही नहीं चाहते परन्तु पण्डित उसे उलटा व्यवहार करते हैं। अर्थात् उद्योग करते हैं और प्रारब्धको मुख्य मानते हैं, जगत्में किये हुये कर्म्मका फल अवश्य हो मिलता है, परन्तु उत्तम कर्म्मके बिना किये पश्चाताप रहता है। यदि कोई मनुष्य बिना उद्योग किये प्रारब्धसे कुछ फल पाय जाय और जो परिश्रम करनेपर भी फल न पावे तो इन दोनोंकी निन्दा करनी चाहिये। उद्योगी जगत्में सुखसे जीता है, और आलसीको सुख नहीं होता क्यों कि जगत्में प्रायः उद्योगी ही सुखी दीखते हैं, यदि परिश्रमी परिश्रम करनेपर भी कुछ फल न पावे तो उसे पछताना नहीं पड़ता अथवा परिश्रमका फल ही होजाता है, जो आलसी बिना कर्म्म किये फल पाते हैं, लोग उसके विषयमें अनेक प्रकारकी बात कहते हैं और बहुत

मनुष्य उससे द्वेष भी करते हैं। इसलिये बुद्धिमानोंने यह निश्चय किया है, कि इन दोनों विषयोंको छोड़कर कार्य्य सिद्ध करनी चाहिये, अर्थात् परिश्रमका फल भोगना चाहिये, और बिना परिश्रमका धन न लेना चाहिये यदि मनुष्य केवल प्रारब्ध या कर्म्महीको छोड़कर कोई कर्म्मकी सिद्धि करना चाहे तो सिद्धी नहीं होती अर्थात् दोनोंहीसे कर्म्म करनेसे सिद्ध होता है, जो मनुष्य उद्योगको छोड़कर सिद्धी चाहता है उसका फल सिद्ध नहीं होता; जो उद्योगी मनुष्य देवतोंको नमस्कार करके अत्यन्त विचारपूर्व्वक उद्योग करता है, उसके भारी विघ्न भी नष्ट नहीं कर सकते अर्थात् उसका कार्य्य अनेक विघ्न होनेपर सिद्ध होता ही है, अत्यन्त विचारका अर्थ यह है कि बूढ़ोंकी सेवा करना, उनकी सम्मति बूझनी और उनहीके कहे हुए वचनोंको करना मनुष्यको उचित है, प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर बूढ़ोंके पास जाय क्योंकि बूढ़ोंकी सम्मति सुखका मूल है और उसी सम्मतिसे कार्य्यसिद्धी भी होती है, जो मनुष्य ऐसा करता है उसकी कार्य्यसिद्धि अवश्य होती है, जो मूर्ख लोभ, मोह, क्रोध और भयके वश होकर कोई कार्य्य करना चाहता है, उस मूर्खकी लक्ष्मी शीघ्र ही नष्ट होजाती है, सो अदूरदर्शी लोभी और मूर्ख दुर्य्योधनने कल्याण करनेवालोंके वचनोंका निरादर करके मूर्खोंकी सम्मतीसे मूर्खतामें भरकर अनेक बार रोकनेपर भी बिना विचारे महात्मा पाण्डवोंसे वैर किया था। परन्तु वह इस कार्य्यके करनेमें समर्थ न था, यह पहिलेहीसे दुष्टचित्त था, किसीके वचन नहीं मानता था, अब हम भी उस ही पापीको सहायता करते हैं, इसलिये हम लोग भी महा अधर्म्मी और पापी होगये, मैं यही विचार रहा हूं और इसीसे मेरी बुद्धी इस समय नष्ट होगई है, क्या करना चाहिये, यह कुछ नहीं जान पड़ता और यह भी नियम है कि जब मनुष्यकी बुद्धि नष्ट होजाय तब उसे अपने मित्रोंसे सम्मति पूंछनी चाहिये, क्योंकि ऐसे समयमें वेही उसका कल्याण कर सकते हैं, पण्डितोंने ऐसा कहा है, कि उस समय यथार्थ मित्र जैसा कहे वैसाही करना उचित है। इस लिये हमारी बुद्धिमें ऐसा आता है। कि यहांसे चलकर महाराज धृतराष्ट्र गान्धारी और महात्मा विदुरसे यह वृत्तान्त कहें, फिर वे लोग जैसा कहेंगे, वैसाही करनेमें हमारा कल्याण होगा, क्योंकि बिना उद्योग किये कहीं फल प्राप्त नहीं होता। यदि उद्योग करनेपर कार्य्य सिद्धि न होय तो उसमें मनुष्यका कुछ दोष नहीं और उसे ही प्रारब्ध कहते हैं।

२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! कृपाचार्य्यके अर्थ और धर्म्मसे भरे उत्तम वचन सुनकर जलती हुई अग्निके समान क्रोधमें भरकर मनको दुःखित करके अश्वत्थामा कृपाचार्य्य, और कृतवर्म्मासे बोले।

हम यह जानते हैं, कि जगत्में सब मनुष्योंकी बुद्धि अलग अलग होती है, और सब लोग अपने अपनेको महाबुद्धिमान जानकर अपनी अपनी प्रशंसा किया करते हैं। और अपने अपनेको बड़ा समझते हैं। सब लोग अपनी अपनी बुद्धिको साधु कहते हैं, परन्तु जो कारण और समयके अनुरोधसे अनेक प्रकारकी बुद्धियोंमेंसे एक बुद्धिको स्थिर करता है, और जो दूसरोंकी सम्मति सुनकर प्रसन्न होता है, उसहीका कार्य्य सिद्ध होता है, मनुष्योंके चित्तकी वृत्ति अलग अलग होती है, इसी लिये समय समयपर व्याकुल होकर अनेक अनेक प्रकारकी बुद्धि उत्पन्न होती हैं। जो अपनी स्थिर करी हुई बुद्धिको छोड़कर दूसरेकी सम्मतियोंको स्वीकार करता है। उसकी बड़ी

अनेक प्रकार बुद्धियोंसे नष्ट होजाती है, जैसे वैद्य अत्यन्त सावधान होकर चिकित्सा करता है, और रोगको शान्त करता है, ऐसे ही जो बुद्धिमान मनुष्य कार्य्योंको जानकर भी केवल अपनी बुद्धिसे कार्य्योंको करता है, उसकी लोग निन्दा करते हैं। युवा अवस्थामें मनुष्य दूसरी ही बुद्धिसे मोहित रहता है, मध्य अवस्थामें कुछ और ही बुद्धि होजाती है और बुढ़ापेमें कुछ और बुद्धि अच्छी लगा करती है, हे कृतवर्म्मन्! जब मनुष्यको घोर आपत्ति आकर पड़ती है, अथवा बहुत अधिक धन प्राप्त होजाता है, तब उसकी बुद्धि नष्ट होजाती है, परन्तु जब एक ही मनुष्यको अधर्म्म करनेके कारण अनेक प्रकारकी बुद्धि होती है, तब वह बुद्धि किसीको अच्छी नहीं लगती, जो अपनी बुद्धिके अनुसार अत्यन्त निश्चय करके कार्य्यका उद्योग करता है, तब वही बुद्धि उसके उद्योगकी सहायता करती है।

हे कृतवर्म्मन! मनुष्य मरणपर्य्यन्त कामोंको भी अच्छा ही समझकर करता है, क्योंकि मनुष्य जिस कामको कर्त्ता है उसमें अपनी समस्त बुद्धिको लगा देता है और उस ही कर्म्मको अपना कल्याणदायक समझ लेता है।

इस समय इस घोर आपत्तिमें पड़नेके कारण जो बुद्धि सुझे उत्पन्न हुई है उससे मेरा शोक नष्ट होगया। अब तुम दोनोंसे यही कहता हूं सुनो, ब्रह्माने जब सृष्टि बनाई थी तब ही उन्होंने सब वर्णोंके कर्म्म भी अलग अलग बना दिये थे और सबमें एक एक गुण भी दे दिया था। ब्राह्मणोंको वेद पढ़ना, क्षत्रियोंको तेज बढ़ाना, वैश्योंको धन कमाना और शूद्रोंको सबकी सेवा करनी। जो ब्राह्मण इन्द्री न जीत सके, जो क्षत्री तेजस्वी न हो, जो वैश्य धन न बढ़ा सके और जो शूद्र इनकी सेवा न करे तो इन सबकी निन्दा करनी चाहिये।

यदि आप मैं जगत्पूरित ब्राह्मण वंशमें उत्पन्न हुआ हूं परन्तु अभाग्य होनेके कारण क्षत्रिय धर्म्मको धारण कर रहा हूं सो आपत्तिमें इस क्षत्रियधर्म्मको धारण करके भी अब छोड़ दूं और ब्राह्मणोंका धर्म्म करने लगूं तो अच्छा नहीं, यह दिव्य धनुष और इन दिव्य बाणोंको धारण करके भी यदि पिताके मारनेका बदला न लूं तो महात्माओंमें बैठकर क्या कहूंगा?

अब मैं क्षत्रिय धर्म्मका आश्रय लेकर अपने पिता और महाराजके पास स्वर्गमें जाऊंगा, इस समय विजयी पाञ्चाल सेना थककर विजय पाकर कवच खोलकर अत्यन्त विश्वासपूर्व्वक सो रही है, सो अभी मैं डेरोंमें घुसकर भूतके समान उनका नाश कर दूंगा। आज मैं धृष्टद्युम्नादि सब क्षत्रियोंको इस प्रकार मारूंगा, जैसे इन्द्र दानवोंको मारता है। आज डेरोंमें घुसकर इस प्रकार क्षत्रियोंको मारूंगा, जैसे बढ़ी हुई अग्नि सूखे काठको जलाती है, आज पाञ्चालोंका नाश करके ही शान्त होऊंगा, आज युद्धमें मैं पाञ्चालोंके लिये ऐसा भयानक बनूंगा, जैसे प्रलयकालमें प्रजाके लिये साक्षात शिव। आज मैं पाञ्चाल और पाण्डवोंको मारकर प्रसन्न होकर इधर उधर खींचता फिरूंगा, आज पाञ्चालोंके शरीरसे पृथ्वीको पूर्ण करके पिता, राजा दुर्य्योधन, कर्ण, भीष्म और जयद्रथादिके ऋणसे छूटूंगा, आज पाञ्चालोंको दुर्लभ स्थान दिखाऊंगा, आज पाञ्चालदेशीय महाराज धृष्टद्युम्नका शिर अपने बलसे ऐसा काटूंगा, जैसे कोई पशुका काटता है।

हे कृपाचार्य्य! आज सोते हुये पाञ्चाल और पाण्डवोंके बालकोंके शिर मेरे तेज धारवाले खड्गसे कटेंगे। हे महाबुद्धिमन्! आज समस्त सोते हुए पाञ्चालोंको रातमें मारकर मैं सुखी और कृतकृत्य हूंगा।

३ अध्याय समाप्त।

कृपाचार्य्य बोले, हे वीर ! आज प्रारब्धहीसे तुम्हें ऐसी बुद्धि उत्पन्न हुई। तुम्हें साचात बज्रधारी इन्द्र भी युद्धमें नहीं रोक सक्ता, परन्तु हमारी बुद्धिमें यह आता है कि इस समय तुम कवच खोलकर रथसे ध्वजा उतार-कर सो रहो प्रातःकाल होते ही हम कृतबर्म्मा तुम्हारे सङ्ग चलेंगे और सब शत्रुओंका नाश करेंगे।

हे महारथ ! तुम हमारी सहायतासे सेना सहित पाञ्चालराजको मारियो, तुम सब कुछ करनेमें समर्थ हो परन्तु कई दिनसे जाग रहे हो इसलिये इस समय सो रहो जब तुम्हारा परिश्रम दूर होजायगा और सोनेके कारण चित्त सावधान हो जायगा तब हम लोगोंकी सहायतासे तुम निःसन्देह शत्रुवोंका नाश करोगे, जब तुम रथपर बैठकर धनुष धारण करोगे तब साचात् इन्द्र भी तुमको नहीं जीत सकेंगे, जब कृपाचार्य्य और कृतबर्म्मा तुम्हारी रचा करेंगे, तब साचात् इन्द्रकी क्या सक्ती है, जो तुमसे युद्ध कर सके ? इसलिये अब हम लोग रात्रिभर सोवें और प्रातःकाल होते ही घोर युद्ध करेंगे और इनको मारेंगे, इसमें सन्देह नहीं तुम्हारे पास सब दिव्य बाण हैं और कृतबर्म्मा भी महाधनुषधारी और सब प्रकारकी युद्धविद्या जाननेवाले हैं, सो हम तीनों मिलकर प्रतःकाल शत्रुओंसे युद्ध करेंगे और युद्धमें शत्रुओंको मारकर अत्यन्त प्रसन्न होंगे।

अब तुम सावधान होके इस समय सोरहो, प्रातःकाल होतेही हम और कृतबर्म्मा दोनों धनुष धारण करके उत्तम रथोंपर चढ़कर तुम्हारे सङ्ग चलेंगे और युद्ध करते हुए शत्रुओं को अपना नाम सुनाकर मारेंगे फिर उनको निर्म्मल दिनमें मारकर तुम इस प्रकार सुख कोजिए जैसे दानवोंको मारकर इन्द्र; जैसे इन्द्र क्रोध करके दानवोंके मारनेमें समर्थ हैं, ऐसेही तुम सब पाञ्चालोंको मारनेको समर्थ हो, हे वीर ! जब हम और कृतबर्म्मा तुम्हारी युद्धमें रचा करेंगे, तब साचात् इन्द्र भी तुम्हें नहीं जीत सक्ते हम तुमसे सत्य कहते हैं कि हम और कृतबर्म्मा शत्रुवोंको बिना जीते युद्धसे न हटेंगे। अवश्य ही पाञ्चाल और पाण्डवोंको मारेंगे, अथवा उनके हाथसे मरकर स्वर्गको जांयगे।

हे महाबाहो ! अधिक क्या कहैं हम सब प्रकारसे प्रातःकाल तुम्हारी सहायता करेंगे।

अपने मामाके ऐसे कल्याण भरे बचन सुन अश्वत्थामाके नेत्र क्रोधसे लाल होगए, और ऐसा बचन बोले, रोगी और क्रोधभरे मनुष्यको अर्थ चिन्ता न करनेवालेको और कामीको निद्रा कहां ? आज हमको भी वही समय आगया है, अब इस युद्धमें केवल मेरा ही चौथा भाग शेष है, इसोसे मेरी निद्रा नष्ट होगई।

हाय द्रोणाचार्य्य मारे गये, मैंने प्रसन्न पाञ्चालोंके ये शब्द अपने कानोंसे सुने इससे अधिक दुःख और जगत्में क्या होगा ? आपके देखते देखते इन पापियोंने मेरे पिताको कैसे मारा ? यह स्मरण करके मेरा हृदय रातदिन जला करता है, आपके देखते देखते हमारे पिताका जैसा निरादर हुआ सो स्मरण करके मेरे शरीरके मर्म्मस्थान फटे जाते हैं, मुझ ऐसे मनुष्यको एक मुहूर्त्तभर भी जीना उचित नहीं मैं बिना धृष्टद्युम्नके मारे जी नहीं सक्ता, इसने मेरे पिताको मारा है, इसलिये मैं भी इसे मारूंगा, और इसके सब सङ्गियोंको भी मारूंगा देखो जङ्घा टूटे राजा हमारे आगे कैसे रोते थे, जगत्में ऐसा कौन कठोर होगा, कि राजाके बचन, सुनकर जिसका हृदय न जलने लगे ? आंखोंसे आंसू न आय जाय ? मेरे जीते जी मित्रका नाश होगया, यह स्मरण करके मेरा शोक ऐसे बढ़ता है, जैसे अधिक जल होनेसे समुद्रकी तरङ्ग। मेरा चित्त इस समय एकाग्र है, तब निद्रा और सुख कहां ? उनको कृष्ण